



KIZAARA

A DIFFERENT THINKING



“किज़ारा के सर्वश्रेष्ठ आयुर्वेदिक उत्पादों
की विस्तार में जानकारी”

“DETAILED INFORMATION OF KIZAARA'S BEST
AYURVEDIC PRODUCTS”

KIZAARA INTERNATIONAL RETAIL PVT. LTD. WEBSITE:- WWW.KIZAARA.COM

CONTACT NO. 9090931010, 9090941010.



आयुर सी बकथोर्न जूस 1 स्वाभाविक रूप से एंटी-ऑक्सीडेंट से भरा होता है। जो आपके शरीर के उम्र बढ़ने, कैंसर से बचाव में, हृदय रोगों को दूर करने में तथा इसमें मौजूद एंटी-ऑक्सीडेंट गुण हृदय रोग के जोखिम कारकों को कम करने में मदद करता है। जिसमें रक्त के थक्के को सही करने में, रक्तचाप और कोलेस्ट्रॉल को कम करने में, इंसुलिन स्राव और इंसुलिन संवेदनशीलता को सही करने में, रक्त शर्करा (ब्लड शुगर) को सही करने में, त्वचा के अच्छे विकास में, घावों को अधिक तेजी से ठीक करने में मदद करता है। इसमें स्वस्थ वसा, विटामिन-ई और कैरोटीनॉयड शामिल हैं। जो लीवर की सभी कोशिकाओं को नुकसान से बचाने में, कैंसर कोशिकाओं को मारने में, पेट के अल्सर को सही करने में, शरीर की सूजन को कम करने के साथ-साथ **आयुर सी बकथोर्न जूस 1** डिप्रेशन के लक्षणों में भी बहुत अच्छा काम करता है।

न्यूट्रिशन फैक्ट्स NUTRITION FACTS

SERVING SIZE 30 ML

AMOUNT PER SERVING	APPROXIMATELY.
PROTEIN	40.0 MG.
FAT	4.0 MG.
ENERGY	65 KCAL
MAGNESIUM	0.3 MG.
IRON	2.3 MG.
CALCIUM	12.5 MG.
CARBOHYDRATES	15.0 MG.
VITAMIN E	9.0 MG.
OMEGA 3	2.6 MG.
VITAMIN C	1.1 MG.
VITAMIN B2	2.5 MG.



हमारे आयुर सी बकथोर्न जूस 1 में

प्रोटीन की कमी के कारण हमारे शरीर में अनेकों समस्याएँ उत्पन्न हो जाती है। जैसे बार-बार भूख लगना, पतले बाल, नाखूनों का नाजुक होना, चिड़चिड़ापन व अवसाद, संक्रमण के खिलाफ प्रतिरोध में कमी, घाव भरने में बहुत देरी होना, बीमारियों से ठीक होने में लम्बा समय लगना, दिमागी थकावट, शारीरिक विकास में कमी, जोड़ों और मांशपेशियों का दर्द, बार-बार बीमार पड़ना, नींद न आना, वजन आदि।

फैट (वसा) एक आवश्यक पोषक तत्व है। यह सामान्य शरीर के कार्यों के लिए महत्वपूर्ण है। आहार में उपस्थित वसा या लिपिड त्वचा को स्वस्थ बनाए रखने और पुरानी बीमारी को रोकने के लिए आवश्यक हैं। लेकिन गलत तरीके से फैटी (वसा) चीजों का सेवन करने से वजन बढ़ने या दिल की बीमारी की समस्या उत्पन्न हो सकती है। विभिन्न स्वस्थ स्रोतों से प्राप्त फैट (वसा) सेवन से फायदे और नुकसान की तुलना करते समय वजन, कैलोरी सेवन और स्वास्थ्य चिंताओं पर ध्यान देना अति आवश्यक होता है।

हमारे आयुर सी बकथोर्न जूस 1 में

विभिन्न स्रोतों के माध्यम से फैट (वसा) की आवश्यक मात्रा का सेवन करने से शरीर के लिए आवश्यक पोषक तत्व की पूर्ति होती है।

एनर्जी हमारे शरीर में होना बहुत ही महत्वपूर्ण है। इसके लिए हमारा खान-पान सही होना चाहिए। खाने में दही का उपयोग जिसमें बैक्टीरिया और कार्बोहाईड्रेट होता है। जो थकान को दूर कर शरीर को एनर्जी प्रदान करता है। सौंफ में पाए जाने वाले पोषक तत्व सोडियम, कैल्शियम, पोटैशियम, आयरन आदि शरीर में थकान महसूस कराने वाले हार्मोन्स को खत्म कर देते हैं। केले में पोटैशियम पाया जाता है। जो शरीर में मौजूद शुगर को एनर्जी में बदल देता है। और आपकी थकान को दूर कर देता है।

मैग्नीशियम उन सूक्ष्म पोषक तत्वों में से एक है। जो शरीर के लिए जरूरी है। मैग्नीशियम का नियमित प्रयोग ब्लड प्रेशर नियंत्रित रखता है। मैग्नीशियम में कई फायदे छिपे होते हैं। यह शरीर में बढ़े हुए कोलेस्ट्रॉल को धीरे-धीरे घटाता है।

आयरन आपकी रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाता है। इससे आपको एनिमिया के खतरे से मुक्ति मिलती है। आयरन सबसे आवश्यक गर्भवती महिलाओं के लिए होता है। गर्भावस्था में महिलाओं में अक्सर आयरन की कमी हो जाती है। जिसकी पूर्ति के लिए उन्हें आयरन की गोलियां भी दी जाती हैं। आयरन सभी वर्ग के लोगों के लिए फायदेमंद है। यह शरीर को ऊर्जा प्रदान करता है। यह ब्लड सेल्स बनने में भी सहायता करता है। जिससे चोट जल्दी ठीक होती है। आयरन से मांसपेशियों को मजबूती मिलती है। यह हाथ-पैर के दर्द को भी कम करता है। सांस फूलना भी आयरन की कमी के संकेत हैं। आयरन आपकी स्टेमिना को भी बढ़ाता है।

कैल्शियम शरीर में कैल्शियम की कमी के कारण आपको कई तरह के नुकसान का सामना करना पड़ सकता है। कैल्शियम की कमी आपके शरीर के कई अंगों पर सीधा बुरा प्रभाव डालते हैं। शरीर में कैल्शियम की कमी होने से आपको हड्डियों से सम्बंधित रोग घेरने लगते हैं। और आप हमेशा अस्वस्थ महसूस करते हैं।

कार्बोहाईड्रेट हमारे दैनिक कार्यों के लिए आवश्यक ऊर्जा प्रदान करती है। हमारी सभी गतिविधियों के लिए ऊर्जा की आवश्यकता होती है। हमारे दैनिक आवश्यकताओं के लिए आवश्यक ऊर्जा का स्रोत ग्लूकोज होता है। हमारे शरीर को ग्लूकोज हमारे आहार में खाए गए स्टार्च (भोजन में मिश्रित शुगर) और शुगर से प्राप्त होता है। हम में से कई लोग वजन बढ़ने के लिए कार्बोहाईड्रेट को दोषी मानते हैं। लेकिन उचित तरीके से कार्बोहाईड्रेट का सेवन आपके वजन को कम करने और नियंत्रित करने में बहुत मदद करता है।

विटामिन-ई शरीर में रेड ब्लड सेल्स (लाल रक्त कोशिकाओं) का निर्माण करने में सहायक है। प्रेगनेंसी के दौरान विटामिन-ई का सेवन बच्चे को एनीमिया यानि खून की कमी से बचाता है। एक शोध के अनुसार विटामिन-ई की कमी से मानसिक रोग होने की संभावना बढ़ जाती है। शरीर में विटामिन-ई की पर्याप्त मात्रा मानसिक तनाव और अन्य समस्याओं को कम करने में बहुत मदद करती है। विटामिन-ई में भरपूर एंटी-ऑक्सीडेंट्स पाए जाते हैं। जो त्वचा पर बढ़ती उम्र के असर को कम करते हैं।

हमारे आयुर सी बकथोर्न जूस 1 में

इसके अलावा यह झुर्रियों को भी कम करने और रोकने में बेहद प्रभावकारी है। शोध के अनुसार जिन लोगों के शरीर में विटामिन-ई की मात्रा अधिक होती है। उन्हें दिल की बीमारियों का खतरा कम होता है। यह मासिक धर्म के बाद महिलाओं में होने वाले हार्ट स्ट्रोक (दिल का दौरा) की संभावना को भी कम करता है।

ओमेगा-3 शरीर में फैट (वसा) के रूप में मौजूद होती है। ओमेगा-3 फैटी एसिड इन्हीं का एक प्रकार है। यह मस्तिष्क और आँखों के लिए आवश्यक होता है। इसके अलावा ओमेगा-3 आपको हृदय संबंधी रोग व अन्य कई बीमारियों से दूर रखने में बहुत मदद करता है।

विटामिन-सी को एस्कॉर्बिक एसिड (एंटी-ऑक्सीडेंट गुणों वाला शुगर एसिड) के नाम से भी जाना जाता है। हमारे शरीर में एस्कॉर्बिक एसिड का होना कोशिकाओं एवं पाचन की क्रियाओं के लिए बेहद आवश्यक होता है। विटामिन-सी आपकी खूबसूरती को बनाए रखने के साथ आपकी सेहत का भी पूरा ध्यान रखता है। शरीर में विटामिन-सी की कमी होने से बालों में रूखापन आ जाता है। सिर की त्वचा पर सूखी पपड़ी जमने की वजह से बालों की जड़ें कमजोर हो जाती हैं। और बाल गिरने लगते हैं। लेकिन विटामिन-सी की मदद से सिर में रक्त-संचार बढ़ता है। और बाल लंबे और खूबसूरत बनते हैं। फ्री रेडिकल्स (अणु या परमाणु) से बचने के लिए व्यक्ति के शरीर को एंटी-ऑक्सीडेंट की जरूरत पड़ती है। त्वचा को सूरज की तेज किरणों और प्रदूषण से बचाने के लिए यह जरूरी है। आप विटामिन-सी का गर्मियों में सेवन जरूर करें।

विटामिन-बी2 राइबोफ्लेविन (जीवित ऊतक) एक वनस्पति वास्तविक घटक है। इसका उपयोग मोतियाबिंद और कई बीमारियों की रोकथाम में किया जाता है। राइबोफ्लेविन वसा और प्रोटीन चयापचय (मेटाबॉलिज्म) में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह सेल (कोशिकाओं) में ऊर्जा बनाने और सांस लेने में बहुत मदद करता है। विशेष रूप से यह त्वचा, बाल और नाखून जैसे ऊतकों में ऑक्सीजन के उपयोग में मदद करता है। तथा वृद्धि और विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

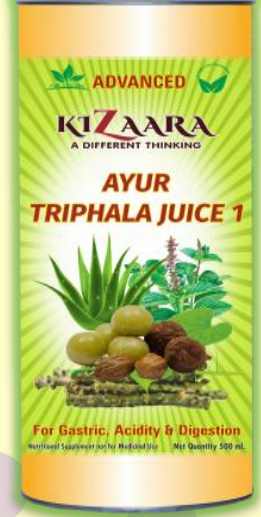
उपयोग के लिए दिशानिर्देश (DIRECTIONS FOR USE):-

- आयुर सी बकथोर्न जूस 1 के सेवन से पहले बोतल को अच्छी तरह हिलाएं।
- आयुर सी बकथोर्न जूस 1 को रोजाना सुबह खाली पेट 25 से 30 ML तक लें। और शाम को खाना खाने के 1 घंटे बाद 25 से 30 ML तक लें। तथा ध्यान रखें आयुर सी बकथोर्न जूस 1 के सेवन के तुरंत बाद कुछ भी ना खाएं। आयुर सी बकथोर्न जूस 1 के सेवन से 1 घंटे पहले और सेवन के 1 घंटे बाद कुछ भी खा सकते हैं।
- सूरज की सीधी रोशनी से दूर रखें। और बोतल को अच्छी तरह से बंद करें।
- बोतल को खोलने के बाद 1 महीने के अंदर इस्तेमाल करें।
- बेहतर परिणाम के लिए आयुर सी बकथोर्न जूस 1 का कम से कम 3 महीने लगातार सेवन जरूर करें।
- बोतल के सही होने पर ही खरीदें।

आयुर त्रिफला जूस 1 गैस या कब्ज को सही करने में, पाचनशक्ति (डाइजेशन) को सुधारने में, इम्यून सिस्टम को मजबूत करने में, डायबिटीज को सही करने में, मेदा (आमाशय) को शक्तिशाली बनाने में, भूख को बढ़ाने में, पित्त के दोषों को दूर करने में, सिर दर्द को सही करने में, आंखों व दिमाग को स्वस्थ व शक्तिशाली बनाने में, बवासीर को ठीक करने के साथ-साथ **आयुर त्रिफला जूस 1** एसिडिटी और पेट में जलन की समस्या को सही करने में भी बहुत अच्छा काम करता है।

इंग्रेडिएंट्स (INGREDIENTS)

HARAD (TERMINALIA CHEBULA) FRUITS	800 MG.
AMLA (EMBLICA OFFICINALIS)	800 MG.
BAHEDA (TERMINALIA BELLIRICA)	800 MG.
TULSI (OCIMUM TENUIFLORUM)	800 MG.
GILOY (TINOSPORA CORDIFOLIA)	800 MG.
ALOEVERA RAS (ALOEVERA BARBADENSIS)	800 MG.



हमारे आयुर त्रिफला जूस 1 में

हरड़ आयुर्वेद में औषधि के रूप में बहुत इस्तेमाल किया जाता है। हरड़ में विटामिन-सी, आयरन, मैग्नीज, कॉपर आदि भरपूर मात्रा में पाए जाते हैं। हरड़ न सिर्फ औषधि के लिए बल्कि सेहत और सौन्दर्य के लिए भी बहुत लाभकारी होता है। हरड़ का फल, जड़ और छाल सबका उपयोग किया जाता है। हरड़ खाने को आसानी से तोड़ने में मदद करता है। जिससे खाना आसानी से पच जाता है। हरड़ का सेवन करने से गैस, कब्ज से भी राहत मिलती है। यदि आपका डाइजेस्टिव सिस्टम कमजोर है तो हरड़ का प्रयोग बहुत लाभकारी होता है। जिससे आपका पाचनशक्ति (डाइजेशन) स्वस्थ होता है।

आंवला कई औषधी गुणों से भरपूर होता है। आंवला विटामिन-सी का सबसे अच्छा स्रोत होता है। आंवला हमारे पाचन तंत्र के लिए लाभदायक होता है। आंवला हमारे इम्यून सिस्टम को मजबूत करते हुए डायबिटीज से लेकर पाचन तंत्र और हड्डियों के स्वास्थ्य को बेहतर करने का काम करता है। आंवले में कैल्शियम, पौटेशियम, आयरन और विटामिन मौजूद होते हैं।

बहेड़ा कब्ज को दूर करने वाला होता है। यह मेदा (आमाशय) को शक्तिशाली बनाता है। भूख को बढ़ाता है, पित्त के दोषों को भी दूर करता है, सिर दर्द को दूर करता है, बवासीर को खत्म करता है, आंखों व दिमाग को स्वस्थ व शक्तिशाली बनाता है।

हमारे आयुर त्रिफला जूस 1 में

तुलसी का उपयोग आयुर्वेद में विभिन्न स्थितियों के उपचार के लिए बड़े पैमाने पर किया जाता है। तुलसी एंटी-ऑक्सिडेंट से भरपूर होती है और इसमें एंटी-बैक्टीरियल गुण होते हैं। इसलिए, यह आपके शरीर को विभिन्न संक्रमणों से बचाती है। यह हानिकारक बैक्टीरिया और वायरस से लड़ती है। पाचन क्रिया के लिए तुलसी पाचन को सही रखने में मदद करती है। इसके साथ ही एसिडिटी और पेट में जलन की परेशानी को भी यह दूर करती है।

गिलोय आयुर्वेद के अनुसार एक बहुत उपयोगी और गुणकारी औषधि है। आयुर्वेद में इसे अमृत बेल भी कहा जाता है। गिलोय का सेवन पेट संबंधी समस्याओं से राहत पाने और पाचन क्रिया को स्वस्थ बनाए रखने के लिए किया जाता है। क्योंकि इसमें प्रीबायोटिक गुण होते हैं जो शरीर में लैक्टिक एसिड का उत्पादन बढ़ाकर पाचन शक्ति को बेहतर करने का काम करते हैं और आंत को संक्रमण से बचाते हैं। नियमित रूप से गिलोय का सेवन करने से पाचन संबंधी समस्याओं जैसे कब्ज, एसिडिटी या अपच में लाभ होता है।

एलोवेरा रस एक औषधि के रूप में जाना जाता है। एलोवेरा के पौधे में रस सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा होता है। एलोवेरा में विटामिन्स, मिनरल्स, एमिनो एसिड, एंजाइम, और फैटी एसिड्स जैसे लगभग 200 तत्व पाए जाते हैं, जिनका इस्तेमाल बहुत सारी बीमारियों में घरेलू उपचार के रूप में किया जाता है। पाचन क्रिया को मजबूत बनाने और शरीर से विषैले पदार्थों को बाहर निकालने में मदद करता है। इस तरह से यह शरीर को प्राकृतिक रूप से डिटॉक्सीफाई करता है।

उपयोग के लिए दिशानिर्देश (DIRECTIONS FOR USE):-

- **आयुर त्रिफला जूस 1** के सेवन से पहले बोतल को अच्छी तरह हिलाएं।
- **आयुर त्रिफला जूस 1** को सुबह-शाम खाना खाने के 1 घंटे बाद 20 से 25 ML तक लें। तथा ध्यान रखें **आयुर त्रिफला जूस 1** के सेवन के तुरंत बाद कुछ भी ना खाएं। **आयुर त्रिफला जूस 1** के सेवन से 1 घंटे पहले और सेवन के 1 घंटे बाद कुछ भी खा सकते हैं।
- सूरज की सीधी रोशनी से दूर रखें। और बोतल को अच्छी तरह से बंद करें।
- बोतल को खोलने के 1 महीने के अंदर इस्तेमाल करें।
- बेहतर परिणाम के लिए **आयुर त्रिफला जूस 1** का कम से कम 3 महीने लगातार सेवन जरूर करें।
- बोतल के सही होने पर ही खरीदें।

आयुर हर्बल टी 1 भारतीय आयुर्वेद के अनुसार, हर्बल टी को वैदिक चाय के तौर पर जाना जाता है। **आयुर हर्बल टी 1** बेहद स्वादिष्ट और औषधीय गुणों से भरपूर होती है। इसमें पाए जाने वाले पोषक तत्व न सिर्फ शरीर में तरल पदार्थों की पूर्ति करते हैं। बल्कि यह दूसरी चाय से भिन्न भी होती है। दरअसल, इसमें कैफीन की मात्रा नहीं होती है। जबकि दूसरी चाय व कॉफी में कैफीन की अधिक मात्रा होने से शरीर में कई स्वास्थ्य समस्याओं का जन्म होता है। इस खास तरह की हर्बल टी को फूलों, पत्तियों, जड़ों व बीजों आदि से तैयार की जाती है। **आयुर हर्बल टी 1** पाचन क्रिया को सही करने में, शारीरिक ऊर्जा बढ़ाने में, कब्ज को दूर करने में, मानसिक और शारीरिक ताज़गी बनाए रखने तथा आजकल की व्यस्त और अनियमित जीवनशैली के कारण बहुत से लोग कम उम्र से ही मोटापे का शिकार होने लगे हैं। बढ़ते मोटापे के कारण हृदय रोग से लेकर मधुमेह तक कई समस्याएं होती हैं। वजन घटाने और मोटापा कम करने के लिए **आयुर हर्बल टी 1** को काफी लाभदायक माना जाता है। **आयुर हर्बल टी 1** में कुछ ऐसे तत्व पाए जाते हैं। जो कैलोरी को जलाने और वजन को कम करने के लिए मेटाबॉलिज्म (चयापचय) की प्रक्रिया को ठीक करती है। **आयुर हर्बल टी 1** एंटी-ऑक्सीडेंट्स से भरपूर होती है। जो उम्र से संबंधित बीमारियों से शरीर की रक्षा करती है। यह कैंसर से लड़ने में भी बहुत मददगार साबित होती है। और इससे प्रतिरक्षा प्रणाली (इम्यून सिस्टम) भी मजबूत होती है। मोटापा कम करने में, हृदय रोगों को सही करने में, शुगर (डायबिटीज) को सही करने में, कैंसर से बचाव में, प्रतिरक्षा प्रणाली (इम्यून सिस्टम) को मजबूत बनाने में, शरीर का दर्द ठीक करने में, गठिया को सही करने में, अनिद्रा की समस्या को दूर करने में, रक्तचाप नियंत्रित करने के साथ-साथ **आयुर हर्बल टी 1** लीवर को स्वस्थ बनाए रखने में बहुत अच्छा काम करता है।

इंग्रेडिएंट्स (INGREDIENTS)

BANAFSHA (VIOLA ODORATA) W.P.	12.35 GM.
BALAMOOL (SIDA CORDIFOLIA) ROOT	3.2 GM.
BRAHMI (BACOPA MONNIERI) W.P.	1.9 GM.
TULSI (OSIMUM SANCTUM) PANCHANG	5.0 GM.
TEJ PATRA (CINNAMOMUM TAMALA) LEAF	2.3 GM.
DAL CHINI (CINNAMOMUM ZEYLANICUM) CHHAL	1.0 GM.
SOUNF (FOENICULUM VULGARA) SEED	6.0 GM.
LAL CHANDAN (PTEROCARPUS SANTALINUS) STEM	2.3 GM.
ELAICHI BADI (AMOMUM SUBULATUM) FRUIT	2.3 GM.
GANDH BALA (VALERIANA WALLICHI) W.P.	0.6 GM.
MULETHI (GLYCYRRHIZA GLABRA) STEM	1.8 GM.
TEA LEAF (CAMELLIA SINESIS) LEAF	43 GM.
AGAYA GHASS (CYMBOPOGON CITRATUS) W.P.	4.8 GM.
GORAKH PAN (ADANSONIA DIGITATA) LEAF	7.0 GM.
ASHWAGANDHA (WITHANIA SOMNIFERA) ROOT	1.5 GM.
KALI MIRCH (PIPER NIGRUM) SEED	0.5 GM.
SOUNTH (ZINGIBER OFFICINALE) RHYZOME	1.0 GM.
MITHI NEEM (MURRAYA KOENIGII) LEAF	3.3 GM.



हमारे आयुर हर्बल टी 1 में

बनफशा सर्दी, खाँसी और कफ प्रकोप को दूर करने वाली जड़ी-बूटी है। जो आयुर्वेदिक और यूनानी चिकित्सा पद्धति में एक समान रूप से उपयोग में ली जाती है। खाँसी, जुकाम तथा श्वास, एवं ज्वर में बनफशा बहुत ही लाभकारी औषधि है। इससे बहुत लाभ होता है। और पेट की शुद्धि भी होती है।

बाला मूल एक प्राचीन आयुर्वेदिक औषधि है। जिसे वनस्पति शास्त्र में सिडा कोर्डिफोलिआ के नाम से जाना जाता है। इसके जरिए शरीर को पर्याप्त मात्रा में ऊर्जा और ताकत प्राप्त होती है। बाला मूल स्वास्थ्य के साथ दिल संबंधी बीमारियों को ठीक करने में बहुत लाभकारी है।

ब्राह्मी का आयुर्वेद में मानसिक रोगों के लिए अचूक औषधि माना गया है। यह मस्तिष्क की उत्तेजना बढ़ाती है। गहरी नींद लाती है। और याद्दाश्त बढ़ाती है।

तुलसी जुकाम, खाँसी, बुखार, सूखा रोग, निमोनिया, कब्ज, तनाव कम करना, वजन घटना, सिरदर्द से छुटकारा दिलाने, त्वचा और बालों के लिए, पाचन तंत्र लाभ और अतिसार (दस्त) सभी रोगों में चमत्कारी रूप से अपना असर दिखाती है। औषधीय गुणों से भरपूर हर्बल टी में तुलसी स्वास्थ्य के लिए बेहद लाभप्रद मानी जाती है। यह आपकी दिन भर की थकान को दूर करती है।

तेजपात के औषधीय गुण मधुमेह के मरीजों के लिए फायदेमंद होते हैं। शोध में पाया गया है। कि तेजपात कोलेस्ट्रॉल के स्तर को बहुत कम करते हैं। पाचन क्रिया को स्वस्थ रखने के लिए तेजपात का इस्तेमाल किया जाता है। दांतों की सेहत के लिए भी तेज पत्ते के फायदे देखे जाते हैं। इसमें मौजूद विटामिन-सी मसूड़ों और दांतों को स्वस्थ रखने में बहुत मदद करता है।

दालचीनी में पॉलिफेनॉल एंटी-ऑक्सीडेंट होता है। जो बीपी को नियंत्रित कर दिल की बीमारियों के खतरे को घटाता है। यह इंसुलिन की संवेदनशीलता को भी बढ़ाता है। और इस तरह शुगर लेवल को भी नियंत्रण में रखता है। सुबह के वक्त में दालचीनी की चाय पीने से मेटाबॉलिज्म (चयापचय) और पाचन में सुधार होता है। जिससे मोटापे को कम करने में बहुत मदद मिलती है।

सौंफ पेट में होने वाली जलन, एसिडिटी, गैस, पेट दर्द, डायरिया और महिलाओं में मासिक धर्म के समय होने वाले दर्द में भी सौंफ का सेवन फायदा पहुंचाता है। खून को साफ करने के लिए सौंफ बेहद फायदेमंद है। यह न केवल बेहतरीन ब्लड प्यूरीफायर यानि रक्तशोधक है। बल्कि आपके लीवर और किडनी के लिए भी फायदेमंद है। यह शरीर में वसा के जमाव को कम करती है। और आपके वजन को कम करने में भी बहुत मददगार साबित होती है। यह आपकी प्रतिरोधक क्षमता को भी बढ़ाती है।

लाल चंदन हमारे पेट संबंधी समस्याओं को दूर करने के साथ पाचन क्रिया को भी ठीक करता है। शारीरिक बीमारियों के इलाज के लिए लाल चंदन का किसी भी रूप में किया गया उपयोग काफी गुणकारी होता है। साथ में श्वसन प्रक्रिया को मजबूत बनाता है।

हमारे आयुर हर्बल टी 1 में

इलाइची बड़ी पाचन में सुधार, मुँह की दुर्गन्ध को समाप्त करता है। एसिडिटी में सहायक, सांस की बीमारियों को कम करने में सहायक, हृदय गति को नियंत्रित रखने में सहायक है। और आदि अन्य बीमारियों में बड़ी इलाइची बहुत लाभकारी है।

गंध बाला का उपयोग न्यूरोलॉजिकल, मनोवैज्ञानिक और पाचन विकारों में शामिल है। कम खुराक में यह मन को शांत करता है। नसों को मजबूत करता है। यह पेट दर्द, पेट फूलना, गैस, पेट का भारीपन और कम भूख लगने की समस्या को दूर करता है। यह हृदय की मांसपेशियों की ताकत में भी सुधार करता है। और रक्तचाप को कम करता है। इसलिए यह आयुर्वेदिक एंटी-हाइपरटेन्सिव दवाओं में भी शामिल है।

मुलेठी के प्रयोग से खून साफ होता है। बाल बढ़ते हैं। और बुद्धि तेज होती है। यह वात और पित्त दोष को कम करती है। शरीर के बाहरी हिस्सों की बात करें तो यह त्वचा रोगों और बालों के लिए फायदेमंद हैं।

टी-लीफ के रोजाना प्रयोग से शरीर में वसा कम होता है। और पेट की चर्बी घटती है। इससे वजन घटता है।

अघाया घास या नींबू घास में एंटी-हाइपरलिपिडेमिक और एंटी-हाइपरकोलेस्ट्रॉलेमिक गुण होते हैं। जो अच्छे कोलेस्ट्रॉल के स्तर को सामान्य रखने में बहुत मदद करती है।

गोरख पान रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाता है। इसके सेवन से गठिया रोगों में भी लाभ होता है। इसका सेवन करने से शारीरिक कमजोरी दूर होती है। इससे शारीरिक ताकत मिलती है।

अश्वगंधा के सेवन से हर उम्र के लोगों को शारीरिक व मानसिक लाभ पहुंचाता है। इसके नियमित सेवन से मधुमेह, क्षय, गठिया, दमा, स्वेत प्रदर समेत सभी शारीरिक व मानसिक कमजोरी दूर होती है। रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाता है। और व्यक्ति को स्वस्थ रखता है। इसके सेवन से उम्र बढ़ने की प्रक्रिया धीमी हो जाती है। क्योंकि यह एंटी-एजिंग है। और इसके तत्व, ऊतकों के पुनः निर्माण में सहयोग करते हैं। इसलिए जो व्यक्ति इसका सेवन करते हैं। वह अपनी उम्र से कहीं ज्यादा जवां नज़र आते हैं।

काली मिर्च में प्राकृतिक रूप से भोजन को पचाने वाले (डाइजेस्टिव) एंजाइम होते हैं। जिससे यह पाचन तंत्र को मजबूत करने के लिए उपयोगी है।

सोंठ अदरक का पाउडर है। जो हर घर की रसोई में उपयोग किया जाता है। इसे मुख्यतः- सब्जी, चाय और अन्य पेय पदार्थों में इस्तेमाल किया जाता है। सोंठ का उपयोग शरीर के वजन को कम करने के लिए किया जाता है। कई बीमारियों और दर्द का कारण सूजन हो सकता है। इस सूजन की समस्या को दूर करने के लिए सोंठ आपके लिए उपयोगी सिद्ध होता है। कैंसर जैसी जानलेवा बीमारी पर भी सोंठ के सकारात्मक परिणाम देखे जाते हैं।

मीठी नीम में विटामिन-सी और विटामिन-ए पाया जाता है। जो लीवर को स्वस्थ रखता है। इसलिए अगर आप लीवर से जुड़ी समस्या से जूझ रहे हैं। तो मीठी नीम का सेवन लाभकारी है। मीठी नीम में भरपूर मात्रा में फॉलिक एसिड और आयरन पाया जाता है। इसका नियमित सेवन खून की कमी को दूर करता है।

उपयोग के लिए दिशानिर्देश (DIRECTIONS FOR USE):-

- **आयुर हर्बल टी 1** को रोजाना 2 से 5 ग्राम पानी में अच्छे से उबालकर (चीनी या गुड़ स्वादानुसार प्रयोग करें) के साथ दिन में 2 से 3 बार पीएं। **आयुर हर्बल टी 1** को सुबह खाली पेट पीएं। दोपहर और शाम को खाना खाने से 30 से 40 मिनट पहले पीएं।
- सूरज की सीधी रोशनी से दूर रखें। और पैकेट (डिब्बी) को अच्छी तरह से बंद करें।
- हर्बल टी के पैकेट (डिब्बी) को खोलने के बाद 1 महीने के अंदर इस्तेमाल करें।
- बेहतर परिणाम के लिए **आयुर हर्बल टी 1** को कम से कम 3 महीने लगातार जरूर पीएं।
- पैकेट (डिब्बी) के सही होने पर ही खरीदें।

KIZARA
A DIFFERENT THINKING

आयुर फ्लैक्ससीड ओमेगा-369 दिल को स्वस्थ रखने में, रक्त परिसंचरण (ब्लड सर्कुलेशन) को बनाए रखने में, हड्डियों और जोड़ों के दर्द को दूर करने में, सूजन को दूर करने में, कोलेस्ट्रॉल को कम करने में, हार्मोन्स के संतुलन को बनाए रखने में, तंत्रिका तंत्र (नर्वस सिस्टम) को सही करने में, एकाग्रता (कॉन्सेंट्रेशन) को बढ़ाने में, प्रतिरक्षा प्रणाली (इम्यून सिस्टम) को सही करने में, डायबिटीज को सही करने में, दिल की बीमारी को दूर करने में, पेट की परेशानी को सही करने में, हाई ब्लड प्रेशर को कंट्रोल करने में, दिल की बीमारियों से बचाने में, बालों, त्वचा और नाखूनों के साथ-साथ **आयुर फ्लैक्ससीड ओमेगा-369** वजन घटाने में भी बहुत अच्छा काम करता है।

इंग्रेडिएंट्स (INGREDIENTS)

ENERGY	15.0 KCAL.
CARBOHYDRATES	0.15 GM.
PROTEIN	0.37 GM.
SATURATED FATTY ACIDS	0.1 GM.
POLYUNSATURATED FATTY ACIDS	0.66 GM.
MONOUNSATURATED FATTY ACIDS	0.2 GM.
TRANS FATTY ACIDS	0.0 GM.
CHOLESTEROL	0.0 MG.
FLAXSEED OIL	1250 MG.
OMEGA - 3 (ALPHA – LINOLENIC ACID).	625 MG.
OMEGA – 6 (LINOLENIC ACID)	160 MG.
OMEGA – 9 (OLEIC ACID)	250 MG.
OTHER FATTY ACIDS	160 MG.



हमारे आयुर फ्लैक्ससीड ओमेगा - 369 में

एनर्जी हमारे शरीर में होना बहुत ही महत्वपूर्ण है। इसके लिए हमारा खान-पान सही होना चाहिए।

कार्बोहाईड्रेट शरीर के लिए एक आवश्यक तत्व है। जिससे हमारे शरीर को ऊर्जा मिलती है। यह हमें दैनिक भोजन से प्राप्त होता है। शारीरिक विकास के लिए कार्बोहाईड्रेट का महत्वपूर्ण योगदान है।

प्रोटीन शरीर के लिए सबसे आवश्यक तत्व है। एक नए शोध के अनुसार यह बात सामने आई है। प्रोटीन त्वचा, रक्त, मांसपेशियों तथा हड्डियों की कोशिकाओं के विकास के लिए आवश्यक होता है।

सैचुरेटेड फैटी एसिड वह पोषक तत्व है जिसे हम बड़ी मात्रा में उपभोग करते हैं और हमें ऊर्जा मिलती है। प्रत्येक फैट अणु एक ग्लिसरॉल अणु और तीन फैटी एसिड से बना होता है।

पॉलीअनसेचुरेटेड फैटी एसिड में मौजूद ओमेगा-3 का उपयोग त्वचा के कई रोगों के इलाज और रोकथाम के लिए किया जाता है। यह हड्डी संबंधी रोग ऑस्टियोपोरोसिस यानी कमजोर हड्डियों को ठीक करने में मदद करता है।

हमारे आयुर फ्लैक्ससीड ओमेगा - 369 में

मोनोअनसैचुरेटेड फैटी एसिड वह होते हैं जिनमें केवल एक असंतृप्त कार्बन बॉन्ड होता है। इसलिए मोनोअनसैचुरेटेड फैटी एसिड में अन्य फैटी एसिड की तुलना में अधिक चिपचिपापन और पिघलने का तापमान होता है। मोनोअनसैचुरेटेड फैटी एसिड के स्वास्थ्य लाभों में स्तन कैंसर के जोखिम को कम करने, कोलेस्ट्रॉल के स्तर को कम करने, हृदय रोगों के जोखिम को कम करने और वजन घटाने में बहुत लाभकारी होता है।

ट्रांस फैटी एसिड हमारे शरीर को ट्रांस फैटी एसिड की जरूरत होती है क्योंकि यह ऊर्जा के एक प्रमुख स्रोत के रूप में काम में आता है और इसके साथ ही मस्तिष्क के विकास में भी इसका योगदान है। यह मांसपेशियों की गति को बढ़ाने और रक्त के थक्कों से बचाने में भी बहुत सहायक है।

कोलेस्ट्रॉल शरीर के सुचारु रूप से कार्य करने के लिए जरूरी है। हमारे शरीर की प्रत्येक कोशिका को जीवित रहने के लिए कोलेस्ट्रॉल की आवश्यकता होती है। कोलेस्ट्रॉल दो तरह का होता है, LDL (लो डेन्सिटी लिपोप्रोटीन) और HDL (हाई डेन्सिटी लिपोप्रोटीन)। LDL को लोग अक्सर बुरा कोलेस्ट्रॉल कहते हैं। LDL कोलेस्ट्रॉल को लीवर से कोशिकाओं में ले जाता है। अगर इसकी मात्रा ज्यादा होगी तो यह कोशिकाओं में हानिकारक रूप में इकट्ठा होने लगता है। HDL जिसे, अच्छा कोलेस्ट्रॉल भी कहा जाता है, शरीर में बुरे कोलेस्ट्रॉल को लीवर के पास ले जाने का काम करता है जिससे शरीर से इसका निष्कासन हो सके। कोलेस्ट्रॉल शरीर में विटामिन-डी, हार्मोन्स और पित्त का निर्माण करता है, जो शरीर के अंदर पाए जाने वाले वसा को पचाने में मदद करता है।

फ्लैक्ससीड आयल भारतीय आयुर्वेद में फ्लैक्ससीड आयल अमृतवटी के नाम से जाना जाता है। फ्लैक्ससीड आयल के अनेक फायदे हैं। कोल्ड प्रोसेस विधि से अलसी के तेल को निकालने पर अलसी के प्राकृतिक पोषक तत्व और विटामिन बने रहते हैं। हमारे AYUR FLAXSEED OMEGA-369 में अधिकांश अन्य ब्रांडों की तुलना में डबल स्ट्रेंथ 1000 MG प्रति कैप्सूल अलसी के तेल का प्रयोग किया गया है। कई शोध बताते हैं कि फ्लैक्ससीड आयल का सेवन कैंसर जैसी बीमारियों से बचाने में, वजन कम करने में, महिलाओं को ब्रेस्ट कैंसर और सर्वाकल कैंसर से बचाने में, रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने में, कोलेस्ट्रॉल लेवल कम करने में, पाचन तंत्र बेहतर करने में, शरीर का सूजन कम करने में, गठिया के दर्द को कम करने में, महिलाओं के हार्मोन को संचालित करने में और ब्लड प्रेशर को नियमित करने जैसे कई फायदे फ्लैक्ससीड आयल के सेवन से मिलते हैं।

हमारे आयुर फ्लैक्ससीड ओमेगा - 369 में

ओमेगा-3 (अल्फा - लिनोलेनिक एसिड) एक ऐसा पोषक तत्व है जो आपको कई तरह के फायदे पहुंचाता है और अनेक रोगों से बचाने में मदद करता है। ओमेगा-3 फैटी एसिड त्वचा को मुलायम बनाने में, झुर्रियों से मुक्त रखने में, त्वचा को डिहाइड्रेट करने में, मुंहासों के आने से रोकने में, उच्च रक्तचाप को कम करने में, अच्छे कोलेस्ट्रॉल (HDL) के लेवल को बढ़ाने में, सूजन को कम करने में, धमनियों के कार्य को गतिशील रखने में और इतना ही नहीं यह सूर्य की रोशनी से त्वचा को होने वाले नुकसान से भी बचाता है।

ओमेगा-6 (लिनोलेनिक एसिड) एक ऐसा पदार्थ होता है जो पॉलीअनसैच्युरेटेड फैट्स के अंतर्गत आता है। यह स्वास्थ्य के लिए अच्छा फैट माना जाता है। ओमेगा-6 नट्स जैसे सोयाबीन, बादाम और काजू में भी पाया जाता है। सामान्य तौर पर, ओमेगा-6 का उपयोग एक ऊर्जा उत्पादक के रूप में किया जाता है। शरीर में सूजन को कम करने और अन्य बीमारियों से बचाने में ओमेगा-6 का उपयोग लाभकारी होता है।

ओमेगा-9 (ओलिक एसिड) फैटी एसिड एक प्रकार के मोनोअनसैच्युरेटेड फैटी एसिड होते हैं। इन्हें ओलिक एसिड के नाम से भी जाना जाता है। यह एक ऐसा पदार्थ है जो कोशिका (सेल्स) में फैट के रूप में स्टोर होकर हमारी बॉडी को ओमेगा-9 फैटी एसिड देते हैं। यह हमारे मेटाबॉलिज्म को बढ़ावा देने के साथ इम्यून सिस्टम को बेहतर करने में भी मदद करता है।

अन्य फैटी एसिड एक ऐसा तत्व है जो शरीर के लिए काफी जरूरी है। यह शरीर के द्वारा नहीं बनता है। यह खाद्य पदार्थों से प्राप्त किया जा सकता है। हमारे शरीर की सेहत को बैलेंस बनाए रखने के लिए फैटी एसिड का महत्वपूर्ण योगदान होता है। फैटी एसिड हृदय रोग से बचाव करने में, जोड़ों के दर्द और पीठ के दर्द को सही करने में, बालों का झड़ना रोकने और बालों को मजबूत बनाने में, कोलेस्ट्रॉल के स्तर को कम करने में, धमनियों के ब्लॉकेज को रोकने में, पाचन क्रिया को सही करने के साथ-साथ शरीर के लिए बहुत फायदेमंद होता है।

अलसी गुणों का खजाना है। लेकिन कई लोग आज भी इससे अनजान हैं। अलसी हमारे शरीर को कई बीमारियों से बचाकर स्वस्थ रखने में बहुत मदद करती है। शाकाहारी लोगों के लिए अलसी वरदान है। क्योंकि मछली में पाया जाने वाला ओमेगा-3 फैटी एसिड अलसी में मौजूद होता है। साथ ही इसमें लिगनेंस एंटी-ऑक्सीडेंट्स, फाइबर व अल्फा लिनोलिक एसिड भी मौजूद होता है। जो आपके शरीर में होने वाली तरह-तरह की बीमारियां जैसे- मधुमेह (डायबिटीज), दिल की बीमारी, पेट की परेशानी और अन्य कई स्वास्थ्य समस्याओं को कम करते हैं। अलसी के औषधीय गुण मनुष्य के लिए अमृत से कम नहीं हैं। हम काम तो करते हैं। लेकिन शारीरिक कम और मानसिक ज्यादा। ज्यादा समय लैपटॉप और कंप्यूटर के आगे गुजरता है। इससे वजन कब बढ़ने लगता है। पता ही नहीं चलता। साथ ही काम में अधिक व्यस्त होने के कारण खानपान पर ध्यान न देना, बाहर का तला-भुना खाना खाने से वजन बढ़ने लगता है। और कई बीमारियां शरीर को घेर लेती हैं। ऐसे में अगर अलसी का सेवन किया जाए, तो यह परेशानी कम हो जाती है। अलसी में प्रचुर मात्रा में फाइबर होता है। जो वजन को संतुलित रखने में बहुत मदद करता है। इसके अलावा, इसमें ओमेगा-3 फैटी एसिड होता है। जोकि लाभदायक फैट होता है। यह भूख को कम करता है। जिससे आपका वजन कम होने में बहुत मदद मिलती है।

जैसे ही इंसान तनाव में आने लगता है। तो उसके शरीर में कई तरह की बीमारियां घर करने लगती हैं। और हाई ब्लड प्रेशर उन्हीं में से एक है। हाई ब्लड प्रेशर होने से दिल के दौरों का या ब्रेन हैमरेज होने के अलावा अन्य बीमारियों का खतरा रहता है। इसलिए, आप रोज जितनी जरूरत हो सके उतना व्यायाम करें और खान-पान का ध्यान रखें। इसके लिए आप अपने खाने में अलसी को शामिल करें। इसमें लिनोलिक एसिड, लिगनेन व फाइबर होते हैं। जो काफी हद तक ब्लड प्रेशर को कम करने में बहुत मदद करते हैं।

जब बात आए कुछ हेल्दी खाने की तो अलसी एक अच्छा ऑप्शन है। अलसी शरीर के हानिकारक कोलेस्ट्रॉल को कम करता है। और दिल की बीमारियों का खतरा भी कम करता है। इससे आपका कोलेस्ट्रॉल काफी हद तक कम होगा और आपको एनर्जी भी मिलेगी। क्योंकि अलसी में फाइबर और ओमेगा-3 होता है। जो आपको ऊर्जा देगा।

मनुष्य का इम्यून सिस्टम सही होना बहुत जरूरी है। अगर किसी का इम्यून सिस्टम ठीक नहीं है। तो वो बार-बार बीमारी का शिकार होने लगता है। किसी भी व्यक्ति को अपना इम्यून सिस्टम सही रखने के लिए न सिर्फ अपनी दिनचर्या पर ध्यान देना चाहिए। बल्कि खाने का भी ध्यान रखना चाहिए। इम्युनिटी पावर बढ़ाने के लिए आप अलसी का सेवन कर सकते हैं। इसमें अल्फा लिनोलिक एसिड (ALPHA LINOLENIC ACID-ALA) होता है। जो एक तरह का ओमेगा-3 फैटी एसिड है। अलसी में फाइबर, प्रोटीन और अन्य पोषक तत्व भी होते हैं। जो इम्यून पावर को बढ़ाने में भी बहुत मददगार होते हैं। इससे आपके शरीर में बीमारियों से लड़ने की क्षमता आती है।

आजकल की लाइफस्टाइल की वजह से लोगों में तरह-तरह की बीमारियों का खतरा बढ़ रहा है। किडनी की बीमारी उन्हीं में से एक है। कम पानी पीना, गलत खान-पान, मधुमेह (डायबिटीज) या मूत्र पथ के संक्रमण (UTI) जैसी समस्याएं कई बार किडनी की समस्या का कारण बन जाती हैं। इसलिए जरूरी है। कि वक्त रहते इस पर ध्यान दिया जाए। आप अपने आहार का खास ध्यान रखें और अपने खाने में अलसी जरूर शामिल करें। अलसी में मौजूद अल्फा लिनोलेनिक एसिड (ALA) किडनी की परेशानी का जोखिम काफी हद तक कम करता है। इसलिए, अगर किडनी की समस्या से बचना है। तो अलसी को अपनी डाइट में शामिल करें। सही और स्वस्थ जीवनशैली को अपनाएं।

बालों का झड़ना आजकल आम बात हो गई है। बालों का झड़ना आमतौर पर मौसम की वजह से, पोषक तत्वों की कमी से या किसी चीज के साइड इफेक्ट से होता है। यदि आप अपने बालों का झड़ना रोकना चाहते हैं। तो आपको अलसी का उपयोग करना चाहिए। क्योंकि इसमें प्रचुर मात्रा में विटामिन, ओमेगा-3 फैटी एसिड, प्रोटीन और अन्य पोषक तत्व होते हैं। जो बालों को जड़ से मजबूत करता है। और बालों का झड़ना रोकता है।

उपयोग के लिए दिशानिर्देश (DIRECTIONS FOR USE):-

- **आयुर फ्लैक्ससीड ओमेगा - 369** को रोजाना सुबह नाश्ते के बाद 1 कैप्सूल और शाम को खाना खाने के 1 घंटे बाद 1 कैप्सूल लें। **अगर आयुर फ्लैक्ससीड ओमेगा - 369** को सुबह खाली पेट लिया जाए तो बहुत अच्छा रहता है। **आयुर फ्लैक्ससीड ओमेगा - 369** के सेवन के तुरंत बाद कुछ भी ना खाएं।
- बेहतर परिणाम के लिए **आयुर फ्लैक्ससीड ओमेगा-369** का कम से कम 3 महीने लगातार सेवन जरूर करें।
- पैकेट (डिब्बी) के सही होने पर ही खरीदें।

आयुर जॉइंट पेन केयर 1 दर्द और सूजन को कम करता है। **आयुर जॉइंट पेन केयर 1** मांशपेशियों की ऐंठन और जोड़ों की अकड़न को दूर करता है। **आयुर जॉइंट पेन केयर 1** संयुक्त संरचना को मजबूत करता है। **आयुर जॉइंट पेन केयर 1** तेल शुद्ध रूप से सुरक्षित और हानिरहित आयुर्वेदिक सिद्धांत पर आधारित है। और सक्रिय तत्व रक्त परिसंचरण, कठोर मांशपेशियों और अंग के दर्द, शरीर के दर्द, गंभीर जोड़ों के दर्द या सूजन को कम करने में बहुत मदद करता है। **आयुर जॉइंट पेन केयर 1** बिना किसी दुष्प्रभाव के दर्द में भी राहत देता है। और क्रोनिक दर्द या पुराने दर्द में बिना किसी दुष्प्रभाव के **आयुर जॉइंट पेन केयर 1** बहुत अच्छा काम करता है।

इंग्रेडिएंट्स (INGREDIENTS)

PUDINA SAT (MANTHA SPICATA) PANCHANG	1000 MG.
KAPOOR (CAMPORA) OIL	500 MG.
AJWAIN SAT (TACHYSPERMUM COPTICUM) SEED	500 MG.
NILGIRI OIL (EUCALYPTUS) STEM	1000 MG.



हमारे आयुर जॉइंट पेन केयर 1 में

पुदीना सत जोड़ों के दर्द के लिए बहुत लाभकारी औषधि है। इसके इस्तेमाल से जोड़ों के दर्द में राहत मिलती है।

कपूर के तेल की मालिश करने से जोड़ों में दर्द या शारीरिक समस्या होने पर आराम मिलता है। यह गठिया के रोगियों के लिए बहुत फायदेमंद होता है। मांसपेशियों के दर्द से राहत दिलाने में कपूर बहुत लाभकारी है।

अजवाइन सत के इस्तेमाल से जोड़ों के दर्द में बहुत राहत मिलती है। सर्दियों में गठिया की वजह से जोड़ों में सूजन और दर्द काफी बढ़ जाता है। ऐसी स्थिति में अजवाइन सत बहुत अच्छा काम करता है।

नीलगिरी आयल जोड़ों के दर्द में बहुत कारगर है। कठोर मांशपेशियां, जोड़ों का दर्द, फाइब्रोसिस में भी नीलगिरी के तेल से राहत मिलती है। यह ब्लड सर्कुलेशन को बढ़ाने के साथ ही दर्द से राहत देता है। यह मांशपेशियों का मूवमेंट (गति या चाल) बढ़ाने का भी काम करता है।

❖ जोड़ों में दर्द के लक्षण

- ✓ जोड़ों को मोड़ने में परेशानी होना
- ✓ जोड़ों का लाल होना
- ✓ जोड़ों में खिंचाव महसूस होना
- ✓ जोड़ों पर कठोरता होना, चलने-फिरने में दिक्कत होना
- ✓ जोड़ों में अकड़न आना
- ✓ जोड़ों में दर्द और सूजन होना
- ✓ जोड़ों में कमजोरी होना ।

❖ जोड़ों में दर्द की अहम वजह

बढ़ती उम्र के साथ - साथ होने वाली कुछ तकलीफें जोड़ों के दर्द का मुख्य कारण होती है ।
जैसे कि –

- ✓ हड्डियों में रक्त की आपूर्ति में रूकावट आना
- ✓ रक्त का कैंसर होना
- ✓ हड्डियों में मिनरल यानि की खनिज की कमी होना
- ✓ जोड़ों पर बहुत ज्यादा दबाव पड़ना
- ✓ जोड़ों में इंफेक्शन होना
- ✓ हड्डियों का टूटना, मोच आना या चोट लगना
- ✓ हड्डियों में ट्यूमर आदि की शिकायत होना
- ✓ आर्थराइटिस, बर्साइटिस का होना
- ✓ कार्टिलेज (ऑस्टियोकोण्ड्राइटि) का फटना
- ✓ कार्टिलेज का घिस जाना जॉइंट पेन (जोड़ों के दर्द) की अहम वजह हैं ।

उपयोग के लिए दिशानिर्देश (DIRECTIONS FOR USE):-

- आयुर जॉइंट पेन केयर 1 को लगाने से पहले बोतल को अच्छी तरह हिलाएं ।
- आयुर जॉइंट पेन केयर 1 को रोजाना दिन में 2 से 3 बार आवश्यकतानुसार या 5 से 10 बूंद दर्द वाली जगह पर हल्के हाथ से मले (रगड़े नहीं) ।
- सूरज की सीधी रोशनी से दूर रखें । और बोतल को अच्छी तरह से बंद करें ।
- बेहतर परिणाम के लिए आयुर जॉइंट पेन केयर 1 को कम से कम 3 महीने लगातार जरूर लगाएं ।

आयुर हेयर केयर 1 बालों का झड़ना रोकने में, बालों की कंडीशनिंग में, बालों के पोषण को सही करने में, दो मुंहे बालों को सही करने में, बालों की ग्रोथ (वृद्धि) में, बालों की जड़ें मजबूत करने में, बालों को लम्बा करने में, नए बाल उगाने में, बालों को सफ़ेद होने से रोकने के साथ-साथ **आयुर हेयर केयर 1** बालों को चमकदार और मुलायम बनाने में भी बहुत अच्छा काम करता है।

इंग्रेडिएंट्स (INGREDIENTS)

AMLA (EMBLICA OFFICINALIS) FRUIT	15 MG.
BRAHMI (BOCAPA MONNIERI) PANCHANG	15 MG.
BHRING RAJ (ECLIPTA ALBA) PANCHANG	5.0 MG.
GENDA PHOOL (TAGETES ERECTA) FLOWER	5.0 MG.
JATAMANSI (NARDOSTACHYS JATAMANSI) ROOT	5.0 MG.
NEEM (AZADIRACHTA INDICA) LEAF	5.0 MG.
SHIKAKAI (ACACIA CONCINNA) POD	5.0 MG.
MANJISTHA (RUBIA CORDIFOLIA) STEM	5.0 MG.
NAGKESAR (MESUA FERREA) SEED	5.0 MG.
MEHANDI (LAWSONIA INERMIS) LEAVES	5.0 MG.



हमारे आयुर हेयर केयर 1 में

आंवला बालों को मॉइस्चर करता है। चमक लाता है। और बाल मजबूत करता है। यह जड़ों को इन्फेक्शन से भी बचाता है। इसको या तो मालिश के लिए प्रयोग करते हैं। या फिर शैम्पू या कंडीशनर में 2-3 बूंद मिलाकर। आंवला बालों के रोमकूपों (छिद्र) को मजबूत करता है। जिससे बाल तेज़ी से बढ़ते हैं। यह बालों के टूटने और सफ़ेद होने को भी काफी कम कर देता है।

ब्राह्मी बालों के लिए एक महत्वपूर्ण आयुर्वेदिक जड़ी-बूटी है। स्कैल्प (सिर की त्वचा और बाल) पर ब्राह्मी के तेल की नियमित मालिश बालों के विकास को बढ़ावा देती है। बालों के झड़ने को रोकती करती है। और इन्फेक्शन और बीमारियों के निशान को हटाती है। ब्राह्मी तेल, नारियल या तिल के तेल को बेस (आधार) बनाकर बनाया जाता है। जिसके कारण ब्राह्मी तेल ब्राह्मी जड़ी-बूटी की अच्छाई के साथ-साथ तेलों से इलाज़ के गुणों को तेज करता है। इसलिए तेज़ी से गिरते बालों के इलाज़ के लिए ब्राह्मी तेल एक प्रभावी उपाय है। बालों के रोमकूपों (छिद्र) को मजबूत करती है। और बालों को टूटने से बचाती है।

भृंगराज या भृंगा तेल, एक ऐसी ही प्राचीन औषधि है। जिसका प्राचीन काल से ही बालों और स्कैल्प (सिर की त्वचा और बाल) की त्वचा को सेहतमंद रखने के लिए इस्तेमाल किया जाता रहा है। आयुर्वेद में प्राकृतिक औषधि के हज़ारों ऐसे नायाब नुस्खे छुपे हुए हैं।

हमारे आयुर हेयर केयर 1 में

जो आपके शरीर, बालों और त्वचा के सम्पूर्ण स्वास्थ्य को बनाए रखने के लिहाज से आश्चर्यजनक और अद्भुत नतीजे देते हैं। आयुर्वेद में इसे केशराज कहा जाता है। यानी बालों का राजा। आयुर्वेद के अनुसार, यह हर्ब स्कैल्प (सिर की त्वचा और बाल) में रक्त संचार को बेहतर बनाता है। और उसके साथ ही बालों की जड़ों में भी पोषण युक्त रक्त संचार के चलते जड़ों की अच्छी वृद्धि होती है।

गेंदा फूल का प्रयोग बालों के लिए बहुत फायदेमंद है। मानसून में भी यह बालों के लिए उपयोगी है। यह नेचुरल ऑयल बालों व डैंड्रफ के लिए बहुत फायदेमंद होता है।

जटामांसी में एंटी-इंफ्लेमेटरी और एंटी-माइक्रोबियल (सूक्ष्मजीव) गुण होते हैं। जो बालों के झड़ने, डैंड्रफ और बालों में किसी भी अन्य माइक्रोबियल (सूक्ष्मजीव) वृद्धि को रोकते हैं। यह बालों के विकास को बढ़ावा देने में बहुत मदद करता है। और यह बालों को चिकना, चमकदार और रेशमी बनाता है।

नीम के तेल में शक्तिशाली पुनर्योजी (रिजनरेटिव) गुण होते हैं। जो स्वस्थ बालों के विकास को बढ़ावा देते हैं। नीम के तेल का एंटी-फंगल गुण आपके बालों को स्कैल्प (सिर की त्वचा और बाल) से जुड़ी परेशानियों से छुटकारा दिलाता है। नीम के तेल (NEEM OIL) में आवश्यक फैटी एसिड होते हैं। जो आपके बालों में चमक लाते हैं। नीम के तेल में एंटी-बैक्टीरियल गुण होते हैं। जो आपके बालों में डैंड्रफ से लड़ता है।

शिकाकाई के गुण इसे सबसे अच्छा प्राकृतिक बालों को साफ़ करने वाला बनाता है। यह रासायनिक आधारित शैंपू की जगह प्रयोग करने वाला एक बेहतर विकल्प है। यह हल्का होने के कारण आपके सिर की त्वचा से प्राकृतिक तेलों को बचाकर रखता है। इसमें प्रचुर मात्रा में विटामिन होने के कारण यह फंगल (फफूंद) संक्रमण से निपटने में बहुत मदद करके डैंड्रफ का इलाज करता है।

मंजिष्ठा में बालों को रंग देने का गुण होता है। इसलिए इसका इस्तेमाल हेयर ड्राई में भी किया जाता है। दरअसल, मंजिष्ठा में मौजूद पुरपुरिन और मुंजिस्टिन बतौर कलरिंग एजेंट का काम करते हैं। जो बालों को रंगने में सहायक साबित होते हैं।

नागकेसर एक सुन्दर तथा सदाबहार पेड़ है। जिसे स्टील वुड के नाम से भी जाना जाता है। इसका उपयोग आयुर्वेदा में दवाओं और विभिन्न प्रकार के रोगों के उपचार में किया जाता है। यह बालों को मुलायम और मजबूत बनाता है।

मेहंदी के तेल से बालों को वॉश करना चाहिए। इससे आपको बहुत फायदा होगा। आपके बालों की सारी गंदगी साफ हो जाएगी साथ ही आपके स्कैल्प (सिर की त्वचा और बाल) पर खुजली भी नहीं होगी। मेहंदी के तेल का इस्तेमाल करके बालों में चमक लायी जाती है। इससे बाल मजबूत, सॉफ्ट और सिल्की हो जाते हैं।

उपयोग के लिए दिशानिर्देश (DIRECTIONS FOR USE):-

- **आयुर हेयर केयर 1** को सिर पर लगाने से पहले बोतल को अच्छी तरह हिलाएं।
- बालों को सुखाने के बाद बालों की जड़ों पर हल्के हाथों से आवश्यकतनुसार 5 से 10 मिनट मालिश करें।
- सूरज की सीधी रोशनी से दूर रखें। और बोतल को अच्छी तरह से बंद करें।
- बोतल को खोलने के बाद 1 महीने के अंदर इस्तेमाल करें।
- बेहतर परिणाम के लिए **आयुर हेयर केयर 1** को कम से कम 3 महीने लगातार जरूर उपयोग करें।
- बोतल के सही होने पर ही खरीदें।

KIZAARA
A DIFFERENT THINKING

आयुर एस + सी हेयर केयर 1 बालों को चमकदार बनाने में, बालों का झड़ना रोकने में, बालों को मजबूत बनाने में, बालों को काला, नर्म और मुलायम बनाने के साथ-साथ **आयुर एस + सी हेयर केयर 1** रूसी (डैंड्रफ) को रोकने की समस्या को सही करने में भी बहुत अच्छा काम करता है।

इंग्रेडिएंट्स (INGREDIENTS)

ALOEVERA RAS (ALOEVERA BARBADENSIS) LEAF	30 ML.
ARITHA (SAPINDUS MUKOROSI) FRUIT	20 GM.
AM LA (PHYLLANTHUS EMBLICA) FRUIT	15 GM.
BHRINGRAJ (ECLIPTA PROSTRATA) W.P.	15 GM.
JAVAKUSUM (HIBISCUS) FLOWER	15 GM.
MEHANDI (LAWSONIA INERMIS) LEAF	15 GM.
SOYA (SOYABEAN) FRUIT	5.0 GM.
SHIKAKAI (ACACIA CONCINNA) W.P.	5.0 GM.



हमारे आयुर एस + सी हेयर केयर 1 में

एलोवेरा रस में विटामिन-ए, विटामिन-सी और विटामिन-ई काफी मात्रा में पाए जाते हैं। यह सभी हेल्दी सेल ग्रोथ को प्रोमोट करते हैं और बालों को चमकदार बनाते हैं। इसमें मौजूद विटामिन-बी12 और फोलिक एसिड बालों का गिरना रोकने में मदद करता है। एलोवेरा से संबंधित एक शोध में माना गया है कि यह बालों को जरूरी पोषण प्रदान करने का काम करता है। साथ ही यह सिर की त्वचा और बालों (स्कैल्प) में ब्लड सर्कुलेशन को बढ़ाकर बालों को मजबूत बनाने का काम करता है। इस तरह एलोवेरा बालों के विकास को बढ़ावा देता है। एलोवेरा से जुड़े एक और शोध में माना गया है कि इसमें रूसी हटाने वाला (एंटी-डैंड्रफ) गुण पाया जाता है। इस कारण इसे हेयर कन्डीशनर और शैम्पू में मुख्य घटक के रूप में इस्तेमाल किया जाता है। एलोवेरा में मौजूद सिस्टीन (CYSTEINE) और लाइसिन (LYSINE) नामक तत्व पाए जाते हैं, जो बालों के कम होने की समस्या को रोकने में बहुत अच्छा काम करता है।

अरीठा आयुर्वेद की सबसे लोकप्रिय जड़ी-बूटियों में से एक है। अरीठा बालों को झड़ने से रोकता है, साथ ही बालों की ग्रोथ भी बढ़ाता है। अरीठा बालों को काला, नर्म और मुलायम बनाता है। अरीठा का इस्तेमाल शैम्पू में एक खास तत्व के रूप में किया जाता है, जो बालों से धूल, मिट्टी और गंदगी निकालता है। बालों को तंदुरुस्त और घना बनाता है। अरीठा एक प्राकृतिक हेयर टॉनिक है और बालों की समस्याओं का इलाज करने के लिए उपयोग किया जाता है।

हमारे आयुर एस + सी हेयर केयर 1 में

आंवला बालों के लिए एक शानदार आयुर्वेदिक औषधि है। आंवले में फाइटो-न्यूट्रिएंट्स, विटामिन और खनिज पदार्थ होते हैं। जो कि सिर की त्वचा और बालों (स्कैल्प) पर रक्त के प्रवाह को बढ़ाने में मदद करते हैं। आंवले में मौजूद विटामिन-सी कोलाजन प्रोटीन का उत्पादन करता है। जिससे बाल स्वस्थ, लंबे और घने होते हैं। सिर की त्वचा और बालों (स्कैल्प) से जुड़ी समस्याएं जैसे रूसी और रूखापन बाल झड़ने का प्रमुख कारण हो सकते हैं। आंवले का प्रयोग सिर की त्वचा और बालों (स्कैल्प) के आयुर्वेदिक उपचार के लिए भी किया जाता है। सिर की त्वचा और बालों (स्कैल्प) की समस्याओं जैसे रूसी और रूखेपन को दूर करने में भी आंवला मदद करता है।

भृंगराज एक आयुर्वेदिक औषधि है जिसे एक्लिप्ता अल्बा नाम से भी जाना जाता है। भृंगराज में कई औषधीय गुण पाए जाते हैं। भृंगराज सिर की त्वचा और बालों (स्कैल्प) पर संक्रमण नहीं होने देता और रूसी (डैंड्रफ) को भी दूर करता है। भृंगराज बालों को असमय सफ़ेद होने से रोकता है और बालों के प्राकृतिक रंग पर कोई असर नहीं होने देता है।

जवाकुसुम या गुड़हल के फूल को आयुर्वेद में एक बहुत ही उत्तम औषधि बताया गया है। जवाकुसुम बालों को नवजीवन प्रदान करता है और रूसी के समस्या से निजात दिलाने में मदद करता है। यहाँ तक कि जवाकुसुम के नियमित इस्तेमाल से बालों का झड़ना कम होता है।

मेहंदी को आयुर्वेद में कई तरह से इस्तेमाल किया जा रहा है। मेहंदी में ग्लूकोज, टैनिन, मैलिक एसिड, वासोन, मैलिटोल और म्यूसिलेज जैसे तत्व पाए जाते हैं। जो आपकी सिर की त्वचा और बालों (स्कैल्प) और त्वचा की हीट रिमूव कर उसे प्राकृतिक तौर पर पोषण देते हैं। अगर आपके बालों में ड्रायनेस या डैंड्रफ है, तो मेहंदी का उपयोग आपके बालों के लिए परफेक्ट कंडीशनर है।

सोया के उपयोग से बाल मजबूत और नरम होते हैं। अगर आपके बाल रूखे-बेजान हो चुके हैं तो सोयाबीन का इस्तेमाल करके आप अपने बालों में नई जान ला सकते हैं। सोयाबीन, प्रोटीन के गुणों से भरपूर होता है। जिसके इस्तेमाल से बाल घने, मुलायम और चमकदार बनते हैं। झड़ते बालों की समस्या से छुटकारा पाने के लिए सोयाबीन का उपयोग लाभकारी होता है। सोयाबीन से बालों में चमक आती है।

शिकाकाई आमतौर पर भारत में पाया जाता है और इसका इस्तेमाल पारंपरिक रूप से हमारे देश के कई हिस्सों में बालों को क्लीन करने के लिए किया जाता है। शिकाकाई में एंटी-ऑक्सिडेंट्स, विटामिन-ए, विटामिन-सी, विटामिन-के और विटामिन-डी जैसे पोषक तत्व होते हैं जो बालों के स्वास्थ्य के लिए काम करते हैं और बालों को मजबूत बनाते हैं। शिकाकाई में एंटी-फंगल गुण होते हैं जो रूसी (डैंड्रफ) को रोकने में बहुत अच्छा काम करते हैं।

उपयोग के लिए दिशानिर्देश (DIRECTIONS FOR USE):-

- गीले बालों पर 2-5 मिनट के लिए मालिश करें। और उसके बाद साफ़ पानी से धो लें।
- सूरज की सीधी रोशनी से दूर रखें। और ट्यूब को अच्छी तरह से बंद करें।
- ट्यूब को खोलने के बाद 1 महीने के अंदर इस्तेमाल करें।
- बेहतर परिणाम के लिए **आयुर एस + सी हेयर केयर 1** को कम से कम 3 महीने लगातार जरूर उपयोग करें।
- ट्यूब के सही होने पर ही खरीदें।

KIZARA
A DIFFERENT THINKING

आयुर पंच तुलसी 1 में हर इन्फेक्शन से लड़ने की ताकत होती है। हमारी **आयुर पंच तुलसी 1**, 200 से अधिक बीमारियों में उपयोगी है। **आयुर पंच तुलसी 1** पीने के पानी से हानिकारक रोगाणुओं को कम करती है। यह सर्दी-खाँसी को सही करने में, पुरानी बैक्टीरियल बीमारी को सही करने में, त्वचा रोगों को सही करने में, यौन रोगों को दूर करने में, अनियमित पीरियड्स की समस्या को दूर करने में, दस्त को ठीक करने में, सांस की दुर्गंध को दूर करने में, चेहरे की चमक को सही करने में, बुखार को ठीक करने में, स्वाइन फ्लू को ठीक करने में, डेंगू को ठीक करने में, मोटापा कम करने में, ब्लड प्रेशर को नियंत्रित रखने में, शुगर (डायबिटीज) को सही करने में, एलर्जी को सही करने में, खुजली को ठीक करने में, कैंसर से बचाव में, हार्ट ब्लॉकेज को सही करने में, अपच प्रबंधन के साथ-साथ **आयुर पंच तुलसी 1** में अनेक प्रकार के वायरस के साथ-साथ कोरोना वायरस तक से लड़ने की क्षमता होती है।

इंग्रेडिएंट्स (INGREDIENTS)

RAMA TULSI	250 MG.
SHYAMA TULSI	250 MG.
VANA TULSI	250 MG.
SWETA TULSI	250 MG.
SHRI TULSI	250 MG.



हमारे आयुर पंच तुलसी 1 में

राम तुलसी आयुर्वेद के अनुसार हर जगह आसानी से मिलने वाली तुलसी होती है। जिसकी पत्ती हल्के हरे रंग की होती हैं। रामा तुलसी की टहनियाँ सफेद रंग की होती हैं। राम तुलसी में गंध एवं तीखापन कम होता है। राम तुलसी का प्रयोग कई स्वास्थ्य एवं त्वचा संबंधी रोगों के निवारण के लिए औषधी के रूप में किया जाता है। राम तुलसी का इस्तेमाल पाचन क्रिया और बच्चों की सर्दी-खाँसी और अन्य बीमारियों को ठीक करने के लिए बहुत ही लाभकारी औषधि है।

श्याम तुलसी में एंटी-बैक्टीरियल गुण होते हैं। श्याम तुलसी के पत्तों का रंग काला होता है। श्याम तुलसी मलेरिया बुखार, कॉलरा, उल्टी आना, कान का दर्द, फेफड़े के रोग जैसे ब्रोंकाइटिस (श्वास नली में होने वाली सूजन की बीमारी), अस्थमा, डायबिटीज, ल्यूकोडर्मा (एक प्रकार का त्वचा विकार है), दांत का दर्द, कफ की समस्या का इलाज किया जाता है। श्याम तुलसी का उपयोग किसी भी तरह के बुखार को ठीक करता है। इसमें कफनाशक गुण होते हैं। यही कारण है कि इसे दवा के रूप में अधिक उपयोग में लाया जाता है।

हमारे आयुर पंच तुलसी 1 में

वन तुलसी को बर्बरी तुलसी के नाम से भी जाना जाता है। आयुर्वेदिक के अनुसार वात-पित्त-कफ विकार दोषों को दूर करने, भूख को बढ़ाने और हृदय को स्वस्थ बनाने खुजली, रक्तविकार, कुष्ठ रोग, सूजन और दर्द को कम करने और मूत्र संबंधित बीमारियों में भी वन तुलसी बहुत ही लाभकारी औषधि है।

श्वेत तुलसी बच्चों के कफ विकार, सर्दी, खांसी इत्यादि में लाभदायक है। गले में सूजन तथा गले की खराश दूर करने के लिए श्वेत तुलसी का सेवन शुगर (चीनी) के साथ करने से बहुत राहत मिलती है।

श्री तुलसी दाद, खुजली, एग्जिमा (एक तरह की एलर्जी का प्रकार होता है। जिसमें ना शांत होने वाली असहनीय खुजली होती है) चर्म रोग, घाव को भरने, स्वाइन फ्लू, डेंगू बुखार, खांसी, जुकाम, जोड़ों में दर्द, ब्लड प्रेशर, मोटापा, शुगर, पेशाब संबंधित समस्या, फेफड़ों में सूजन, वीर्य की कमी, थकान, भूख में कमी इत्यादि को ठीक करने में बहुत ही लाभकारी औषधि है।

उपयोग के लिए दिशानिर्देश (DIRECTIONS FOR USE):-

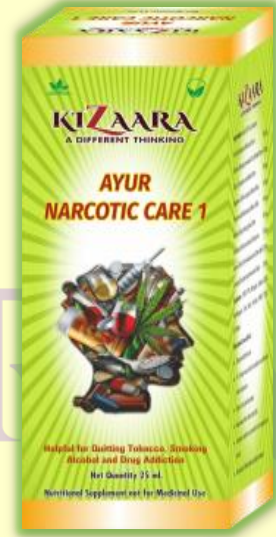
- **आयुर पंच तुलसी 1** के सेवन से पहले बोतल को अच्छी तरह हिलाएं।
- **आयुर पंच तुलसी 1** को रोजाना सुबह खाली पेट गुनगुने पानी में 1 से 2 बूंद मिलाकर पीएं। और इसे 1 से 2 बूंद चाय, कॉफी और दूध में भी मिलाकर ले सकते हैं। **आयुर पंच तुलसी 1** को दिन में 3 से 4 बार लें सकते हैं। आप रोजाना अपने पूरे परिवार के पीने के पानी में **आयुर पंच तुलसी 1** डालकर पिलाएं यह आपके पूरे परिवार के स्वास्थ्य के लिए बहुत अच्छा रहेगा।
- सूरज की सीधी रोशनी से दूर रखें। और बोतल को अच्छी तरह से बंद करें।
- बोतल के सही होने पर ही खरीदें।

एक बार नशे की लत या आदत हो जाने पर यह शरीर को खोखला करके ही छोड़ती है। इसकी ऐसी लत या आदत लग जाती है कि फिर इसे छोड़ना बेहद मुश्किल हो जाता है। लेकिन आयुर्वेद में हमारा **आयुर नारकोटिक केयर 1** के सेवन नशे की लत या आदत से छुटकारा पाया जा सकता है। **आयुर नारकोटिक केयर 1** किसी भी हानिकारक पदार्थ जैसे शराब की लत को छुड़वाने में, तम्बाकू की लत को छुड़वाने में, मानव की भावनात्मक क्षमता बढ़ाने में, मानसिक और मनोवैज्ञानिक प्रतिक्रियाओं को संतुलित करने में, मानसिक ऊर्जा को बढ़ाने में, सहनशक्ति के साथ-साथ **आयुर नारकोटिक केयर 1** मन को शांत रखने में भी बहुत अच्छा काम करता है।

नशीली दवाओं (DRUG ADDICTION) की लत से बचने के लिए रोकथाम (PREVENTION) ।

इंग्रेडिएंट्स (INGREDIENTS)

AMLA (EMBLICA OFFICINALIS) FRUIT	75 MG.
BRAHMI (BACOPA MONNIERI) DRY WHOLE PLANT	75 MG.
GILOY (TINOSPORA CORDIFOLIA) STEM	75 MG.
NAGKESAR (MESUA FERREA) WHOLE PLANT	75 MG.
PUNARNAVA (BOERHAVIA DIFFUSA) ROOT	75 MG.
MULETHI (GLYCYRRHIZA GLABRA) STEM	75 MG.
VIDARI KAND (PUERARIA TUBEROSA) RHYZOME	75 MG.
ARJUNA CHHAL (TERMINALIA ARJUNA) STEM BARK	30 MG.
LAWANG (SYZYGIUM AROMATICUM) BUDS	30 MG.



हमारे आयुर नारकोटिक केयर 1 में

आंवला, ब्राह्मी, गिलोय, नागकेसर, पुनर्नर्वा, मुलेठी, विदारी कन्द, अर्जुन छाल, लौंग नशे की लत या आदत को छुड़ाने में बहुत ही लाभकारी औषधि है।

उपयोग के लिए दिशानिर्देश (DIRECTIONS FOR USE):-

- **आयुर नारकोटिक केयर 1** के सेवन से पहले बोतल को अच्छी तरह हिलाएं।
- **आयुर नारकोटिक केयर 1** को रोजाना सुबह, दोपहर और शाम 10 से 15 बूंद लें। तथा ध्यान रखें **आयुर नारकोटिक केयर 1** के सेवन के तुरंत बाद कुछ भी ना खाएं। अच्छे परिणाम के लिए **आयुर नारकोटिक केयर 1** को खाना खाने के 30 से 40 मिनट बाद लें।
- सूरज की सीधी रोशनी से दूर रखें। और बोतल को अच्छी तरह से बंद करें।
- बोतल को खोलने के बाद 1 महीने के अंदर इस्तेमाल करें।
- बेहतर परिणाम के लिए **आयुर नारकोटिक केयर 1** का कम से कम 3 महीने लगातार सेवन जरूर करें।
- बोतल के सही होने पर ही खरीदें।

साथियों क्या आप जानते हैं 85% भारतीय पाचन तंत्र (डाइजेस्टिव सिस्टम) रोग से प्रभावित हैं।

आयुर फेनल ड्रॉप 1 का उपयोग हृदय की जलन को सही करने में, आंतों की गैस को सही करने में, सूजन को सही करने में, भूख ना लगने में, पाचन समस्याओं को सही करने में, लीवर फंक्शन को बेहतर बनाने में, फेफड़ों को स्वस्थ रखने के साथ-साथ आयुर फेनल ड्रॉप 1 श्वसन प्रणाली को भी स्वस्थ बनाने में बहुत अच्छा काम करता है।

न्यूट्रिशन फैक्ट्स NUTRITION FACTS

SERVING SIZE 1 ML

AMOUNT PER SERVING	APPROXIMATELY
TOTAL CALORIES	3.0 KCAL.
PROTEIN	1.5 MG.
TOTAL CARBOHYDRATES	5.0 MG.
TOTAL FAT	1.4 MG.
SODIUM	8.0 MG.
CALCIUM	10 MG.
IRON	1.5 MG.
SUGAR	0 GM.
VITAMIN A	1 IU.
VITAMIN C	2.0 MG.



पाचन के लिए सौंफ के फायदे

- आंखों की रोशनी के लिए
- वजन कम करने के लिए
- अस्थमा और अन्य श्वास संबंधी समस्याओं को ठीक करने के लिए
- सांसों की दुर्गंध को दूर करने के लिए
- कॉलेस्ट्रॉल को कम करने के लिए
- कफ से छुटकारा दिलाने के लिए
- मस्तिष्क को स्वस्थ रखने के लिए
- कब्ज से छुटकारा दिलाने के लिए
- महिलाओं में स्तनपान की समस्या को सही करने के लिए
- मासिक धर्म की समस्याओं से राहत दिलाने के लिए
- रक्तचाप को नियंत्रित करने के लिए
- अच्छी नींद के लिए
- हर्निया के समस्या को सही करने के लिए
- शुगर (डायबिटीज) से बचाव के लिए
- लीवर को स्वस्थ रखने के लिए
- मॉर्निंग सिकनेस (जी मचलना, उल्टी आना, चक्कर आना) को सही करने के लिए
- त्वचा को निखारने के लिए

हमारे आयुर फेनल ड्रॉप 1 में

टोटल कैलोरी मानव शरीर में ऊर्जा की एक मात्रा है। जो शारीरिक क्रियाकलापों (एक्टिविटी) को करने के लिए आवश्यक होती है। कैलोरी की यह मात्रा आहार के माध्यम से प्राप्त की जाती है। कम कैलोरी युक्त आहार का नियमित सेवन करना चाहिए। तथा उस कैलोरी को पचाने के लिए व्यायाम और परिश्रम भी करना चाहिए।

प्रोटीन से मांसपेशियों व इम्यून सिस्टम को मजबूती मिलती है। प्रोटीन हृदय व फेफड़े के ऊतकों को भी स्वस्थ रखता है। प्रोटीन शरीर के सुचारु रूप से कार्य करने के लिए जरूरी है। शरीर से टॉक्सिन को बाहर निकालता है।

टोटल कार्बोहाईड्रेट वह पदार्थ होते हैं। जिनमें कार्बन, हाइड्रोजन और ऑक्सीजन होती है। इनमें हाइड्रोजन और ऑक्सीजन उसी अनुपात में होती है। जैसे कि पानी में होती है। शरीर को चुस्त और ऊर्जावान रखते हैं। खाने के पाचन में बहुत मदद करता है। यदि सही तरह से और सही मात्रा में सेवन किया जाए तो शरीर से मोटापा भी कम करता है।

टोटल फैट हमारे शरीर के कार्य करने और बीमारी को रोकने में बहुत मदद करती है। तथा हमारे शरीर को फैट की थोड़ी मात्रा में आवश्यकता होती है। फैट (वसा) वह आवश्यक पदार्थ है। जो मानव शरीर को आकार प्रदान करने, त्वचा को स्वस्थ रखने, आवश्यक विटामिन का अवशोषण करने, प्रतिरक्षा प्रणाली में सुधार करने और विभिन्न प्रकार के स्वास्थ्य लाभ प्रदान करने का कार्य करता है। अतः शरीर के लिए एक निश्चित मात्रा में फैट (वसा) की आवश्यकता होती है। हमारे शरीर में खनिज लवणों की आवश्यकता बहुत अधिक होती है।

सोडियम की गिनती भी प्रमुख खनिज लवणों में की जाती है। दैनिक आहार में शामिल सभी खाद्य पदार्थों में सोडियम उपस्थित रहता है। साधारण नमक ही सोडियम होता है। दैनिक ग्रहण किए जाने वाले खाद्य पदार्थों जैसे-दाल, सब्जी, रोटी, चावल, रायता आदि में स्वाद के लिए नमक को डाला जाता है। लेकिन स्वाद के साथ-साथ यह शरीर में सोडियम की आवश्यकता को भी पूरा करता है। इसका प्रमुख कार्य शरीर में अम्ल और क्षार के संतुलन को बनाए रखने का होता है।

कैल्शियम एक रासायनिक तत्व है। जो हम इंसानों के साथ अन्य जीवों के जीवन के लिए भी जरूरी है। यह शरीर में उपस्थित सबसे ज्यादा मात्रा में उपलब्ध मिनरल है। जो बेहतरीन स्वास्थ्य के लिए महत्वपूर्ण है। हमें मस्तिष्क और शरीर के अन्य हिस्सों के बीच मजबूत हड्डियों के निर्माण के लिए कैल्शियम की एक निश्चित मात्रा का सेवन करने की आवश्यकता होती है। कैल्शियम कई खाद्य पदार्थों में प्राकृतिक पाया जाता है।

हमारे आयुर फेनल ड्रॉप 1 में

आयरन हमारे शरीर में पाए जाने वाले कई महत्वपूर्ण खनिजों में से एक है। दरअसल आयरन ही वो खनिज है। जिसकी सहायता से रक्त में मौजूद हिमोग्लोबिन ऑक्सीजन को हमारे शरीर में संचारित करता है। आप कह सकते हैं। कि यह हमारे शरीर के रक्त में हीमोग्लोबिन का सबसे महत्वपूर्ण घटक है। हमारे सम्पूर्ण शरीर में यह ऑक्सीजन पहुंचाने का काम करता है। आयरन एक ऐसा खनिज पदार्थ है। जिसकी हमारे शरीर में पर्याप्त मात्रा में मौजूदगी हमारे शरीर को उर्जा से भर देती है। आयरन के मौजूदगी का हमारे स्वास्थ्य पर सीधा प्रभाव पड़ता है। यानी हमारे सम्पूर्ण स्वास्थ्य के लिए आयरन एक महत्वपूर्ण घटक है। आयरन की कमी को पूरा करने के लिए हमारे पास कई स्रोत हैं। कई ऐसे फल और सब्जियाँ हैं। जिनकी सहायता से हम आयरन की कमी को पूरा कर सकते हैं। जैसे कि हरी पत्तेदार सब्जियाँ, मेथी और सरसों का साग, आटा, हरी बीन्स, पालक, ब्रोकली, शलजम, शकरकंद, बादाम, किशमिश, चुकंदर, काबुली चना, राजमा, सोयाबीन, खजूर, तरबूज, सेब, अंगूर, अनार, बादाम, सूखे मेवे, मसूर की दाल, अंडा, मछली आदि। इसके अलावा अंकुरित दाल का सेवन हमारे शरीर में खून की मात्रा बढ़ाने के लिए बहुत ही अच्छा विकल्प माना जाता है। हमारे प्राण वायु ऑक्सीजन को पूरे शरीर में पहुंचाने का काम आयरन का ही है। इसलिए आयरन के कारण ही हम ऑक्सीजन का उपयोग कर पाते हैं।

शुगर अगर तुरंत ऊर्जा की जरूरत हो तो शुगर से बेहतर कुछ भी नहीं। खून में पहुंचकर चीनी ग्लूकोज में बदल जाती है। जो चीनी का सरलतम रूप होता है। इसके बाद कोशिकाएं ग्लूकोज को अवशोषित कर लेती हैं। और ऊर्जा का संचार करती हैं। आपको जानकर हैरानी होगी। कि कई खिलाड़ी तुरंत थकान मिटाने के लिए अपने साथ शुगर क्यूब्स रखते हैं।

विटामिन-ए एक घुलनशील विटामिन है। जो एक शक्तिशाली एंटी-ऑक्सीडेंट होता है। स्वस्थ दृष्टि, स्वस्थ त्वचा को बनाए रखने में विटामिन-ए महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। विटामिन-ए की कमी से अंधापन हो जाता है। विटामिन-ए की कमी ज्यादातर शराबियों में पाई जाती है। क्योंकि अधिक विषाक्तता से विटामिन-ए का स्तर कम बनता है। विटामिन-ए एक एंटी-ऑक्सिडेंट होने के कारण मजबूत हड्डियों के निर्माण, जीन विनियमन, स्वस्थ त्वचा को बनाए रखने और इम्यून सिस्टम को बनाए रखने के लिए जिम्मेदार हैं। विटामिन-ए के कुछ बेहतरीन स्रोत हैं। जैसे अंडे, दूध, गाजर, पालक और अन्य हरी पत्तेदार सब्जियाँ।

विटामिन-सी स्वास्थ्य के लिए अन्य विटामिन्स की तुलना में कई गुना ज्यादा जरूरी है। विटामिन-सी हमारी सेहत के साथ-साथ सौंदर्य व त्वचा के लिए भी महत्वपूर्ण है। विटामिन-सी एक बेहतरीन एंटी-ऑक्सीडेंट है। जो कैंसर और अन्य बीमारियां पैदा करने वाली फ्री रेडिकल्स (अणु या परमाणु) से बचाता है। इसके अलावा यह रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाकर कैंसर से लड़ने में भी बहुत मददगार साबित होता है। विटामिन-सी का एक बेहतरीन लाभ यह है कि इसमें मौजूद एंटी-ऑक्सीडेंट तत्व हृदय के लिए बेहद फायदेमंद होते हैं। और हृदय की समस्याओं से बचाने में कारगर हैं।

उपयोग के लिए दिशानिर्देश (DIRECTIONS FOR USE):-

- आयुर फेनल ड्रॉप 1 के सेवन से पहले बोतल को अच्छी तरह हिलाएं।
- आयुर फेनल ड्रॉप 1 को रोजाना सुबह, दोपहर और शाम को 2 से 3 बूंद खाना खाने के 30 से 40 मिनट बाद लें। अगर इसके साथ आयुर एनर्जी केयर 1 का सेवन किया तो बहुत अच्छा रहता है।
- सूरज की सीधी रोशनी से दूर रखें। और बोतल को अच्छी तरह से बंद करें।
- बोतल को खोलने के बाद 1 महीने के अंदर इस्तेमाल करें।
- बेहतर परिणाम के लिए आयुर फेनल ड्रॉप 1 का कम से कम 3 महीने लगातार सेवन जरूर करें।
- बोतल के सही होने पर ही खरीदें।

KIZAARA
A DIFFERENT THINKING

आयुर डरमो केयर 1 ड्राई स्किन को सही करने में, त्वचा की देखभाल करने में, त्वचा को पोषण देने और उसे स्वस्थ बनाने में, पैरों की त्वचा को स्वस्थ रखने में, फटी एड़ियों को ठीक करने में, घाव को ठीक करने करने के साथ-साथ **आयुर डरमो केयर 1** फटी एड़ियों की वजह से असहनीय दर्द को ठीक करने में भी बहुत अच्छा काम करता है।

इंग्रेडिएंट्स (INGREDIENTS)

ALOEVERA RAS (ALOE BARBEDENSIS) LEAF	2.5 ML.
DARUHALDI (BERBERIS) FRUIT	100 ML.
HALDI (CURCUMA LONGA) RHYZOME	1 GM.
MANJISTHA (RUBIA CORDIFOLIA) STEM	1 GM.
MAJUPHAL (QUERCUS INFECTORIA) FRUIT	1 GM.
PUDINA SAT (MENTHA SPECTA) W.P.	1 GM.



हमारे आयुर डरमो केयर 1 में

एलोवेरा रस का उपयोग भारत में प्राचीन काल से ही औषधि के रूप में हो रहा है। भारत में इसे ग्वारपाठा या घृतकुमारी के नाम से जाना जाता है। एलोवेरा के उपयोग से फटी एड़िया बहुत जल्दी ठीक हो जाती है।

दारुहल्दी एक बहुत ही उत्तम जड़ी-बूटी है और दारुहल्दी का प्रयोग बहुत सालों से आयुर्वेद चिकित्सा के लिए किया जा रहा है। दारुहल्दी से रसांजन बनाया जाता है। दारुहल्दी फटी एड़ियों के लिए बहुत ही लाभकारी औषधि है।

हल्दी में एंटी-बैक्टीरियल और एंटी-ऑक्सीडेंट के गुण पाए जाते हैं। हल्दी कई सारे चीजों के लिए बहुत फायदेमंद साबित होती है। हल्दी को फटी एड़ियों के लिए काफी लाभदायक माना जाता है। हल्दी के नियमित उपयोग से फटी एड़ियों से राहत मिलती है।

मंजिष्ठा एक ऐसा जड़ी-बूटी है। जिसका आयुर्वेद में तरह-तरह की बीमारियों के उपचार के लिए औषधि के रूप में प्रयोग किया जाता है। इसे एक रामबाण दवा माना जाता है। मंजिष्ठा के नियमित इस्तेमाल से फटी एड़िया जल्दी ठीक हो जाती है।

माजूफल को आयुर्वेद में बहुत महत्वपूर्ण औषधि माना गया है। इसके फल, पत्ते और छालों से बनाए गए पाउडर को कई समस्याओं से राहत पाने के लिए इस्तेमाल किया जाता है। माजूफल में एंटी-ऑक्सीडेंट अधिक मात्रा में पाए जाते हैं। माजूफल का उपयोग घाव के लिए, फटी एड़ियों के लिए, त्वचा के लिए बहुत ही लाभकारी होता है।

हमारे आयुर डरमो केयर 1 में

पुदीना सत (मेंथा पिपेरिटा) में औषधीय गुण पाए जाते हैं। पुदीना में कैल्शियम, फास्फोरस, विटामिन-सी, विटामिन-डी, विटामिन-ई और विटामिन-बी प्रचुर मात्रा में पाया जाता है। पुदीना केवल स्वास्थ्य के लिए ही नहीं बल्कि त्वचा की देखभाल करने की दृष्टि से भी बहुत लाभदायक है। पैरों की त्वचा को स्वस्थ रखने का पुदीना एक प्राकृतिक नुस्खा है। यह त्वचा को पोषण देता है और उसे स्वस्थ बनाए रखता है। फटी एड़ियों के लिए पुदीने का उपयोग बहुत ही लाभकारी होता है।

उपयोग के लिए दिशानिर्देश (DIRECTIONS FOR USE):-

- **आयुर डरमो केयर 1** को लगाने से पहले फटी एड़ियों को गर्म पानी से साफ़ कर लें। और एड़ियों को अच्छी तरह से सूखा कर **आयुर डरमो केयर 1** सुबह-शाम लगाएं।
- सूरज की सीधी रोशनी से दूर रखें। और डिब्बी को अच्छी तरह से बंद करें।
- बेहतर परिणाम के लिए **आयुर डरमो केयर 1** का कम से कम 3 महीने लगातार उपयोग जरूर करें।
- डिब्बी के सही होने पर ही खरीदें।

KIZAARA
A DIFFERENT THINKING

आयुर स्किन केयर 1 त्वचा में निखार लाने के लिए, त्वचा जवां और खूबसूरत बनाने में, त्वचा कोमल तथा चमकदार बनाने में, त्वचा की ड्राईनेस को दूर करने में, त्वचा पर बैक्टीरिया से होने वाले संक्रमण से बचाने में, चेहरे पर चमक (ग्लो) लाने में, त्वचा की कोशिकाओं को पोषण देने के साथ-साथ **आयुर स्किन केयर 1** त्वचा की नमी को बरकरार रखने में भी बहुत अच्छा काम करता है।

इंग्रेडिएंट्स (INGREDIENTS)

ALOEVERA RAS (ALOEVERA BARBADENSIS) LEAF	30 ML.
CUCUMBER RAS (CUCUMIS SATIVUS) FRUIT	30 ML.
TULSI (OCIMUM SANCTUM) PANCHANG	5.0 ML.
HALDI (CURCUMA LONGA) RHIZOME	30 MG.



हमारे आयुर स्किन केयर 1 में

एलोवेरा रस को आयुर्वेद में संजीवनी कहा जाता है। एलोवेरा रस में विटामिन-ए, विटामिन-सी और विटामिन-ई भरपूर मात्रा में पाया जाता है। एलोवेरा रस में एंटी-एजिंग और एंटी-ऑक्सीडेंट गुण होते हैं। एलोवेरा के सेवन से आपकी त्वचा जवां और खूबसूरत बनी रहती है। एलोवेरा के सेवन से त्वचा में निखार आता है। एलोवेरा को एक प्राकृतिक मॉइस्चराइजर माना जाता है। यह त्वचा की मृत कोशिकाओं को मुलायम बनाता है तथा उन्हें हटाने में मदद करता है, जिससे त्वचा कोमल तथा चमकदार बनती है।

कुकुम्बर रस में मुख्य रूप से पानी ही होता है। यह ड्राई स्किन के लिए बहुत फायदेमंद होता है। यह त्वचा को प्राकृतिक रूप से नमी देने का काम करता है। इसके इस्तेमाल से त्वचा में निखार आता है। कुकुम्बर रस में पर्याप्त मात्रा में विटामिन-ए, मैग्नीशियम व पोटेशियम जैसे पोषक तत्व पाए जाते हैं। कुकुम्बर त्वचा के हर प्रकार के संक्रमण को दूर करने में कारगर होता है। कुकुम्बर त्वचा की कोशिकाओं को पोषण देने का काम करता है।

तुलसी में मौजूद औषधीय गुणों की वजह से उसका इस्तेमाल सिर्फ सर्दी-जुकाम या इन्फेक्शन को दूर करने में ही इस्तेमाल नहीं किया जाता, बल्कि त्वचा के लिए भी यह फायदेमंद है। तुलसी में एंटी-ऑक्सिडेंट्स गुण होते हैं जो त्वचा की गहरी सतह में मौजूद विषैले तत्वों को बाहर निकालने में मदद करते हैं। इससे खून में मौजूद गंदगी साफ हो जाती है और चेहरे पर चमक (ग्लो) आता है। तुलसी ड्राईनेस को भी दूर करती है और त्वचा की नमी को बरकरार रखती है।

हल्दी औषधीय गुणों से भरपूर सिर्फ हमारी सेहत के लिए ही नहीं बल्कि त्वचा के लिए भी काफी अच्छी होती है। हल्दी में मौजूद कर्कुमिन में एंटी-इंफ्लेमट्री, एंटी-ऑक्सीडेंट, एंटी-सेप्टिक और एंटी-बैक्टीरियल गुण होते हैं। जो बैक्टीरिया से होने वाले संक्रमण से बचाव करने में बहुत लाभकारी होते हैं। हल्दी में प्रोटीन, विटामिन-ए, कार्बोहाइड्रेट और मिनरल्स प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं।

उपयोग के लिए दिशानिर्देश (DIRECTIONS FOR USE):-

- चेहरे और गर्दन को साफ़ पानी से धोकर **आयुर स्किन केयर 1** को आवश्यकतानुसार लगाएं।
- सूरज की सीधी रोशनी से दूर रखें। और ट्यूब को अच्छी तरह से बंद करें।
- ट्यूब को खोलने के बाद 1 महीने के अंदर इस्तेमाल करें।
- बेहतर परिणाम के लिए **आयुर स्किन केयर 1** का कम से कम 3 महीने लगातार उपयोग जरूर करें।
- ट्यूब के सही होने पर ही खरीदें।

KIZARA
A DIFFERENT THINKING

आयुर फेस वॉश 1 चेहरे पर निखार लाने में, चेहरे को सुंदर बनाने में, चेहरे की त्वचा के डेड सेल्स को हटाने में, चेहरे पर त्वचा की ऊपरी सतह पर मौजूद गंदगी को साफ करने में, चेहरे की त्वचा को पोषण देने में, मुँहासे को दूर करने में, चेहरे को जीवाणु संक्रमण से बचाने में, चेहरे पर त्वचा की सूजन और सूखेपन को सही करने में, चेहरे को सुंदर बनाने में, चेहरे की त्वचा पर काले रंग के धब्बों (ब्लैक हेड्स) को दूर करने में, चेहरे की झुर्रियों को कम करने के साथ-साथ **आयुर फेस वॉश 1** चेहरे की त्वचा संबंधित सभी समस्याओं को दूर करने में भी बहुत अच्छा काम करता है।

इंग्रेडिएंट्स (INGREDIENTS)

ALOEVERA RAS (ALOEVERA BARBADENSIS) LEAF	90 ML.
LEMON (CITRUS LIMON) FRUIT	60 MG.
NEEM (AZADIRACHTA INDICA) LEAF	60 MG.
HONEY (APIDAE) HONEY	40 MG.
HARIDRA (CURCUMA LONGA) RHIZOME	15 MG.
PUDINA SAT (MENTHA SPICATA) W.P.	15 MG.
TULSI (OCIMUM SANCTUM) PANCHANG	15 MG.



हमारे फेस वॉश 1 में

एलोवेरा रस में एंटी-ऑक्सीडेंट्स की भरपूर मात्रा होती है। यह चेहरे की बहुत अच्छी सफाई करने वाला होता है। एलोवेरा त्वचा की ऊपरी सतह पर मौजूद गंदगी और डेड सेल्स को साफ करने और त्वचा को पोषण देने का काम करता है, जिससे चेहरे पर निखार आ जाता है। एलोवेरा एक बहुत अच्छा मॉइश्चराइजर है। किसी भी टाइप स्किन के लोग इसका इस्तेमाल कर सकते हैं। एलोवेरा में विटामिन-ए, विटामिन-बी1, विटामिन-बी2, विटामिन-बी3, विटामिन-बी6, विटामिन-बी12, विटामिन-सी, विटामिन-ई और फोलिक एसिड जैसे पोषक तत्व पाए जाते हैं। एलोवेरा के ऐसे ही अनेक गुणों के कारण इसे ब्यूटी प्रोडक्ट्स में भी इस्तेमाल किया जाता है।

नींबू (लेमन) का उपयोग पुराने समय से ही आयुर्वेदिक उपचार के लिए किया जाता रहा है। प्राकृतिक एंटी-सेप्टिक गुण होने के कारण नींबू त्वचा संबंधित सभी समस्याओं को दूर करता है। नींबू में प्राकृतिक ब्लीचिंग गुण पाया जाता है। प्राकृतिक लाइटनिंग एजेंट होने के कारण यह त्वचा के लिए काफी फायदेमंद होता है। नींबू में मौजूद विटामिन-सी त्वचा को डार्क पैच (हाइपर पिगमेंटेशन) और दाग, धब्बे से बचाने में मदद करता है, जिसकी वजह से त्वचा में निखार आता है।

नीम कई सालों से एक प्राकृतिक औषधि की तरह उपयोग किया जाता रहा है। स्वास्थ्य के साथ-साथ नीम के फायदे त्वचा के लिए भी कई सारे हैं। नीम त्वचा की देखभाल (स्किन केयर) करने वाला सबसे अच्छा घटक है जो अपने जीवाणुरोधी गुणों के लिए जाना जाता है। यह सामान्य त्वचा स्वास्थ्य में सुधार करता और मुँहासे जैसे जीवाणु संक्रमण से मुकाबला करता है। नीम में जीवाणुरोधी गुण पाए जाते हैं। यह अतिरिक्त तेल को हटा देता है और आपकी त्वचा को रूखा बनाए बिना गहराई से साफ करता है।

हमारे फेस वॉश 1 में

शहद (हनी) का स्वाद मीठा होता है। और यह अर्ध तरल पदार्थ होता है। दुनियाभर में शहद स्वास्थ्य के लिए फायदेमंद माना जाता है। इसमें अनेक औषधीय गुण मौजूद होते हैं। औषधीय गुणों से युक्त होने के कारण शहद को आयुर्वेद में महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। शहद के रोगाणुरोधी और फंगसरोधी गुणों के कारण यह स्वस्थ और चमकदार त्वचा पाने के लिए सर्वश्रेष्ठ घटक माना जाता है। शहद एक प्राकृतिक एंटीसेप्टिक होता है इसलिए यह त्वचा को संक्रमण से बचाता है और मुँहासों को कम करता है। शहद त्वचा की सूजन और सूखेपन को भी दूर करता है।

हरिद्रा एक औषधीय गुणों से भरपूर एक पौधा होता है। हरिद्रा के एंटी-बैक्टीरियल गुणों के कारण त्वचा का संक्रमण दूर होता है और रंग में निखार आता है। जिससे यह फेस वॉश में एक उत्कृष्ट इंग्रेडिएंट बनाता है। हरिद्रा में एंटी-बैक्टीरियल, एंटी-इंफ्लामेन्ट्री, एंटी-ट्यूमर, एंटी-एलर्जी, एंटी-सेप्टिक होने के साथ-साथ त्वचा रोगों में भी बहुत अच्छा काम करती है।

पुदीना सत लगभग हर भारतीय रसोई में आपको बहुत आसानी से मिल जाता है। पुदीना न केवल खाने-पीने का स्वाद बढ़ाने के काम आता है बल्कि इसमें कई औषधीय गुण भी पाए जाते हैं। जो सेहत और त्वचा दोनों को फायदा पहुंचाने का काम करते हैं। जिन लोगों की त्वचा पर दाग-धब्बे और मुँहासे हैं। उनके लिए पुदीने का इस्तेमाल करना बहुत फायदेमंद होता है। इसके एंटी-बैक्टीरियल गुण से त्वचा की बेहतर तरीके से सफाई भी हो जाती है और त्वचा से जुड़ी कई तरह की समस्याएं खुद ब खुद दूर हो जाती हैं। पुदीना न केवल त्वचा की सफाई करने के काम आता है बल्कि इसके नियमित इस्तेमाल से त्वचा की रंगत भी बढ़ती है।

तुलसी के फायदे चेहरे के लिए भी होते हैं लेकिन अधिकांश लोग केवल तुलसी के स्वास्थ्य लाभ ही जानते हैं। तुलसी का उपयोग प्राचीन समय से ही जड़ी-बूटी और औषधि के रूप में किया जा रहा है। तुलसी के सौंदर्य और स्वास्थ्य लाभ दुनिया भर में बहुत ही लोकप्रिय हैं। तुलसी का उपयोग चेहरे को सुंदर बनाने, मुँहासों का उपचार करने, त्वचा पर काले रंग के धब्बों (ब्लैक हेड्स) को दूर करने, झुर्रियों को कम करने, चेहरे को गोरा बनाने के लिए बहुत अच्छा काम करती है।

उपयोग के लिए दिशानिर्देश (DIRECTIONS FOR USE):-

- चेहरे को **आयुर फेस वॉश 1** से सुबह-शाम या आवश्यकतानुसार धोएं।
- सूरज की सीधी रोशनी से दूर रखें। और ट्यूब को अच्छी तरह से बंद करें।
- ट्यूब को खोलने के बाद 1 महीने के अंदर इस्तेमाल करें।
- बेहतर परिणाम के लिए **आयुर फेस वॉश 1** का कम से कम 3 महीने लगातार उपयोग जरूर करें।
- ट्यूब के सही होने पर ही खरीदें।

आयुर डेंटल केयर 1 ढीले दांतों को मजबूत बनाने में, मसूड़ों से बह रहे खून को रोकने में, कीटाणुओं से लड़ने में, दांत दर्द को ठीक करने में, मसूड़ों के संक्रमण को रोकने में, रक्तस्राव से राहत दिलाने में, कैविटी वाले बैक्टीरिया से बचाने में, दाँतों से खून आने को ठीक करने में, पीव (मवाद) निकलने को ठीक करने में, मुंह के छालों को ठीक करने में, होंठो, जीभ या मसूड़ों इत्यादि पर लाल धब्बों के हो जाने को सही करने में, मुंह से दुर्गन्ध आने को सही करने के साथ-साथ **आयुर डेंटल केयर 1** पायरिया को भी ठीक करने में बहुत अच्छा काम करता है।

इंग्रेडिएंट्स (INGREDIENTS)

BABOOL CHHAL (ACACIA ARABICA) BARK	5.0 GM.
MULETHI (GLYCYRRHIZA GLABRA) ROOTS	5.0 GM.
LAWANG (SYZYGIUM AROMATICUM) BUD	3.0 GM.
VAJRADANTI (BARLERIA PRIONITIS) RHIZOME	2.5 GM.
MAJUPHAL (QUERCUS INFECTORIA) FRUIT	2.5 GM.
AKARKARA (ANACYCLUS PYRETHRUM) ROOT	2.5 GM.
NEEM (AZADIRACHTA INDICA) LEAF	2.0 GM.
PIPPALI (PIPER LONGUM) FRUIT	1.5 GM.
PUDINA SAT (MENTHA SPICATA) W.P.	1.5 GM.
KAPOOR (CINNAMOMUM CAMPHORA) W.R.	1.5 GM.
HALDI (CURCUMA LONGA) RHIZOME	1.5 GM.
TOMAR (ZANTHOXYLUM ALATUM) SEED	1.5 GM.
PILU OR MISWAK (SALVADORA PERSICA) W.P	1.5 GM.
VAIVIDANG (EMBELIA RIBES) FRUIT	1.5 GM.
BAKUL (MIMUSOPS ELENGI) BARK	1.5 GM.



हमारे आयुर डेंटल केयर 1 में

बबूल छाल आयुर्वेद के अनुसार, एक बहुत ही उत्तम औषधि है और औषधीय गुणों से भरपूर है। बबूल एक ऐसा पेड़ है, जिसकी जड़ से लेकर टहनियां सेहत के लिए औषधि के समान कार्य करती है। बबूल दांतों के लिए फायदेमंद है। बबूल के पत्ते और छाल संक्रमण को नियंत्रित करते हैं। बबूल पोषक तत्वों से भरपूर है। इसमें विटामिन, आयरन, मैग्नीज, जस्ता, प्रोटीन और वसा प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं। बबूल छाल के रोजाना सेवन से ढीले दांतों को मजबूती और मसूड़ों से बह रहे खून को रोकने में मदद मिलती है। तथा बबूल छाल शरीर के किसी अंग में जलन, कमर दर्द, पेट की बीमारी, पेट दर्द से आराम दिलाने, मुंह के छाले की परेशानी को सही करने में और श्वसन-तंत्र की बीमारी में **बबूल छाल** बहुत फायदेमंद होता है।

हमारे आयुर डेंटल केयर 1 में

मुलेठी को आयुर्वेद में बहुत गुणकारी माना गया है। मुलेठी की जड़ को उखाड़ने के बाद दो वर्ष तक उसमें औषधीय गुण रहते हैं। मुलेठी जीवाणुरोधी और रोगाणुरोधी गुण के कारण कैविटी वाले बैक्टीरिया की वृद्धि को रोकती है, दांतों पर जमी पीली या मैली परत (डेंटल प्लाक) को कम करती है। दांतों के बेहतर स्वास्थ्य के लिए मुलेठी के जड़ का प्रयोग लाभकारी होता है। मुलेठी दांतों, मसूड़ों और गले के लिए बहुत फायदेमंद होती है। तथा मुलेठी बढ़े हुए कफ से गला, नाक, छाती में जलन हो जाने जैसी अनुभूति होने में, पेट दर्द, पेट के सूजन में, घाव के उपचार में, गले के रोगों के उपचार में, सांस संबंधी बीमारियों में, पाचन रोगों में और यूरिन इन्फेक्शन की समस्या को भी जड़ से खत्म करने और आंतों में कीड़े के रोग के लिए **मुलेठी** बहुत फायदेमंद होती है।

लौंग एक गुणकारी औषधि है, जिसका इस्तेमाल कई तरह की बीमारियों के लिए किया जाता है। आयुर्वेद में लौंग के पौधे के हर भाग का इस्तेमाल बताया गया है। दांतों में छुपे कीटाणुओं से लड़ने, दांत दर्द, माउथ अल्सर तथा दांतों में छुपे कीटाणुओं को दूर करने में लौंग बहुत लाभकारी औषधि है। लौंग पोटैशियम, सोडियम, फास्फोरस, आयरन, मैग्नीज, फाइबर, आयोडिन, विटामिन-के और विटामिन-सी, ओमेगा-3 फैटी एसिड्स, कैल्शियम और मैग्नीशियम का एक अच्छा स्रोत है। तथा **लौंग** पेट की गैस, अत्यधिक प्यास लगने की समस्या, कफ-पित्त दोष, पेट के कीड़ों को खत्म करने, मूत्र मार्ग को सही रखने और मूत्र मार्ग के रास्ते हानिकारक चीजों को बाहर निकालने और दांतों की बीमारियों में लौंग बहुत फायदेमंद होती है।

वज्रदंती दांतों की सभी प्रकार की समस्याओं से बचाता है और संवेदनशील दांतों के लिए बहुत सहायक है। वज्रदंती एक ऐसी अद्भुत जड़ीबूटी है जो दांतों को बुढ़ापे तक वज्र के समान मजबूत और टिका कर रखती है। तथा वज्रदंती बुखार, श्वास संबंधी रोग, दांत दर्द, घावों, जोड़ों के दर्द में वज्रदंती बहुत फायदेमंद होती है।

माजूफल जिसका वैज्ञानिक नाम मंजाकनी है। जिसे गैल ट्री, गैल ओक, मस्की आदि नामों से भी जाना जाता है। आयुर्वेदिक दवा में यह बहुत ही महत्वपूर्ण औषधीय पौधा है। माजूफल में एंटी-मिक्राबियल और एंटी-इंफ्लामेट्री तत्व पाए जाते हैं। माजूफल के सेवन से दांत मजबूत होते हैं। माजूफल के सेवन से मसूड़ों के संक्रमण और रक्तस्राव में राहत मिलती है। माजूफल दांत दर्द और मसूड़ों की सूजन को भी कम करता है। तथा **माजूफल** दांतों के दर्द में, मुँह के छाले में, पेट के सभी समस्याओं को दूर करने में, मसूड़ों के संक्रमण से राहत दिलाने में बहुत फायदेमंद होता है।

अकरकरा के औषधीय और आयुर्वेदिक गुण अनगिनत हैं। आयुर्वेद में अकरकरा का प्रयोग लगभग 400 वर्षों से किया जा रहा है। आयुर्वेद में अकरकरा का उपयोग दवा के रूप में किया जाता है। अकरकरा को दांत दर्द, मुँह के बदबू, दांत संबंधी समस्या, हिचकी जैसे बीमारियों के लिए जादू जैसा काम करता है। तथा **अकरकरा** दांत दर्द, मुँह के बदबू, दांत संबंधी समस्या, कंठ के स्वर को मधुर बनाने में, सांस संबंधी समस्याओं में, पेट दर्द सही करने में, बदहजमी दूर करने में बहुत फायदेमंद है।

हमारे आयुर डेंटल केयर 1 में

नीम में कई ऐसे औषधीय गुण होते हैं। जिससे न सिर्फ हमारी सेहत अच्छी रहती है बल्कि मुंह की देखभाल के लिए नीम के पत्तों, टहनियों का भी उपयोग किया जाता है। नीम के गुणों के कारण इसे धरती का कल्प वृक्ष भी कहा जाता है। आयुर्वेद के अनुसार नीम से मुंह के समस्त रोगों का उपचार किया जाता है। जैसे:- दाँतों से खून आना, पीव (मवाद) निकलना, मुंह में छाले पड़ना, मुंह से दुर्गन्ध आना, जी का मिचलाना आदि रोग दूर होते हैं। नीम मुंह में बैक्टीरिया की संख्या को भी कम करता है जो दाँतों की पीली या मैली परत यानी डेंटल प्लाक की समस्या को भी दूर करता है। तथा **नीम** दाँतों के लिए, पेट के कीड़ों को खत्म करने में, एसिडिटी में, पेट दर्द में, पाचन संबंधी समस्याओं में बहुत फायदेमंद होती है।

पिपली एक औषधीय पौधा है। पिपली या छोटी पीपल या लोंग पेपर अनेक औषधीय गुणों से संपन्न होने के कारण आयुर्वेद की एक प्रमुख दवा है। इसके अलावा इसे मसाले के रूप में भी इस्तेमाल करते हैं। पिपली के सेवन से दांत मजबूत होते हैं, और दाँतों में दर्द की समस्या समाप्त हो जाती है। तथा **पिपली** दाँतों के रोग के इलाज के लिए, दाँतों का दर्द ठीक करने के लिए, गला बैठने (आवाज के बैठने) पर, सांसों से संबंधित बीमारी में, गले की खराश, पाचनत्र विकार में, कब्ज की समस्या में, जीवाणु संक्रमण से बचाने में बहुत फायदेमंद होती है।

पुदीना सत को संजीवनी बूटी कहा गया है। आयुर्वेद में सदियों से पुदीने का इस्तेमाल औषधि के रूप में हो रहा है। पुदीने के सेवन से दाँतों का दर्द, पायरिया और मसूड़ों से खून निकलने की परेशानी दूर हो जाती है। तथा **पुदीना सत** पेट की गैस को दूर करने में, मुंह के छाले की परेशानी को दूर करने में, दाँतों के दर्द, अपच की समस्या में, शरीर के जलन में भी बहुत फायदेमंद होता है।

कपूर के कई चिकित्सीय लाभ हैं। इसी कारण आयुर्वेदिक उपचारों में भी इसका इस्तेमाल किया जाता है। कपूर में एंटी-फंगल और एंटी-बैक्टीरियल के गुण पाए जाते हैं। दांत दर्द में कपूर बहुत लाभकारी औषधि है। तथा **कपूर** दांत दर्द से आराम पाने के लिए, मुंह के छालों में लाभ, पेट दर्द या गैस व जलन होने पर बहुत फायदेमंद होता है।

हल्दी को आयुर्वेद में कैविटी दर्द से राहत प्रदान करने के लिए प्रयोग किया जाता है। इसमें मौजूद एंटी-बैक्टीरियल गुणों के साथ एंटी-इंफ्लेमेटरी गुण मसूड़ों को स्वस्थ रखने के साथ-साथ बैक्टीरियल संक्रमण के कारण दाँतों के गिरने की समस्या को भी रोकता है। आयुर्वेद में, हल्दी के लाभकारी गुणों के कारण इसे "**मसालों का राजा**" माना गया है। आप हल्दी से निश्चित रूप से अपने दाँतों को सफ़ेद कर सकते हैं और इतना ही नहीं हल्दी से मसूड़ों को भी स्वस्थ रख सकते हैं। तथा **हल्दी** पित्ताशय को उत्तेजित करने, पाचन सुधारने, रक्त में मौजूद विषैले तत्व बाहर निकालने, ब्लड सर्कुलेशन में, हार्ट संबंधी परेशानियों में, सर्दी, जुकाम या कफ में, शरीर की इम्युनिटी को बढ़ाने में, मसूड़ों के सभी प्रकार के रोगों को दूर करने, मुँह के छालों को ठीक करने में, पेट में गैस के लिए हल्दी बहुत फायदेमंद होती है।

हमारे आयुर डेंटल केयर 1 में

तोमर या तेजबल का पौधा दांतों और मुंह के रोगों के लिए बहुत उपयोगी माना जाता है। आयुर्वेदिक चिकित्सा में तोमर या तेजबल का इस्तेमाल दांत दर्द की दवा के रूप में किया जाता है। तेजबल को तुम्बरू, तुमरू आदि कई नामों से भी जाना जाता है। तथा **तोमर या तेजबल** दांत दर्द जल्दी ठीक करने में, बदहजमी में फायदा पहुँचाने में, पेट जलन को खत्म करने में, भोजन को पचाने में, मुख तथा वायुरोग को नष्ट करने में बहुत फायदेमंद होता है।

पीलू या मिस्वाक एक वृक्ष है। पीलू के सेवन से दांत तथा मसूड़े मजबूत होते हैं। मिस्वाक में एंटी-बैक्टीरियल गुण होते हैं जो दांतों को सड़ने और कैविटी से बचाते हैं। मिस्वाक की लकड़ी में नमक और खास क्रिस्टल का रेजिन पाया जाता है जो दांतों में चमक पैदा करता है। तथा **पीलू या मिस्वाक** दांत दर्द से आराम पाने के लिए, मुंह के छालों में लाभ के लिए, पेट दर्द या गैस व जलन होने पर, पेट के रोग में, अत्यधिक प्यास लगने की समस्या में भी बहुत फायदेमंद होता है।

बायबिडंग, विडंग या बिडंग एक औषधीय पेड़ होता है। जिसका उपयोग आयुर्वेदिक दवाओं में प्रधानता से किया जाता है। आयुर्वेद में बहुत सारे रोगों की चिकित्सा में यह उपयोगी माना जाता है। नियमित रूप से बायबिडंग का सेवन करने से दांतों की साफ सफाई, दांत में कृमि (कीड़े) होने एवं दंतशूल (दांतों का दर्द) होने पर लाभकारी होता है। तथा **बायबिडंग, विडंग या बिडंग** पेट के कीड़ों के लिए, पाचन ठीक करने में, मुंह के छालों और गले के विकारों के लिए, कब्ज और पेट दर्द में बहुत फायदेमंद, अपच को दूर करने में सहायक, दांतों के लिए लाभदायक, गले के लिए बहुत फायदेमंद होता है।

बकुल औषधीय गुणों से युक्त फल, फूल, छाल, पत्ते ही नहीं बल्कि उसके बीज भी सेहत के लिए बहुत लाभकारी है। बहुत कम लोग जानते हैं कि इसके पंचांग दांतों की मजबूती के लिए बेहद कारगर है। बकुल के सेवन से दांतों को बेहद मजबूती मिलती है और पायरिया जैसी बीमारी तक दूर हो जाती है। यह दांतों और मसूड़ों के लिए टॉनिक का काम करता है। तथा **बकुल** दांत संबंधी समस्याओं के इलाज में (दंतपीड़ा, दांत की मजबूती, दांत को साफ सुधरा रखने में, मुँह के छालों को ठीक करने में, मसूड़ों की सूजन), कब्ज के इलाज में बहुत फायदेमंद होता है।

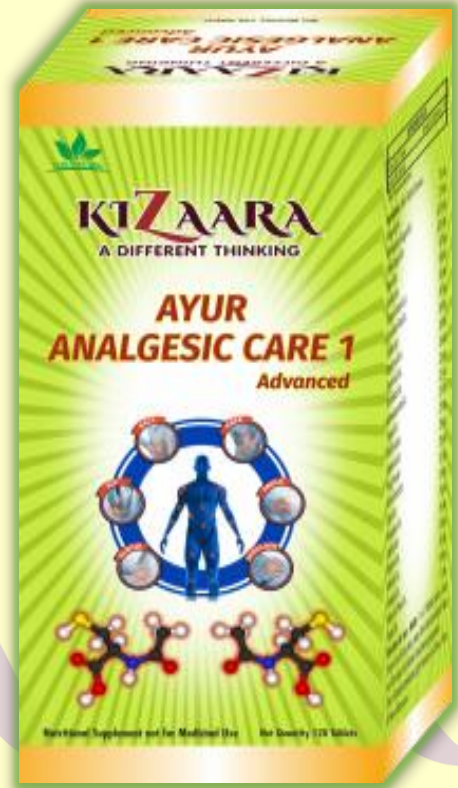
उपयोग के लिए दिशानिर्देश (DIRECTIONS FOR USE):-

- **आयुर डेंटल केयर 1** को अपने टूथब्रश पर लगाकर, दांतों पर धीरे-धीरे दिन में दो बार (यानी सुबह-शाम) ब्रश करें।
- सूरज की सीधी रोशनी से दूर रखें। और ट्यूब को अच्छी तरह से बंद करें।
- बेहतर परिणाम के लिए **आयुर डेंटल केयर 1** का कम से कम 3 महीने लगातार उपयोग जरूर करें।
- ट्यूब के सही होने पर ही खरीदें।

एडवांसड आयुर एनाल्जेसिक केयर 1 मलेरिया संबंधी बुखार के साथ शरीर के सभी अंगों में असहनीय दर्द को दूर करने में, जोड़ों, हड्डियों तथा कोमल ऊतकों के दर्द और जकड़न को ठीक करने में, क्रेपिटस (जोड़ों से आने वाली आवाज) को ठीक करने में, जमे हुए कंधों को सही करने में, कंधों के दर्द तथा बदन दर्द को ठीक करने में, कोहनी के दर्द व मोच के दर्द को ठीक करने में, गर्दन के दर्द (सर्वाइकल) को ठीक करने में, गठिया के दर्द (ऑस्टियो आर्थराइटिस) को ठीक करने में, गठिया के दर्द (रुमेटाइड आर्थराइटिस) को ठीक करने में, गठिया के दर्द (गाउट आर्थराइटिस) को ठीक करने में, हड्डियों के बीच अंतर के कारण बने दर्द को सही करने में, हड्डियों की संरचना को मजबूत करने में, घुटनों के दर्द और घुटनों की समस्या को ठीक करने में, मांशपेशियों के खिंचाव (क्रैंप) तथा मांशपेशियों के दर्द को ठीक करने में पसलियों के दर्द को सही करने में, पीठ के दर्द एवं रीढ़ की हड्डी के दर्द को ठीक करने में, पीठ के नीचे के हिस्से (स्पाइन सेगमेंट) के दर्द की समस्या को दूर करने में, कमर के दर्द और कमर से नीचे पैरों के दर्द (सायटिका) को सही करने में, नर्वस सिस्टम की न्युरैटिस (दर्द से तंत्रिका तंत्र की सूजन) को ठीक करने में, पिंडलियों के दर्द को सही करने में, सिर के दर्द तथा माइग्रेन के दर्द को ठीक करने में, दांतों की समस्या व दांत के दर्द को ठीक करने में, छाती के दर्द को ठीक करने में, मस्तिष्क को तेज करने तथा बंद नसों को खोलने में, पैर की अँगुलियों व अँगूठों की सूजन को सही करने में, पेट (कूल्हा) के दर्द को ठीक करने में, शरीर की सूजन एवं शरीर पर पड़े घाव और जख्म को भरने में, कान के खुजली को ठीक करने में, कान के संक्रमण और कान के तेज चमकन भरे दर्द को ठीक करने में, अंदरूनी चोट तथा घाव को ठीक करने में, घाव के बैक्टीरिया और कीड़ों को नष्ट करने में, चेहरे पर चकत्तेदार दाने, चुनचुनाहट व सूजन को सही करने में, बाल, त्वचा और आंखों की समस्या को दूर करने में, गले की खराश तथा गले की मांसपेशियों के दर्द को सही करने में, मुंह के छालों को ठीक करने में, पेट के दर्द के साथ गैस की समस्या को दूर करने में, उल्टी, कब्ज तथा बवासीर की समस्या को दूर करने में, भूख ना लगने की समस्या को सही करने में, पाचन तंत्र को सुधारने में, पुरानी सूजन (क्रॉनिक इन्फ्लेमेशन) को दूर करने में, हृदयवाही संबंधी रोग को ठीक करने में, ब्लड शुगर या डायबिटीज को नियंत्रित रखने में, रक्त संचार व उच्च रक्तचाप को नियंत्रित रखने में, एलर्जी, रक्त रोगों को तथा पीलिया को ठीक करने में, एनीमिया (शरीर में खून की कमी) को दूर करने में, फाइलेरिया को ठीक करने में, पक्षाघात (पैरालिसिस या लकवा) की समस्या को दूर करने में, अनिद्रा की समस्या को सही करने में, साँस से संबंधित समस्याओं को दूर करने में, सर्दी, खांसी, जुकाम तथा कफ की वजह से खराब आवाज को सही करने में, शरीर की थकान, कमजोरी व दुर्बलता को दूर करने में, शारीरिक क्षमता को बढ़ाने में, शरीर से विषैले पदार्थों को बाहर निकालने में, पेशाब संबंधी समस्या को दूर करने में, नपुंसकता, शीघ्रपतन व स्वप्नदोष के कारण पूरे शरीर में उत्पन्न दर्द को दूर करने में, योनिदोष और अस्थि मज्जा (बोन मेरो) आदि समस्याओं को दूर करने में, शरीर को कीटाणुओं से बचाने के साथ-साथ **एडवांसड आयुर एनाल्जेसिक केयर 1** अनियमित मासिक धर्म को सुधारने में भी बहुत अच्छा काम करता है।

इंग्रेडिएंट्स (INGREDIENTS)

NIRGUNDI EXT	75 MG.
MAHAYOGRAJ GUGGUL EXT.	75 MG.
SALAL GUGGUL EXT	62.5 MG.
RASNA EXT.	62.5 MG.
SONTH EXT.	50 MG.
SURANJAN KADVI EXT.	50 MG.
AMAVATARI RAS EXT.	50 MG.
AJWAIN EXT	50 MG.
ERANDMOOL EXT	50 MG.
DASHMOOL EXT	30 MG.
BROMALION EXT	25 MG.
ASHWAGANDHA EXT.	25 MG.
PIPPALI EXT	25 MG.
SHUDH KUPILU EXT.	25 MG.
ALOEVERA EXT.	25 MG.
HING POWDER	25 MG.
AAMA HALDI EXT.(CURCUMA AMADA ROXB.)	25 MG.
GILOY EXT.	15 MG.
HARSINGAR LEAVES EXT.	15 MG.
JAIPHAL EXT.	15 MG.
DALCHINI EXT.	15 MG.
NISHOTH EXT.	15 MG.
LAWANG EXT.	10 MG.
BABOOL KI PHALI EXT.	10 MG.
TEJPAT EXT.	5 MG.

**हमारे आयुर एनाल्जेसिक केयर 1 में**

निर्गुंडी एक बहुत ही गुणी औषधि है। हिमालयी क्षेत्र में पाई जाने वाली निर्गुंडी को श्रेष्ठ दर्द निवारकों में से एक माना जाता है। निर्गुंडी में कैस्टकीन और आमसोओरमंटीन नामक रासायनिक तत्व होता है। इसका उपयोग गठिया, साइटिका में होता है। आयुर्वेद की पंचकर्म चिकित्सा प्रणाली में निर्गुंडी का कई तरह से उपयोग किया जाता है। निर्गुंडी में एंटी-इन्फ्लामेट्री और एनाल्जेसिक (दर्दनाशक) गुण पाए जाते हैं जो कि जलन के साथ-साथ दर्द भी कम करने में सहायता करते हैं। आयुर्वेद में कहा गया है-निर्गुंडी शरीरं रक्षति रोगेभ्य तस्माद् निर्गुंडी। इसका मतलब है जो शरीर की रोगों से रक्षा करे, वह निर्गुंडी कहलाती है। निर्गुंडी मुंह में छाले, पेट संबंधी समस्या (जैसे:- पेट दर्द, एसिडिटी आदि की समस्या), जोड़ों के दर्द के लिए, बुखार में बहुत ही फायदेमंद औषधि है।

हमारे आयुर एनाल्जेसिक केयर 1 में

महायोगराज गुग्गुल एक आयुर्वेदिक औषधि है। इसमें एंटी-आर्थराइटिस, एंटी-इन्फ्लेमेटरी तथा एंटी-रूमेटिक गुण मौजूद होते हैं। महायोगराज गुग्गुल का प्रमुख कार्य मांसपेशियों के दर्द को दूर करने में, सभी दर्द जैसे जोड़ों का दर्द, जकड़न, कमर दर्द, गठिया संबंधी विकार, रूमेटाइड आर्थराइटिस, कंधों का दर्द, बदन दर्द में, शरीर में कहीं पर भी होने वाली सूजन को कम करने में, बवासीर, भगंदर, डायबिटीज में तथा पाचन संबंधी सभी बीमारियां जैसे कि भूख ना लगना, भोजन न पचना, पेट में आफरा में यह दवा सर्वोत्तम कार्य करती है।

सलाई गुग्गुल एक सुगंधित गोंद राल है जिसे शलाकी के पेड़ (बोसवेलिया सेराटा) से निकाला जाता है। यह अच्छी तरह से ज्ञात गठिया में इस्तेमाल आयुर्वेदिक दवा है। यह दर्द, सूजन, जकड़न, क्रेपिटस (जोड़ों से आने वाली आवाज) से राहत देता है और संयुक्त गतिशीलता में सुधार करता है। सलाई गुग्गुल गठिया, पुरानी सूजन, त्वचा रोगों, रक्त रोग, हृदयवाही संबंधी रोग, मुँह के छाले, गला खराब होना और अन्य स्थितियों के उपचार के लिए भी बहुत लाभकारी है।

रासना एक बहुउपयोगी आयुर्वेदिक औषधि है। रासना को जलन, सूजन और दर्द में उपयोग किया जाता है। इसके उपयोग से किसी भी तरह की चोट या घाव जल्द भरने लगते हैं। और इससे संक्रमण भी नहीं होता है। तंत्रिका तंत्र की सभी समस्याओं, विशेष रूप से नसों के लिए एक प्राकृतिक उपचार है। रासना नर्वस सिस्टम की न्युरैटिस (दर्द से तंत्रिका तंत्र की सूजन), साइटिका और क्रॉनिक इन्फ्लेमेशन (पुरानी सूजन) जैसी स्थितियों में बहुत ही लाभकारी औषधि है।

सोंठ एक आयुर्वेदिक औषधि है। सूखी अदरक या सोंठ का इस्तेमाल घरेलू दवा बनाने के लिए भी एक कारगर औषधि के रूप में किया जाता है। जिससे कई बीमारियों का उपचार किया जाता है। लंबे समय से सोंठ को जोड़ों के दर्द से मुक्ति, गैस के लिए, सिरदर्द, माइग्रेन, गर्दन और शरीर का दर्द, छाती में दर्द, सूजन को कम करने, गले की खराश, अपच, वजन कम करने और शरीर से विषैले पदार्थों को बाहर निकालने में बहुत ही लाभकारी औषधि है।

सुरंजन कड़वी एक आयुर्वेदिक औषधि है। जिसमें एल्केलाइड कोल्चिसिन काफी मात्रा में पायी जाती है। सुरंजन कड़वी में दर्द निवारण, एंटी-गाउट, एंटी-संधिशोथ, रेचक और इमेटिक गुण होते हैं। जो दर्द में बहुत अच्छा काम करते हैं।

आमवातारि रस एक रस-औषधि है जिसमें रस पारा है। पारे को ही आयुर्वेद में रस या पारद कहा जाता है और बहुत सी दवाओं के निर्माण में प्रयोग किया जाता है। पारा एक विषाक्त धातु है और इसे आयुर्वेद में केवल सही प्रकार से शोधित कर के ही इस्तेमाल किया जाता है। जो मुख्यतः गठिया संबंधी विकार, बदन दर्द, जोड़ों में दर्द, जोड़ों की जकड़न, सूजन आदि इलाजों के लिए उपयोग किया जाता है। पुरानी गठिया (रूमेटाइड आर्थराइटिस, ऑस्टियो आर्थराइटिस, गाउट आर्थराइटिस) के लिए आमवातारि रस एक अच्छी औषधि है।

हमारे आयुर एनाल्जेसिक केयर 1 में

आमवातारि रस की जड़ी-बूटियाँ सूजन-रोधी होती हैं और प्राकृतिक कैल्शियम से समृद्ध होती हैं। आमवातारि रस आपकी हड्डी की संरचना को मजबूत करता है। सूजन को कम करने के साथ शरीर से विषाक्त पदार्थों को बाहर निकालता है।

अजवाइन ऐसी औषधि है, जो न सिर्फ खाने का जायका बढ़ाती है, बल्कि स्वास्थ्य को भी ठीक रखने में मदद करती है। यही कारण है कि भारतीय भोजन में अजवाइन का अधिक इस्तेमाल किया जाता है। आर्थराइटिस (गठिया) और जोड़ों में दर्द से निजात दिलाने में अजवाइन लाभकारी होती है। वहीं, एक दूसरे रिसर्च में बताया गया है कि आर्थराइटिस से जुड़ी समस्या से राहत दिलाने के लिए अजवाइन में पाए जाने वाले एंटी-इंफ्लेमेटरी प्रभाव मदद करते हैं। अजवाइन अपने एंटी-ऑक्सीडेंट और एंटी-बैक्टीरियल गुणों के कारण जोड़ों के दर्द, आर्थराइटिस, गठिया, घुटनों के दर्द, शरीर के अंगों में असहनीय दर्द जैसी तकलीफों के इलाज के लिए इस्तेमाल की जाने वाली कारगर जड़ी-बूटी है।

एरंड मूल जोड़ों और मांसपेशियों में होने वाले दर्द, सूजन को दूर करने में इसे खासतौर पर प्रयोग में लिया जाता है। इसके इस्तेमाल से किसी भी प्रकार के संक्रमण से बचा जा सकता है। एरंड मूल में एंटी-इंफ्लेमेटरी, एंटी-एजिंग व एंटी-बैक्टीरियल गुण पाए जाते हैं। एरंड मूल में मौजूद सूजन को कम करने वाले गुणों की वजह से यह जोड़ों के दर्द, तंत्रिका सूजन, गले की मांसपेशियों के दर्द, सिर दर्द, गर्दन के दर्द तथा चोट के दर्द में राहत देता है।

दशमूल एक प्रकार की मूल या जड़ें होती हैं। यह आयुर्वेद की प्रमुख औषधि है। इसमें इन पेड़ों की जड़ की छाल या जड़ का इस्तेमाल किया जाता है। यह सूजन और दर्द में आराम देने की बेहतरीन दवा है। दशमूल का सेवन आयुर्वेद में शरीर में किसी भी कारण होने वाली दर्द (जैसे:- पीठ दर्द, जोड़ों के दर्द), सूजन को दूर करने के लिए किया जाता है। यह साइटिका, आर्थराइटिस सभी तरह के पीठ दर्द में बहुत लाभकारी है।

ब्रोमैलियन या ब्रोमेलैन अनानास के रस से प्राप्त होने वाला एक एंजाइम है। यह एंजाइम शरीर दर्द और सूजन से लड़ने वाले पदार्थों का उत्पादन करता है। इसमें ऐसे-ऐसे केमिकल भी होते हैं जो ट्यूमर बनाने वाली कोशिकाओं को नष्ट करते हैं और खून का थक्का बनने की प्रक्रिया को भी धीमा करते हैं। अनानास के ताजे रस में ब्रोमेलैन एंजाइम होता है जो शरीर की प्रतिकारक शक्ति बढ़ाता है और सूजन कम करता है। सूजन कम होने से गठिया और जोड़ों का दर्द कम होता है।

अश्वगंधा कई लाइलाज बीमारियों को ठीक करने वाली एक आयुर्वेदिक औषधि है। कई रोगों में तो अश्वगंधा रामबाण की तरह काम करती है। अश्वगंधा बहुवर्षीय (MULTIPLE YEARS) पौधा पौष्टिक गुणों से युक्त है। अश्वगंधा के बीज, फल एवं छाल का विभिन्न रोगों के उपचार में प्रयोग किया जाता है। इसके पौधे की पत्तियाँ त्वचा रोग, शरीर की सूजन एवं शरीर पर पड़े घाव और जखम भरने जैसी समस्या से लेकर बहुत-सी बीमारियों में भी बहुत उपयोगी है। जैसे:- थकान, याददाश्त खोना, जोड़ों के दर्द, गठिया दर्द, अनिद्रा, चिंता, एनीमिया (शरीर में खून की कमी), चर्म रोग, उच्च रक्तचाप, शरीर की कमजोरी या दुर्बलता को दूर करने और शारीरिक क्षमता बढ़ाने, साँस संबंधी रोग, खाँसी, क्षयरोग, पाचन तंत्र को सुधारने आदि बीमारियों में बहुत उपयोगी औषधि है। अश्वगंधा के उपयोग से कैंसर जैसी खतरनाक बीमारी से भी बचा जा सकता है।

हमारे आयुर एनाल्जेसिक केयर 1 में

कई रिसर्च में यह बताया गया है। कि अश्वगंधा कैंसर सेल्स (कोशिका) को बढ़ने से रोकती है। और कैंसर के नए सेल्स (कोशिका) नहीं बनने देती है। यह शरीर में रि-एक्टिव (पुनः सक्रिय) ऑक्सीजन का निर्माण करती है। जो कैंसर सेल्स (कोशिका) को खत्म करने और रसायन-चिकित्सा से होने वाले साइडइफेक्ट से भी बचाने का काम करती है।

पिप्पली एक जड़ी-बूटी है। पिप्पली का वानस्पतिक नाम पाइपर लोंगम है। पिप्पली या छोटी पीपल या लोंग पेपर अनेक औषधीय गुणों से संपन्न होने के कारण आयुर्वेद की एक प्रमुख दवा है। आमतौर पर भारत में पिप्पली का उपयोग घरों में खाना बनाने वाले एक मसाले के रूप में किया जाता है। पिप्पली में पिपराइन नामक एल्कलॉइड पाया जाता है, जो कई तरह की समस्याओं में औषधि की तरह काम करता है। इनमें खांसी, बुखार, सिरदर्द, पेट दर्द, मांसपेशियों में दर्द, गठिया दर्द व दांत दर्द में भी बहुत लाभकारी औषधि है।

शुद्ध कुपिलु एक आयुर्वेदिक औषधि है। इसका इस्तेमाल आयुर्वेद में काफी सालों से किया जा रहा है। आयुर्वेदिक चिकित्सा में शुद्ध कुपिलु को कुचला के नाम से भी जाना जाता है। शुद्ध कुपिलु के इस्तेमाल से ना सिर्फ एक बीमारी का इलाज किया जाता है, बल्कि इससे आप कई गंभीर बीमारियों का इलाज कर सकते हैं। शुद्ध कुपिलु गठिया, आमवात, संधिवात, घुटनों एवं जोड़ों के दर्द, माइग्रेन, सिरदर्द, जुकाम, ब्लड सर्कुलेशन, एलर्जी और श्वास रोग, पाचन तंत्र के रोगों, मधुमेह, दमा, भूख की कमी, खून की कमी, कब्ज, मलेरिया संबंधी बुखार, त्वचा रोग, उल्टी की परेशानी, नपुंसकता, शीघ्रपतन एवं धातु दुर्बलता और अन्य स्थितियों के उपचार के लिए शुद्ध कुपिलु बहुत लाभकारी औषधि है।

एलोवेरा एक औषधीय पौधा है। इसे ग्वारपाठा, घीकवार और धृतकुमारी के नाम से भी जाना जाता है। एलोवेरा का सेवन करने से शरीर में होने वाले पोषक तत्वों की कमी को पूरा किया जाता है। आयुर्वेद में इसे घृतकुमारी के रूप में महाराजा का स्थान दिया गया है एवं औषधि की दुनिया में इसे संजीवनी भी कहा जाता है। एलोवेरा का इस्तेमाल त्वचा, बालों, पेट की बीमारियों, जोड़ों के दर्द, आंखों, पाचन, ब्लड शुगर या डायबिटीज की समस्या तथा एलोवेरा आर्थराइटिस और रूमेटिज्म (त्वचा व हड्डियों के बीच मौजूद ऊतक) में भी बहुत ही लाभकारी होता है। एलोवेरा के इस्तेमाल से सूजन कम होती है। शरीर में सूजन का कारण फ्री रेडिकल्स की वजह से हुआ ऑक्सीडेटिव डैमेज होता है। एलोवेरा में एंटी-ऑक्सिडेंट्स पर्याप्त मात्रा में होते हैं। यह एंटी-ऑक्सिडेंट, फ्री रेडिकल्स से होने वाले डैमेज को रोकते हैं।

हींग पाउडर सिर्फ मसाला ही नहीं है। बल्कि एक बेहतरीन औषधि भी है। हींग को आयुर्वेद में एक औषधि के रूप में इस्तेमाल किया जाता है। हींग में प्रोटीन, फाइबर, कार्बोहाइड्रेट, कैल्शियम, फास्फोरस, आयरन, नियासिन, कैरोटीन और राइबोफ्लेविन जैसे पोषक तत्व पाए जाते हैं। किसी भी प्रकार के दर्द में हींग राहत देती है। इसमें उपस्थित सशक्त (स्ट्रॉंग) एंटी-ऑक्सिडेंट्स तथा दर्द निवारक गुण तुरंत दर्द से राहत देते हैं। हींग सिर दर्द, पेट दर्द से लेकर कई अन्य बीमारियों में बहुत लाभकारी मानी जाती है। हींग में एंटी-इंफ्लेमेटरी, एंटी-वायरल और एंटी-बायोटिक जैसे गुण पाए जाते हैं। जो सम्पूर्ण स्वास्थ्य के लिए अच्छे होते हैं।

हमारे आयुर एनाल्जेसिक केयर 1 में

आमा हल्दी में भरपूर मात्रा में एंटी-बैक्टीरिया, एंटी-फंगल, एंटी-ऑक्सीडेंट्स गुण पाए जाते हैं। तथा आमा हल्दी में मौजूद कर्कुमिन (CURCUMIN) नामक तत्व भी होता है। जो दर्द को दूर करने में बहुत मदद करता है। इसकी गाँठे आम की तरह गन्धयुक्त होती हैं इसलिए इसे आमा हल्दी कहते हैं। आमा हल्दी से खांसी, सांस रोग, बार-बार हिचकी आने की समस्या को सही करने में, रुक-रुक कर पेशाब आने की समस्या को दूर करने में, सूजन को कम करने में, गठिया (ऑस्टियो आर्थराइटिस, रुमेटाइड आर्थराइटिस और गाउट आर्थराइटिस) द्वारा मांसपेशियों में दर्द और फाइब्रोमाल्जिया (सिंड्रोम एक ऐसी स्थिति है, जो पूरे शरीर में दर्द का कारण बनती है) से जुड़े दर्द से छुटकारा दिलाने में, पेट दर्द में, पीलिया रोग में, त्वचा सम्बंधी समस्याओं को दूर करने में, मुँहासे के लिए, झुर्रियाँ दूर करने के लिए, चेहरे की चमक बढ़ाने के लिए, चेहरे का रंग निखारने के लिए, चेहरे पर ताज़गी बनाए रखने के लिए, चेहरे से काले धब्बों को हटाने के लिए आमा हल्दी बहुत लाभकारी औषधि है।

गिलोय या गुडुची, जिसका वैज्ञानिक नाम टीनोस्पोरा कोर्डीफोलिया है। गिलोय में मौजूद औषधीय गुणों की वजह से कई बीमारियों में बहुत लाभकारी माना जाता है। इसे अमृता, गुडुची, छिन्नरुहा जैसे नामों से भी जाना जाता है। गिलोय में भरपूर मात्रा में कैल्शियम, प्रोटीन, फॉस्फोरस और तनों में स्टार्च (भोजन में मिश्रित शुगर) मौजूद होता है। जो शरीर के दर्द के लिए बहुत लाभकारी होता है। गिलोय में मौजूद एंटी-बायोटिक और एंटी-वायरल गुण शरीर के दर्द और कई अन्य बीमारियों के लिए बहुत लाभकारी होते हैं।

हरसिंगार आयुर्वेदिक चिकित्सक का कहना है कि हरसिंगार के पत्तों में कई द्रव्य और औषधीय गुण होते हैं। हरसिंगार का फल, पत्ते, बीज, फूल और यहां तक कि इसकी छाल तक का इस्तेमाल विभिन्न रोगों के उपचार में किया जाता है। हरसिंगार के पत्तों का उपयोग किया जाए तो 20 से 30 साल पुराना गठिया और जोड़ों में सूजन की समस्या जड़ से खत्म हो सकती है। हरसिंगार में एंटी-इंफ्लेमेटरी गुण भी पाए जाते हैं, इसलिए यह गठिया के मरीजों के लिए उपयोगी साबित होता है। इतना ही नहीं यह बंद नसों को भी खोलता है और साइटिका के दर्द से भी राहत दिलाता है। हरसिंगार में भरपूर एंटी-बैक्टीरियल गुण होते हैं, जो हमारे शरीर को कीटाणुओं से बचाकर स्वस्थ रखने में मदद करते हैं।

जायफल एक जड़ी-बूटी है, जिसका प्रयोग मसाले के रूप में होता है। जायफल में एंटी-बैक्टीरियल गुण होने के साथ-साथ एंटी-इन्फ्लेमेटरी तत्व भी पाए जाते हैं, जो आपके जोड़ों के दर्द या सूजन को ठीक करने में बहुत मदद करते हैं। जायफल का रोजाना सेवन करने से आपकी हड्डियां मजबूत होती हैं और हर तरह के जोड़ों के दर्द से छुटकारा मिलता है।

दालचीनी को आयुर्वेद में एक बहुत ही फायदेमंद औषधि बताया गया है। आयुर्वेद के अनुसार, दालचीनी के इस्तेमाल से कई रोगों का इलाज किया जाता है। दालचीनी सेहत के लिए बहुत फायदेमंद होती है। दालचीनी एंटी-ऑक्सिडेंट गुणों का खजाना है, जो आपको फ्री रेडिकल्स से होने वाले नुकसान से बचाती है। दालचीनी में एंटी-बैक्टीरियल और एंटी-फंगल गुण होते हैं, जो आपको इंफेक्शन से भी दूर रखते हैं। दालचीनी के सेवन से पाचनतंत्र संबंधी विकार, दांत व सिर दर्द, चर्म रोग, मासिक धर्म, सर्दी, खांसी या गले की परेशानियां ठीक की जाती हैं। आर्थराइटिस के दर्द में भी दालचीनी काफी फायदेमंद होती है।

हमारे आयुर एनाल्जेसिक केयर 1 में

निशोथ के कई सारे औषधीय गुण हैं। निशोथ में सबसे अच्छे एंटी-बैक्टीरियल गुण पाए जाते हैं। निशोथ कई प्रकार के रोगों के लिए उत्तम जड़ी-बूटी हैं। निशोथ पेट, जोड़ों के दर्द, संधिशोध (ऑस्टियो आर्थराइटिस, रुमेटाइड आर्थराइटिस, गाउट आर्थराइटिस), बवासीर, पीलिया, कब्ज, वात, बुखार, हृदय रोग, एनीमिया, घाव, गले तथा आँखों की समस्या में बहुत अच्छा काम करती है।

लौंग को आयुर्वेद में दर्द निवारक माना जाता है। लौंग की हमारे भारतीय मसालों में खास जगह है। तथा लौंग के अनेक औषधीय फायदे भी हैं। लौंग में एंटी-इंफ्लेमेटरी का गुण पाया जाता है। लौंग जोड़ों के दर्द, मांसपेशियों में सूजन, अंदरूनी चोट या घाव में राहत के लिए, सिर दर्द, सूखी खांसी, कफ, गला बैठने, कफ की वजह से आवाज में खराबी आने पर, बहुत ज्यादा खांसी से पेट में दर्द आदि परेशानियों में बहुत फायदेमंद होती हैं।

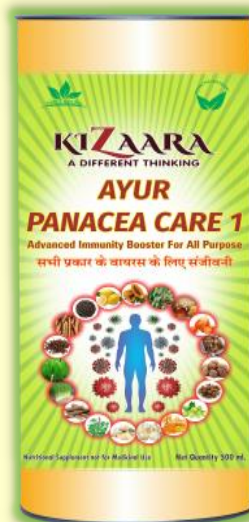
बबूल का आयुर्वेद में बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान है। बबूल को भारत में कीकर के नाम से भी जाना जाता है। इस पेड़ की मुलायम टहनियों को घरों में दातुन बना कर भी प्रयोग किया जाता है। बबूल को दांतों के लिए भी अच्छा माना जाता है। बबूल कई तरह की बीमारियों में भी फायदेमंद होती है। बबूल कफ-पित्त नाशक होती है। बबूल में एंटी-माइक्रोबिल और एंटी-ऑक्सीडेंट गुण पाए जाते हैं। बबूल जोड़ों के दर्द, दांत दर्द, शरीर की कमजोरी को दूर करने, हड्डियों को मजबूत बनाने में बहुत लाभकारी औषधि हैं।

तेजपात एंटी-इंफ्लेमेटरी, एंटी-फंगल, एंटी-बैक्टीरियल गुणों के कारण उपचार के लिए आयुर्वेद में विशेष स्थान प्राप्त है। तेजपात हर घर के किचन में मौजूद रहता है। तेजपात में पोटैशियम, आयरन, विटामिन-सी और विटामिन-ए भरपूर मात्रा में पाया जाता है। यह सभी पोषक तत्व हमारे शरीर के लिए काफी लाभकारी होते हैं। तेजपात कई तरह के रोगों और शारीरिक परेशानियों में भी फायदेमंद है। तेजपात में दर्द निवारक गुण होते हैं। तेजपात जोड़ों के दर्द, शरीर दर्द, सिर में तेज दर्द, कमर दर्द, नसों में खिंचाव या क्रैप की वजह से नसों में सूजन, पाचन, मस्तिष्क को तेज करने, पेशाब को साफ करने आदि में बहुत लाभकारी औषधि है।

उपयोग के लिए दिशानिर्देश (DIRECTIONS FOR USE):-

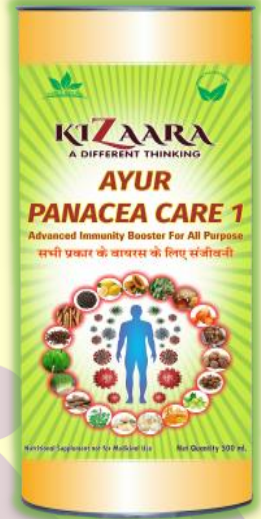
- **आयुर एनाल्जेसिक केयर 1** को रोजाना सुबह नाश्ते के 30 से 40 मिनट बाद एक गोली और रात को खाना खाने के 30 से 40 मिनट बाद एक गोली ठंडे दूध या पानी से लें। तथा ध्यान रखें **आयुर एनाल्जेसिक केयर 1** के सेवन के तुरंत बाद कुछ भी ना खाएं। **आयुर एनाल्जेसिक केयर 1** के सेवन से 30 से 40 मिनट पहले और सेवन के 30 से 40 मिनट बाद कुछ भी खा सकते हैं।
- सूरज की सीधी रोशनी से दूर रखें। और पैकेट (डिब्बी) को अच्छी तरह से बंद करें।
- पैकेट (डिब्बी) को खोलने के बाद 1 महीने के अंदर इस्तेमाल करें।
- बेहतर परिणाम के लिए **आयुर एनाल्जेसिक केयर 1** का कम से कम 3 महीने लगातार सेवन जरूर करें।
- पैकेट (डिब्बी) के सही होने पर ही खरीदें।

आयुर पनासिया केयर 1 पनासिया का अर्थ होता है:-राम-बाण औषधि, सर्वरोगहरण औषधि (सब रोगों को ठीक करने वाली औषधि) दुःख हरण औषधि (दुःख दूर करने वाली औषधि), एक प्रकार से हमारे लिए संजीवनी यानी पुनर्जीवित करने वाली एक औषधि है। आजकल के तेजी से बदलते मौसम के कारण जो बहुत सारी बीमारियां उत्पन्न हो रहीं हैं उनके लिए हमारा आयुर पनासिया केयर 1 एक संजीवनी की तरह काम करता है। इम्युनिटी और प्लेटलेट्स की संख्या बढ़ाने में, शरीर की थकान को दूर करके, शरीर की ताकत बढ़ाने में, खुजली व एलर्जी को ठीक करने में, पीलिया को ठीक करने में, पाचन संबंधी रोगों को, पित्त दोष को व कब्ज को ठीक करके, भूख बढ़ाने में, गैस्ट्रिक अल्सर व गैस्ट्राइटिस की समस्या को ठीक करने में, सांस की दुर्गंध, सांस संबंधी रोगों को ठीक करके, श्वसन तंत्र को मजबूत बनाने में, फेफड़े की कार्य विधि सुधारने में, तनाव, चिंता व मानसिक समस्याओं को दूर करने में, आंखों व दिमाग को स्वस्थ व शक्तिशाली बनाने में, खराब कोलेस्ट्रॉल (LDL) के स्तर को कम करके, अच्छे कोलेस्ट्रॉल (HDL) के स्तर को बढ़ाने में, शरीर की मेटाबॉलिज्म प्रक्रिया सुधारने में, मुंह के छालों को, लीवर की सूजन को ठीक करने में, मोटापा कम करके सुंदर बनाने में, शरीर के अंगों में होने वाली जलन को ठीक करने में, सर्दी, खांसी और कफ को ठीक करने में, टाइफाइड, मलेरिया तथा अन्य बुखारों को ठीक करने में, नाक संबंधी रोग को सही करने में, शरीर से विषैले पदार्थों को निकालने में, बालों को काला बनाने और बालों की ग्रोथ में, त्वचा रोग को ठीक करने में, चेहरे पर चमक लाने में, पेट के कैंसर तथा कैंसर की कोशिकाओं को बढ़ने से रोकने में, ब्लड सर्कुलेशन तथा हाई बीपी की समस्या को दूर करने में, रक्त विकार तथा शरीर में रक्त के थक्कों की समस्या को दूर करने में, डायबिटीज को नियंत्रित रखने में, दिल से जुड़ी समस्याओं को ठीक करने में, पेट के कीड़ों को खत्म करने में, पेट के दर्द, पीठ के दर्द, सिर के दर्द, माइग्रेन के दर्द, गर्दन के दर्द, घुटने के दर्द, हाथ के दर्द, पैर के दर्द, चोट के दर्द, मांसपेशियों और जोड़ों के दर्द, पसलियों के चलने को ठीक करने में, थायराइड की समस्या व आर्थराइटिस के दर्द और सूजन को कम करने में, पुरानी बैक्टीरियल बीमारी को ठीक करने में, वायरल इन्फेक्शन से बचाने के साथ-साथ **आयुर पनासिया केयर 1** किसी भी प्रकार के वायरस से और कोरोना के वायरस से बचाने में भी बहुत अच्छा काम करता है।



इंग्रेडिएंट्स (INGREDIENTS)

PAPAYA LEAF (CARICA PAPAYA)	500 MG.
GILOY (TINOSPORA CORDIFOLIA)	500 MG.
ASHWAGANDHA (WITHANIA SOMNIFERA)	500 MG.
ARJUN CHHAL (TERMINALIA ARJUNA)	250 MG.
PURE HONEY (APIDAE)	500 MG.
ATIBALA (ABUTILON INDICUM)	200 MG.
NAAGBALA (GREWIA HIRSUTA)	200 MG.
PIPPALI (PIPER LONGUM)	200 MG.
HARAD (TERMINALIA CHEBULA)	200 MG.
BAHEDA (TERMINALIA BELLIRICA)	200 MG.
AMLA (PHYLAANTHUS EMBLICA)	200 MG.
HALDI (CURCUMA LONGA)	200 MG.
GARLIC (ALLIUM SATIVUM)	200 MG.
GINGER (ZINGIBER OFFICINALE)	200 MG.
TULSI (OCIMUM TENUIFLORUM)	100 MG.
MULETHI (GLYCYRRHIZA GLABRA)	100 MG.
WHEATGRASS (THINOPYRUM INTERMEDIUM)	100 MG.
AGAYA GHASS (CYMBOPOGON CITRATUS)	100 MG.
KAKDA SINGI (RHUS SUCCEDANEA)	100 MG.
MUNAKKA (VITIS VINIFERA)	100 MG.
ELAICHI (ELETTARIA CARDAMOMUM)	100 MG.
LAWANG (SYZYGIUM AROMATICUM)	50 MG.
DALCHINI (CINNEMOMUM ZYLINCIUM)	50 MG.
KALI MIRCH (PIPER NIGRUM)	50 MG.
LEMON (CITRUS LIMON)	50 MG.
BHILAWA (SEMECARPUS ANACARDIUM)	50 MG.
VATSANABHA (ACONITUM FERROX)	50 MG.

**हमारे आयुर पनासिया केयर 1 में**

पपीता पत्ता (पपाया लीफ) अपने औषधीय उपयोगों के लिए जाना जाता है और आयुर्वेद में इसका विशेष महत्व है। पपीते से कहीं ज्यादा उसके पत्ते स्वास्थ्य के लिए गुणकारी माने जाते हैं। पपीते के पत्तों को औषधीय गुणों से भरपूर माना जाता है। पपीते के पत्ते में विटामिन-ए, विटामिन-बी, विटामिन-सी, विटामिन-डी और विटामिन-ई के साथ-साथ एंटी-ऑक्सीडेंट्स, फलेवोनोइड्स, कैरोटीन, अल्कलॉइड, पेपैन जैसे पोषक तत्व पाए जाते हैं। पपीते के पत्तों का जूस न केवल स्वास्थ्य के लिए लाभदायक माना जाता है, बल्कि कई बीमारियों को दूर भगाने का भी काम करता है। पपीते की पत्तियों का रस ना सिर्फ बीमारियों से लड़ता है बल्कि बॉडी की इम्यूनिटी को भी बढ़ाता है।

हमारे आयुर पनासिया केयर 1 में

इस रस को पीने से ब्लड में वाइट ब्लड सेल और प्लेटलेट्स की संख्या बढ़ जाती है। पपीते की पत्तियों में 50 एक्टिव कॉम्पोनेंट्स पाए जाते हैं। जो कि बैक्टीरिया, वायरस, फंगस और कैंसर सेल्स को खत्म करने में मदद करते हैं। इससे शरीर में फैले किसी भी प्रकार के संक्रमित वायरस व बैक्टीरिया को काबू करने में मदद मिलती है। मजबूत इम्यून सिस्टम का सीधा कनेक्शन कोरोना वायरस के खिलाफ लड़ाई से है। पपीते के पत्ते में बहुत अधिक मात्रा में फाइबर होता है जो रोग प्रतिरोधक क्षमता यानी इम्यून सिस्टम को बढ़ाता है।

गिलोय एक प्रकार की बेल है जो आमतौर पर जंगलों-झाड़ियों में पाई जाती है। प्राचीन काल से ही गिलोय को एक आयुर्वेदिक औषधि के रूप में इस्तेमाल किया जा रहा है। गिलोय को गुडूची, अमृता आदि नामों से भी जाना जाता है। आयुर्वेद के अनुसार गिलोय की बेल जिस पेड़ पर चढ़ती है उसके गुणों को भी अपने अंदर समाहित कर लेती है, इसलिए नीम के पेड़ पर चढ़ी गिलोय की बेल को औषधि के लिए सर्वोत्तम माना जाता है। इसे नीम गिलोय के नाम से जाना जाता है। गिलोय में कॉपर, आयरन, फॉस्फोरस, जिंक, कैल्शियम और मैग्नीज भी प्रचुर मात्रा में पाया जाता है। गिलोय डायबिटीज, कब्ज और पीलिया समेत कई गंभीर बीमारियों के इलाज में उपयोगी है। गिलोय या गुडूची के गुणों के कारण ही आयुर्वेद में इसका नाम अमृता रखा गया है जिसका मतलब है कि यह औषधि बिल्कुल अमृत के समान है। आयुर्वेद के अनुसार पाचन संबंधी रोगों के अलावा गिलोय सांस संबंधी रोगों जैसे कि अस्थमा और खांसी से भी आराम दिलाने में काफी फायदेमंद है। गिलोय में मौजूद एंटी-पायरेटिक गुण बुखार को जल्दी ठीक करता है साथ ही यह इम्युनिटी बूस्टर की तरह काम करती है। कोरोना वायरस के साथ अन्य वायरसों से बचाव में आपको अपनी रोग प्रतिरोधक क्षमता को मजबूत रखने की जरूरत है। रोग प्रतिरोधक क्षमता को मजबूत करने में गिलोय अहम भूमिका निभाती है। गिलोय वायरस से होने वाली बीमारियों में आपके शरीर की रक्षा करती है।

अश्वगंधा आयुर्वेदिक औषधियों में अश्वगंधा का नाम बहुत लोकप्रिय है। सदियों से कई रोगों के इलाज में अश्वगंधा का इस्तेमाल किया जा रहा है। महत्वपूर्ण आयुर्वेदिक जड़ी-बूटियों में अश्वगंधा का नाम लिया जाता है। आयुर्वेद विशेषज्ञों का मानना है कि अश्वगंधा का इस्तेमाल कई शारीरिक समस्याओं को दूर करने के लिए किया जाता है। इसमें सेहत के लिए कई छोटे-बड़े गुण छिपे हुए हैं। यदि किसी कारणवश तनाव, चिंता, मानसिक समस्या है, तो अश्वगंधा का सेवन जरूर करना चाहिए। इसमें मौजूद औषधीय गुण तनाव दूर करने में काफी मदद करता है। अश्वगंधा में एंटी-स्ट्रेस गुण तनाव से राहत दिलाता है। अश्वगंधा का सेवन करने से दिल संबंधित बीमारियों का खतरा कम हो जाता है क्योंकि इसमें पाए जाने वाले एंटी-आक्सीडेंट और एंटी-इंफ्लेमेटरी गुण कोलेस्ट्रॉल को कम करने में सहायक होते हैं। इसके सेवन से दिल की मांसपेशियां मजबूत होती हैं और बैड कोलेस्ट्रॉल लेवल कम होता है। आज लोग डायबिटीज से धीरे-धीरे ग्रसित होते जा रहे हैं।

हमारे आयुर पनासिया केयर 1 में

यह एक ऐसी बीमारी है, जिसका इलाज सिर्फ आयुर्वेदिक जड़ी-बूटी से संभव हो सकता है। अश्वगंधा के सेवन करने से डायबिटीज को कंट्रोल किया जा सकता है। अश्वगंधा में पाए जाने वाले एंटी-इंफ्लेमेट्री गुण लीवर में होने वाली सूजन की समस्या दूर करने में सहायक होता है। यह सूजन कम करता है। कोरोना काल में आयुर्वेदिक औषधियों पर लोगों का भरोसा और बढ़ा और यह जड़ी-बूटियां आज देभभर में इस्तेमाल की जा रही हैं। इन्हीं में से एक आयुर्वेदिक औषधि है अश्वगंधा। कोरोना काल में सबसे ज्यादा लोगों ने अश्वगंधा का इस्तेमाल इम्युनिटी बूस्ट करने लिए किया है। जिससे वह न केवल खुद को कोरोना वायरस से बचा सकें हैं बल्कि अपने परिवार को भी इस महामारी की चपेट में आने से सुरक्षित रख सकें हैं। इस महामारी के दौरान लोगों ने सबसे ज्यादा काढ़ा पीकर अपनी रोग प्रतिरोधक क्षमता (इम्यून सिस्टम) को बढ़ाया है।

शहद (हनी) के अनगिनत फायदे हैं। पाचन को सुधारने, खांसी से आराम दिलाने के अलावा शहद त्वचा के लिए भी बहुत फायदेमंद है। शहद में मौजूद एंटी-बैक्टीरियल और एंटी-ऑक्सीडेंट गुण आपको कई तरह की बीमारियों से बचाते हैं। शहद का नियमित सेवन शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाता है। शहद घाव भरने में, कफ दूर करने में, शरीर के विषैले पदार्थों को दूर करने में, भूख बढ़ाने में, त्वचा में निखार लाने में बहुत ही फायदेमंद औषधि है। हालांकि शहद सिर्फ स्वाद के कारण ही लोगों को नहीं लुभाता है, बल्कि इसके औषधीय गुण लोगों को ज्यादा पसंद आते हैं। इम्युनिटी बूस्ट करने के लिए शहद रामबाण इलाज है। इस कोरोना काल में आप अपने आपको स्वस्थ रखना चाहते हैं तो खाने में शहद का सेवन बहुत लाभकारी होगा।

अर्जुन छाल सदियों से आयुर्वेद में सदाबहार वृक्ष अर्जुन को औषधि के रूप में इस्तेमाल किया गया है। आयुर्वेद में इसकी छाल का औषधि के रूप में इस्तेमाल किया जाता है। इसमें कई तरह के औषधीय गुण होते हैं, जिसकी वजह से इसे दवाइयों में प्रयोग किया जाता है। अर्जुन के पेड़, फल, पत्तियों, छाल और जड़ों को कई बीमारियों को दूर करने के लिये प्रयोग किया जाता है। अर्जुन के पेड़ में बीटा-सिटोस्टेरोल, इलेजिक एसिड, ट्राईहाइड्रोक्सी ट्राईटरपीन, मोनो कार्बोक्सिलिक एसिड, अर्जुनिक एसिड पाया जाता है। जिस कारण यह रोग को दूर करने के लिए काफी उपयोगी माना जाता है। अर्जुन की छाल से चोट लगने, हड्डी टूटने, जलने, हृदय रोग, मुंह के छाले, शरीर की ताकत बढ़ाने, पित्त, क्षयरोग, सर्दी, खांसी, कफ, पेट दर्द, मोटापा, अत्यधिक कोलेस्ट्रॉल को कम करने और और बेली फैट (पेट की चर्बी) जैसी कई बीमारियों में अर्जुन छाल बहुत ही लाभकारी औषधि है। कोरोना वायरस के संक्रमण के मामलों में यह देखने में आया है कि जिन लोगों के शरीर की रोग से लड़ने की प्रतिरोधक क्षमता ज्यादा है वो कोरोना संक्रमित मरीज के संपर्क में आने के बाद भी कोरोना की चपेट में नहीं आए।

हमारे आयुर पनासिया केयर 1 में

इस महामारी से लड़ने के लिए रोग प्रतिरोधक क्षमता मजबूत होना बहुत जरूरी है। कोरोना वायरस के खिलाफ अर्जुन छाल का काढ़ा अहम भूमिका निभा रहा है।

हरड़ को आयुर्वेद में गुणकारी औषधि माना गया है। आयुर्वेद की चरक संहिता में जिस प्रथम औषधि के बारे में बताया गया है वह हरड़, हरे या हरीतकी है। हरड़ त्रिफला के तीन फलों में एक होता है। आयुर्वेद में हरड़ औषधि के लिए बहुत इस्तेमाल किया जाता है। हरड़ न सिर्फ औषधि के लिए बल्कि सेहत और सौन्दर्य के लिए भी बहुत लाभकारी होता है। हरड़ का फल, जड़ और छाल सबका उपयोग किया जाता है। आयुर्वेदाचार्यों के अनुसार, हरड़ करीब 7 प्रकार की होती है और अलग-अलग साइज में होती है। हरड़ के पौधे की जड़ से लेकर इसके फल तक हर चीज का उपयोग होता है। हरड़ में एंटी-बैक्टीरियल और एंटी-इंफ्लामेट्री गुण होते हैं। जो हमारे शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाते हैं। हरड़ में कई तरह के पौषक तत्व पाए जाते हैं। इसके सेवन से हमारे शरीर को आयरन, कॉपर, मैग्नीज, पोटैशियम, प्रोटीन्स और विटमिन्स की प्राप्ति होती है। यह सभी हमारे पाचन तंत्र को रेस्परेट्री सिस्टम यानी श्वसन तंत्र को मजबूत बनाए रखते हैं। एक शोध के अनुसार हरड़ के सेवन से कोरोना वायरस के साथ-साथ अन्य वायरस के खतरे को भी कम किया जा सकता है। हरड़ के रस में कोरोना वायरस के खिलाफ लड़ने की क्षमता होती है।

बहेड़ा एक अत्यंत महत्वपूर्ण औषधि है जिसका इस्तेमाल कई सारी बीमारियों में किया जाता है। बहेड़ा ऐसे सक्रिय जैविक यौगिकों से भरपूर है, जो इसे रोगाणुरोधी, एंटी-ऑक्सीडेंट और प्रतिरक्षा वैज्ञानिक गुण प्रदान करते हैं। इस जड़ी-बूटी का संस्कृत नाम विभीतकी है। जिसे अंग्रेजी में फीयरलेस और हिंदी में 'निर्भय' कहा जाता है। जिसका अर्थ यह है कि यह बीमारी का भय दूर करता है। हृदय रोग के लिए बहेड़ा बहुत ही लाभकारी औषधि है। बहेड़ा के सेवन से हृदय रोग की समस्या दूर हो जाती है। बहेड़ा वात, पित्त और कफ तीनों दोषों को दूर करता है। बहेड़ा आँखों के लिए, बालों के लिए, नाक सम्बन्धी रोग, रक्त विकार, तथा हृदय रोगों में गुणकारी है। कब्ज को दूर करने वाला होता है। यह मेदा (आमाशय) को शक्तिशाली बनाता है। भूख को बढ़ाता है, सिर दर्द को दूर करता है, बवासीर को खत्म करता है, आँखों व दिमाग को स्वस्थ व शक्तिशाली बनाता है। शरीर के अंगों में होने वाली जलन को बहेड़ा के माध्यम से शांत किया जाता है। क्योंकि यह एक अच्छा एंटी-एलर्जिक भी है। यह पेट की सभी समस्याओं में रामबाण है। यह एक अच्छा कैल्शियम का स्रोत है। और हड्डियों की मजबूती के लिए बहुत फायदेमंद है। बालों की सफेदी को मिटाता है। तथा बालों को सुन्दर बनाता है। बहेड़ा-कफ तथा पित्त का नाश करता है। यह स्वर भंग (गला बैठना) को ठीक करता है। यह नशा, खून की खराबी और पेट के कीड़ों को नष्ट करता है। तथा क्षय रोग (टी.बी) तथा कुष्ठ (कोढ़, सफेद दाग) में भी बहुत लाभदायक होता है।

हमारे आयुर पनासिया केयर 1 में

आयुर्वेद के अनुसार बहेड़ा के फायदे अनेकों हैं, बहेड़ा का शरीर पर गर्म प्रभाव पड़ता है, यह खून को डीऑक्सीफाई (विषाक्त पदार्थों को हटाना) करने में मदद करता है। यह खांसी और सर्दी से राहत देता है और आँखों के स्वास्थ्य और बालों के विकास के लिए लाभकारी औषधि है। बहेड़ा विशेषकर कफ को मिटाता है। शरीर में कहीं भी कफ जमा नहीं होने देता है। फेफड़े की कार्य विधि सुधारता है। शरीर से हानिकारक विषैले तत्व निकालता है। वायरस और बैक्टीरिया के प्रति लड़ने में शरीर की ताकत को बढ़ाता है।

आंवला आयुर्वेद में अमृत तुल्य और कई औषधी गुणों से भरपूर होता है। कुदरत ने इसमें कई रोगों को जड़ से खत्म करने की ताकत दी है। आंवले में कई ऐसे तत्व पाए जाते हैं जो न केवल शरीर में रोगप्रतिरोधक क्षमता बढ़ाते हैं, बल्कि रोगों को खत्म भी करते हैं। आंवले में भरपूर मात्रा में एंटी-ऑक्सीडेंट पाया जाता है। पोटैशियम, कैल्शियम, कार्बोहाइड्रेट, फाइबर, मैग्नीशियम, आयरन, विटामिन-सी, कैल्शियम, पोटैशियम, आयरन समेत कई खनिज तत्व पाए जाते हैं। आंवले का नियमित सेवन हृदय रोग के साथ-साथ डायबिटीज, बवासीर, अल्सर, दमा, ब्रोंकाइटिस और फेफड़ों की बीमारी में रामबाण का काम करता है। आंवला विटामिन-सी का सबसे अच्छा स्रोत होता है। आंवला हमारे पाचन तंत्र के लिए लाभदायक होता है। आंवला हमारे इम्यून सिस्टम को मजबूत करते हुए डायबिटीज से लेकर पाचन तंत्र और हड्डियों के स्वास्थ्य को बेहतर करने का काम करता है। आज दुनियाभर पर कोरोना वायरस का कहर है। इससे बचने के लिए सबसे पहले सभी को अपनी इम्यूनिटी बढ़ाने की सलाह दी जा रही है। ऐसे में आंवले को अपने आहार में शामिल करना बहुत लाभकारी रहेगा। इतना ही नहीं आंवला फिजिकल और मेंटल दोनों हेल्थ के लिए बेहतर होता है। इसके साथ ही आंवले में पाए जाने वाले एंटी-बैक्टीरियल तत्व, बॉडी को बैक्टीरिया और फंगल इन्फेक्शन से लड़ने में मदद करते हैं। आंवला शरीर की प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाकर बीमारियों से लड़ने की शक्ति देता है। आंवला इम्यूनिटी बढ़ाने में, डायबिटीज के मरीजों के लिए, बेहतर पाचन तंत्र के लिए, लीवर को सुरक्षित रखने में, कोलेस्ट्रॉल को कंट्रोल करने में, अस्थमा में, कैंसर की कोशिकाओं को बढ़ने से रोकने में, बालों के लिए और स्किन के लिए बहुत लाभकारी होता है।

हल्दी के नियमित इस्तेमाल से जोड़ों के दर्द में राहत मिलती है। और लम्बे समय तक स्वस्थ रहते हैं। हल्दी को औषधि के रूप में सदियों से प्रयोग किया जा रहा है। हल्दी में विटामिन, मिनरल्स, फाइबर और प्रोटीन पाया जाता है। इसके अलावा हल्दी एक दर्द निवारक औषधि भी है। हल्दी गठिया (ऑस्टियोआर्थराइटिस, रुमेटाइड आर्थराइटिस और गाउट आर्थराइटिस), द्वारा मांसपेशियों में दर्द और फाइब्रोमाल्जिया (सिंड्रोम एक ऐसी स्थिति है, जो पूरे शरीर में दर्द का कारण बनती है) से जुड़े दर्द से छुटकारा पाने में बहुत मदद करती है। हल्दी में मौजूद कर्कूमिन (CURCUMIN) नामक तत्व होता है।

हमारे आयुर पनासिया केयर 1 में

जो दर्द को दूर करने में बहुत मदद करता है। और ब्रेन फंक्शन (मस्तिष्क के कार्य) को बढ़ावा देता है। साथ ही याददाश्त को भी बढ़ाने में मदद करता है। नियमित रूप से हल्दी के सेवन से दिमाग तेज होता है और एकाग्रता (CONCENTRATION) के स्तर में भी सुधार आता है। हल्दी में एंटी-बैक्टीरियल और एंटी-ऑक्सीडेंट के गुण पाए जाते हैं। हल्दी को फटी एड़ियों के लिए काफी लाभदायक माना जाता है। हल्दी के नियमित उपयोग से फटी एड़ियों से राहत मिलती है। हल्दी औषधीय गुणों से भरपूर सिर्फ हमारी सेहत के लिए ही नहीं बल्कि त्वचा के लिए भी काफी अच्छी होती है। हल्दी में मौजूद कर्कुमिन में एंटी-इंफ्लेमट्री, एंटी-ऑक्सीडेंट, एंटी-सेप्टिक और एंटी-बैक्टीरियल गुण होते हैं। जो बैक्टीरिया से होने वाले संक्रमण से बचाव करने में बहुत लाभकारी होते हैं। हल्दी में प्रोटीन, विटामिन-ए, कार्बोहाइड्रेट और मिनरल्स प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं। हल्दी को आयुर्वेद में कैविटी दर्द से राहत प्रदान करने के लिए प्रयोग किया जाता है। इसमें मौजूद एंटी-बैक्टीरियल गुणों के साथ एंटी-इंफ्लेमेटरी गुण मसूड़ों को स्वस्थ रखने के साथ बैक्टीरियल संक्रमण के कारण दांतों के गिरने की समस्या को भी रोकता है। आयुर्वेद में, हल्दी के लाभकारी गुणों के कारण इसे "मसालों का राजा" माना गया है। आप हल्दी से निश्चित रूप से अपने दाँतों को सफ़ेद कर सकते हैं और इतना ही नहीं हल्दी से मसूड़ों को भी स्वस्थ रख सकते हैं। तथा हल्दी पित्ताशय को उत्तेजित करने, पाचन सुधारने, रक्त में मौजूद विषैले तत्व बाहर निकालने, ब्लड सर्कुलेशन में, हार्ट संबंधी परेशानियों में, सर्दी, जुकाम या कफ में, शरीर की इम्युनिटी को बढ़ाने में, मसूड़ों के सभी प्रकार के रोगों को दूर करने, मुँह के छालों को ठीक करने में, पेट की गैस के लिए हल्दी बहुत फायदेमंद होती है। जबकि दुनिया घातक कोरोना वायरस के खिलाफ अपनी सबसे कठिन लड़ाई से जूझ रही है, दुनिया भर के वैज्ञानिक सही इलाज खोजने और वायरस को खत्म करने के लिए एक प्रभावी क्षमता विकसित करने की पूरी कोशिश कर रहे हैं। किचन इंग्रीडिएंट हल्दी में JOURNAL OF GENERAL VIROLOGY की स्टडी के मुताबिक बहुत शक्तिशाली एंटी-वायरल गुण होते हैं। हल्दी में करक्यूमिन नाम का एक नेचुरल कंपाउंड होता है जो वायरस को खत्म करता है। पीले रंग के इस मसाले में कई तरह के फायदे मिलते हैं। हल्दी का इस्तेमाल बीमारियों से लड़ने और ठीक करने के लिए किया जाता है। यह भारतीय रसोई में सबसे महत्वपूर्ण सामग्रियों में से एक है। यह हमारे खाने में उत्तम स्वाद और अच्छे स्वास्थ्य के लिए सही स्वाद भी जोड़ता है। करक्यूमिन को डेंगू वायरस, हेपेटाइटिस-बी और जीका वायरस (जीका वायरस मुख्य रूप से, संक्रमित एडीज मच्छर के काटने से मनुष्यों में फैलता है) सहित कुछ अन्य प्रकार के वायरस से लड़ने में बहुत लाभकारी माना गया है। इस कमपाउंड में कई महत्वपूर्ण जैविक प्रभाव भी पाए गए हैं, जिनमें एंटी-ट्यूमर, एंटी-इंफ्लेमेटरी और एंटी-बैक्टीरियल गुण शामिल हैं। कोरोना काल में जिस हल्दी की गुणवत्ता आज पूरी दुनिया को शिद्धत से समझ में आ रही है। हमारे ऋषि मुनियों ने उसे शुभ बताकर हमारी संस्कृति का हिस्सा बना दिया था। आज वही हल्दी कोरोना वायरस के सामने कवच बनकर खड़ी है।

हमारे आयुर पनासिया केयर 1 में

दरअसल हल्दी सुपर एंटी-ऑक्सीडेंट होने के साथ ही एंटी-बायोटिक और एंटी-वायरस भी होती है। हल्दी मेडिकल एजेंट और इम्यून सिस्टम बूस्टर के तौर पर काम करती है। अब इस आयुर्वेदिक औषधि को कोरोना वायरस के खिलाफ कारगर माना जा रहा है। कोरोना काल में अधिक संख्या में लोग आयुर्वेद पद्धति को अपना रहे हैं।

लहसुन (गार्लिक) भूख को कम करती है। लहसुन हमारे शरीर में नॉरपिनेफ्रीन (एक महत्वपूर्ण ब्रेन केमिकल है) का रिसाव करती है। तथा न्यूरोट्रांसमीटर (नसों में सिग्नल लेकर जाने वाला) केमिकल है। इससे शरीर की मेटाबॉलिज्म प्रक्रिया सुधरती है। लहसुन नियमित सेवन से दिमाग और शरीर में होने वाली ऑक्सीडेटिव डैमेज की समस्या को समाप्त करता है। लहसुन में एंटी-ऑक्सीडेंट्स गुण होते हैं जो दिमाग की कोशिकाओं में होने वाले डैमेज से भी बचाते हैं। लहसुन के सेवन से अल्जाइमर और डिमेंशिया जैसी बीमारियों से बचा जा सकता है। लहसुन में मौजूद न्यूट्रिएंट्स इम्यून सिस्टम के साथ स्मरण शक्ति को मजबूत बनाने में भी बहुत लाभदायक होता है। लहसुन हमारे इम्यून सिस्टम को मजबूत बनाता है। लहसुन में कई औषधीय गुण होते हैं। जो शरीर को कई परेशानियों से बचाते हैं। इसमें विटामिन-सी, विटामिन बी-6, फाइबर, पोटैशियम, कैल्शियम आदि तत्व भी मौजूद होते हैं। लहसुन न केवल खाने के स्वाद को बढ़ाता है। बल्कि कई बीमारियों से बचाव भी करता है। यहां तक कि लहसुन शरीर के किसी भी हिस्से में हो रहे दर्द को जड़ से खत्म करने की क्षमता भी रखता है। लहसुन जीवाणुरोधी, एंटी-फंगल, एंटी-वायरल, एंटी-ऑक्सीडेंट और एंटी-इंफ्लेमेट्री गुणों से युक्त होता है। इसी वजह से वायरस को मारने में लहसुन ज्यादा असर करता है। लहसुन पीठ दर्द, गर्दन दर्द, घुटने का दर्द, हाथ दर्द या फिर पैर दर्द सभी प्रकार के दर्द में बहुत लाभकारी होता है।

अदरक (जिंजर) में एंटी-बैक्टीरियल, एंटी-फंगल और एंटी-ऑक्सीडेंट गुण पाए जाते हैं। जो कई बीमारियों से बचाने में बहुत मददगार हैं। अदरक में विटामिन भी भरपूर पाया जाता है। जो शरीर को ऊर्जा देते हैं। भारत के आयुर्वेदिक ग्रंथों में अदरक को सबसे महत्वपूर्ण बहुपयोगी औषधीय गुणों वाला जड़ी-बूटियों में से एक जड़ी-बूटी माना गया है। अदरक में जिंजरोल नामक एक बहुत असरदार पदार्थ होता है। जिंजरोल में औषधीय गुण होते हैं। जो मांसपेशियों और जोड़ों के दर्द को कम करता है। अदरक का उपयोग पुराने समय से सैक्स पावर को बढ़ाने के लिए भी किया जा रहा है। इसकी खुशबू आपकी यौन इच्छा और क्षमता को बढ़ाने में बहुत मदद करती है। अदरक आपके शरीर में रक्त प्रवाह को भी बढ़ाता है। आपके शरीर के मध्य भाग में रक्त को अधिक आसानी से फैलाता है। जो कि यौन प्रदर्शन के लिए विशेष रूप से आवश्यक होता है। अदरक में मौजूद गुण जैसे पोटैशियम, मैग्नीशियम आदि थायराइड की समस्या से निजात दिलाते हैं। अदरक में एंटी-इंफ्लेमेटरी गुण थायराइड को बढ़ने नहीं देती और उसकी कार्यप्रणाली में सुधार करती है। इसमें मौजूद खनिज शरीर के सूजन को कम करने में मदद करते हैं। अदरक धरती पर मौजूद सबसे ज्यादा स्वास्थ्यप्रद औषधियों में से एक है। पोषक तत्वों और बायो-एक्टिव यौगिकों से भरा हुआ शरीर और दिमाग के लिए बहुत लाभकारी होता है।

हमारे आयुर पनासिया केयर 1 में

अदरक आपके दिमाग के काम करने को बेहतर करता है। साथ ही भूलने की बीमारी (अलजाइमर) से भी आपको बचाता है। अदरक से शरीर की इम्युनिटी भी बढ़ती है, इसीलिए कोरोना जैसे वायरस से लड़ने में भी यह मददगार होता है। अदरक में कई तरह के गुण हैं। आमतौर पर हम सिर्फ सर्दी-खांसी में अदरक का इस्तेमाल करते हैं, लेकिन अदरक ऐसी औषधि है जिसमें सैंकड़ों गुण पाए जाते हैं। यह कई बीमारियों को न सिर्फ ठीक करता है, बल्कि कई बीमारियों को होने से भी रोकता है। और सेहत को कई तरीकों से लाभ पहुंचाता है। अदरक में भरपूर मात्रा में कुछ ऐसे तत्व पाए जाते हैं। जो फेफड़ा, प्रोस्टेट ग्रंथि, कोलोन कैंसर, ओवेरियन, ब्रेस्ट, रिस्कन और पेनक्रिएटिक कैंसर के खतरे को भी कम करने का काम करते हैं।

तुलसी में एंटी-बैक्टीरियल एवं एंटी-वायरल, विटामिन-ए, विटामिन-सी, विटामिन-डी, आयरन, फाइबर, कैल्शियम, जिंक और आयरन के साथ सिट्रिक टारटरिक एवं मैलिक एसिड गुण होते हैं। जो हमारी इम्युनिटी को बहुत बढ़ाते हैं। तुलसी में हर इन्फेक्शन से लड़ने की ताकत होती है। तुलसी 200 से भी अधिक बीमारियों को ठीक करने में उपयोगी होती है। तुलसी पीने के पानी से हानिकारक रोगाणुओं को कम करती है। यह जुकाम, खांसी, सर्दी, बुखार, पुरानी बैक्टीरियल बीमारी, त्वचा रोग, सांस की दुर्गंध दूर करने के लिए, चेहरे की चमक के लिए, एलर्जी, खुजली, सूखा रोग, पसलियों का चलना, निमोनिया, कब्ज, तनाव कम करना, वजन घटना, सिरदर्द से राहत, पाचन तंत्र प्रक्रिया को भी मजबूत करती है और अतिसार (डायरिया) सभी रोगों में चमत्कारी रूप से अपना असर दिखाती है। अगर आपका बच्चा भी किसी बीमारी से जूझ रहा है। तो उसे तुलसी दें। आप यकीन नहीं मानेंगे पर तुलसी किसी रामबाण से कम साबित नहीं होगी। तुलसी का सेवन बच्चों के लिए बहुत लाभकारी होता है। औषधीय गुणों से भरपूर तुलसी स्वास्थ्य के लिए बेहद लाभप्रद मानी जाती है। यह आपकी दिन भर की थकान को दूर करती है। और तो और तुलसी कैंसर के साथ-साथ कोरोना वायरस तक से लड़ने की क्षमता रखती हैं। तुलसी हमारे इम्युनिटी सिस्टम को मजबूत रखने में अहम भूमिका निभाती है। सदियों से तुलसी कई बीमारियों में कारगर साबित हुई है। वहीं तुलसी ने रोग प्रतिरोधक क्षमता को मजबूत कर कोरोना वायरस की चपेट में आने से लोगों को बचाया है। तुलसी एसिड रिफ्लक्स को संतुलित करती है और पेट में पीएच लेवल को भी संतुलित रखती है।

मुलेठी बहुत गुणकारी औषधि है। मुलेठी एक झाड़ीनुमा पौधा होता है। आमतौर पर इसी पौधे के तने को छाल सहित सुखाकर उसका उपयोग किया जाता है। इसके तने में कई औषधीय गुण होते हैं। मुलेठी की जड़ को उखाड़ने के बाद भी दो वर्ष तक उसमें औषधीय गुण विद्यमान (मौजूद) रहते हैं। मुलेठी गले के लिए बेहद ही फायदेमंद होती है। मुलेठी में एंटी-ऑक्सिडेंट, एंटी-बायोटिक, कैल्शियम, वसा, प्रोटीन और ग्लिसराइजिक एसिड होता है जो आर्थराइटिस की वजह से होने वाले दर्द और सूजन को कम करने में मदद करता है। मुलेठी आर्थराइटिस के मरीजों के लिए बहुत फायदेमंद होता है। तथा थायराइड को भी संतुलित करने के बहुत चमत्कारी गुण होते हैं। इसका स्वाद मीठा होता है।

हमारे आयुर पनासिया केयर 1 में

2011 में बायोसाइंसेज और टेक्नोलॉजी इंस्टीट्यूट की रिपोर्ट आई थी। जिसमें यह पाया गया था। कि मुलेठी में ट्रीटरपेनोइड ग्लाइसेरीथेनिक एसिड होता है। जो ना केवल थायराइड, बल्कि कैंसर की कोशिकाओं को खत्म करता है। और इन कोशिकाओं को बनने से भी रोकता है। यानी आप अगर नियमित मुलेठी का इस्तेमाल करते हैं। तो आपकी थायराइड समस्या जड़ से खत्म हो जाएगी। मुलेठी थायराइड ग्लैंड को संतुलित बनाए रखती है। जिससे थायराइड के मरीजों में होने वाली थकान और कमजोरी को एनर्जी में बदल देती है। आमतौर पर लोग मुलेठी का इस्तेमाल सर्दी-जुकाम या खांसी में आराम पाने के लिए करते हैं। गले की खराश में इसका उपयोग करना सबसे ज्यादा लाभकारी होता है। अगर आप सूखी खांसी या गले की समस्याओं से परेशान हैं। तो मुलेठी आपके लिए बहुत ही लाभकारी औषधि है। कोरोना वायरस से बचने के लिए और अपनी इम्युनिटी यानी रोगों से लड़ने की क्षमता को मजबूत बनाने के लिए बड़ी संख्या में लोग रोजाना फल और सब्जियों के साथ ही विटामिन और मिनरल सप्लिमेंट्स का सेवन कर रहे हैं। मुलेठी कई बीमारियों से बचाने में मदद करती है। मुलेठी कोरोना वायरस से बचाने में मदद तो करती ही है, साथ ही यह कोरोना से संक्रमित मरीजों की रिकवरी प्रक्रिया को भी तेज (SPEEDS UP RECOVERY) करने में मदद करती है। बदलते मौसम यानी मुख्य रूप से लगातार घटते-बढ़ते तापमान की वजह से अधिकतर लोगों की रोग प्रतिरोधक क्षमता कम हो जाती है। जिससे हमारे शरीर का संतुलन बिगड़ जाता है। इस स्थिति में शरीर को अतिरिक्त ऊर्जा की जरूरत होती है, जो बिगड़े संतुलन को सुधारने के लिए एनर्जी दे सके। मुलेठी हमारे शरीर में पॉवर बूस्टर की तरह काम करती है। अगर आप चाहते हैं कि आप हमेशा हेल्दी और फिट रहें तो आप निश्चित मात्रा में मुलेठी का सेवन नियमित रूप से करें। इसके सेवन से हमारे शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता मजबूत होती है। हानिकारक बैक्टीरिया और वायरस हमारे शरीर पर जल्दी अटैक नहीं कर पाते हैं। और यह स्किन और बालों के लिए भी बेहद अच्छी मानी जाती है।

व्हीट ग्रास प्रकृति ने हमें अनेक अनमोल आयुर्वेदिक औषधियां दी हैं जो हमारे स्वास्थ्य के लिए लाभदायक मानी जाती हैं। व्हीट ग्रास ट्रिटिकम एस्टीवम या आम गेहूं की ताजी पत्तियों से तैयार किया जाता है। व्हीट ग्रास का सेवन शरीर में सभी जरूरी तत्वों की कमी को पूरा करने में मदद करता है। व्हीट ग्रास में विटामिन, प्रोटीन, मिनरल, फाइबर और एंटी-ऑक्सीडेंट, एंटी-इन्फ्लेमेशन व एंटी-इंफेक्शन के गुण पाए जाते हैं। इसके अलावा इसमें क्लोरोफिल, फ्लेवोनोइड्स, विटामिन-सी और विटामिन-ई बहुत अधिक मात्रा में पाया जाता है। व्हीट ग्रास जूस में कैलोरी की मात्रा बहुत कम पाई जाती है। जो आपके वजन को कम करने में भी मदद कर सकती है। व्हीट ग्रास को डायबिटीज, कैंसर, त्वचा रोग, मोटापा, किडनी और पेट संबंधी रोग के उपचार में लाभकारी माना जाता है। व्हीट ग्रास जूस का इस्तेमाल इंस्टेंट एनर्जी पाने के लिए भी किया जाता है। व्हीट ग्रास जूस के सेवन से शरीर को कई बीमारियों के खतरे से बचाया जा सकता है। इसमें मौजूद मिनरल्स शरीर के विषैले पदार्थों को बाहर निकालकर आपको कैंसर के खतरे से बचाते हैं।

हमारे आयुर पनासिया केयर 1 में

इसका सेवन करने से शरीर में ब्लड का सही सर्कुलेशन होता है और ऑक्सीजन का भी प्रवाह बना रहता है, जोकि कैंसर के खतरे को शरीर से दूर रखता है। व्हीट ग्रास के सारे गुण आपको फ्री रेडिकल्स के द्वारा होने वाले नुकसान से भी बचाते हैं और एजिंग के लक्षणों को रोकते हैं व सेल्स को भी दुबारा जेनरेट होने में मदद करते हैं। व्हीट ग्रास शरीर को मजबूत बनाता है और इम्युनिटी बूस्टर का काम करता है। इसलिए व्हीट ग्रास शरीर के लिए विभिन्न रूप से बहुत लाभकारी है। इसका सेवन पाचनतंत्र, स्किन, बालों के लिए फायदेमंद होने के साथ-साथ वायरल इंफेक्शन से भी बचाता है।

लेमन ग्रास में एंटी-हाइपरलिपिडेमिक और एंटी-हाइपरकोलेस्ट्रॉलेमिक गुण होते हैं। जो अच्छे कोलेस्ट्रॉल के स्तर को सामान्य रखने में बहुत मदद करते हैं। लेमन ग्रास दिखने में साधारण घास लगती है, लेकिन यह शरीर के लिए बड़े काम की है। नींबू की महक के कारण इसकी महत्ता बहुत बढ़ जाती है। इस जड़ी-बूटी में कई औषधीय गुण पाए जाते हैं जो स्वास्थ्य के लिए बहुत लाभदायक हैं। लेमन ग्रास नर्वस सिस्टम, त्वचा और इम्यून सिस्टम के लिए बहुत फायदेमंद है। इसके सेवन से टाइप-2 डायबिटीज, मोटापा, कैंसर, पेट संबंधी बीमारियां, नींद न आने की बीमारी और सांस संबंधी बीमारियों से दूर रहने में मदद मिलती है। नींबू की सुगंध वाली यह घास एंटी-ऑक्सीडेंट, एंटी-इंफ्लेमेटरी, एंटी-सेप्टिक एंटी-बैक्टीरियल, एंटी-फंगल और विटामिन-सी से भरपूर है जो रोगों से लड़ने की क्षमता पैदा करती है। इसमें कई पोषक तत्व जैसे कैल्शियम, आयरन, मैग्नीशियम, फास्फोरस, प्रोटीन, फैट, कार्बोहाइड्रेट, मिनरल, पोटैशियम, सोडियम, जिंक, कॉपर, मैंगनीज, विटामिन बी-6, विटामिन-सी, विटामिन-ए आदि पाए जाते हैं। लेमन ग्रास में कैंसर सहित कई बीमारियों से छुटकारा दिलाने वाले गुण होते हैं। इस घास में एक खास तत्व होता है जिसे सिट्राल कहते हैं। यह तत्व कैंसर सेल्स को शुरुआती अवस्था में रोकने में कारगर है। इस घास को ब्रेस्ट कैंसर और स्किन कैंसर में काफी फायदेमंद पाया गया है। जिन बच्चों को आसानी से नींद नहीं आती, उनके लिए लेमन ग्रास का सेवन फायदेमंद है। लेमन ग्रास एनिमिया के विभिन्न प्रकार में उपयोगी होता है। इसके नियमित सेवन से शरीर में आयरन की कमी को पूरा किया जा सकता है। लेमन ग्रास बैक्टीरियल, फंगल या यीस्ट संक्रमण को दूर रखने में मदद करता है, क्योंकि इसमें एंटी-सेप्टिक, एंटी-बैक्टीरियल व एंटी-फंगल गुण होते हैं। जो सर्दी, खांसी और बुखार में लाभकारी सिद्ध होते हैं। वहीं दिमाग तेज करने के लिए भी यह बेहतरीन है। खास तौर से सिरदर्द और जोड़ों के दर्द में यह बेहद फायदेमंद है। कोरोना वायरस के दौरान इम्युनिटी बूस्टर के लिए लेमन ग्रास का इस्तेमाल किया जा रहा है। यह रक्त को शुद्ध और डिटॉक्स करने में भी मदद करता है।

लौंग एक गुणकारी औषधि है, जिसका इस्तेमाल कई तरह की बीमारियों के लिए किया जाता है। आयुर्वेद में लौंग के पौधे के हर भाग का इस्तेमाल बताया गया है। लौंग का इस्तेमाल करके खांसी से राहत मिलती है। लौंग इम्यून सिस्टम को भी मजबूत करती है। लौंग दांतों की बीमारियों में, दांतों में छुपे कीटाणुओं से लड़ने और उनको दूर करने में, दांत दर्द में तथा माउथ अल्सर में बहुत लाभकारी औषधि है।

हमारे आयुर पनासिया केयर 1 में

लौंग पोटैशियम, सोडियम, फास्फोरस, आयरन, मैग्नीज, फाइबर, आयोडिन, विटामिन-के, विटामिन-सी, ओमेगा-3 फैटी एसिड्स, कैल्शियम और मैग्नीशियम का एक अच्छा स्रोत है। तथा लौंग पेट की गैस, अत्यधिक प्यास लगने की समस्या, कफ-पित्त दोष, पेट के कीड़ों को खत्म करने, मूत्र मार्ग को सही रखने और मूत्र मार्ग के रास्ते हानिकारक चीजों को बाहर निकालने में लौंग बहुत फायदेमंद होती है। लौंग का सेवन आयुर्वेद विज्ञान के मुताबिक शरीर को स्वस्थ रखने के लिए बेहद जरूरी है। लौंग खाने से शारीरिक क्षमता भी बढ़ती है। इसे रोजाना रात को दूध के साथ लेने से शरीर चुस्त-दुरुस्त रहता है। पुरुषों के लिए यह बेहद फायदेमंद होता है। लौंग अपने अद्भुत लाभों के लिए आयुर्वेद में एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है। लौंग का हर घर में मसालों के तौर पर सेवन किया जाता है। आयुर्वेद में इसे जड़ी बूटी के तौर पर औषधीय रूप में इस्तेमाल किया जाता है। कोरोना काल में इम्यून सिस्टम को मजबूत बनाने, गले की खराश को दूर करने, सर्दी, जुकाम और सूखी खांसी से राहत दिलाने में लौंग रामबाण सिद्ध हो रही है। कोरोना वायरस के संक्रमण से बचने के लिए सबसे जरूरी है कि अपनी इम्यूनिटी यानी रोग प्रतिरोधक क्षमता को मजबूत रखें और इसके लिए आपको पौष्टिक और औषधीय गुणों से भरपूर चीजों का सेवन करना चाहिए। इन्हीं में से एक है लौंग, जिसकी सुगंधित महक आपके खाने में जायका तो लाती ही है, साथ ही इसके पौष्टिक गुण सेहत में सुधार भी करते हैं। लौंग एंटी-ऑक्सीडेंट, एंटी-वायरल और एंटी-इंफ्लेमेट्री गुणों से समृद्ध होती है।

दालचीनी को पेड़ की छाल से निकाला जाता है। इससे कमजोरी दूर होती है और एनर्जी मिलती है। दालचीनी आपकी सेक्सुअल हेल्थ को ठीक रखने में बहुत असरदार है। दालचीनी भारतीय मसालों में प्रमुख रूप से सदियों से घर-घर में इस्तेमाल की जा रही है। भारतीय मसालों में प्रमुख स्थान रखने वाली दालचीनी का सेवन पूरे भारत में प्रचलित है। यह न केवल खाने का स्वाद बढ़ाती है। बल्कि अपने औषधीय गुणों के कारण कई बीमारियों के उपचार में भी सहायक है। दालचीनी सर्दी, खांसी या गले की तकलीफों में बेहद असरकारक दवा के रूप में काम करती है। इससे पुराने कफ और खांसी में बहुत राहत मिलती है। दालचीनी के सेवन से दिल से जुड़ी कई समस्याओं में राहत मिलती है। दरअसल इसमें फाइबर और कैल्शियम अच्छी मात्रा में पाए जाते हैं। और इनकी मदद से बैड कोलेस्ट्रॉल का स्तर कम हो जाता है। इस तरह के कोलेस्ट्रॉल के घटने से धमनियों की ब्लॉकेज का खतरा कम हो जाता है। आयुर्वेद में दालचीनी को एक बहुत ही फायदेमंद औषधि के रूप में बताया गया है। आयुर्वेद के अनुसार, दालचीनी के इस्तेमाल से कई रोगों का इलाज किया जा सकता है। कोरोना वायरस के मरीजों को जिस काढ़े का सेवन करवाया जा रहा है उसमें दालचीनी की मात्रा भी शामिल है। यह न केवल मरीजों को ठीक करने में विशेष भूमिका निभा रही है बल्कि इसके सेवन से अन्य कई फायदे भी होते हैं। इसे लोगों के द्वारा अलग-अलग रूपों में खाने के लिए इस्तेमाल किया जाता है। कोरोना वायरस महामारी के इस दौर में रोग प्रतिरोधक क्षमता को मजबूत बनाए रखने के लिए भी दालचीनी ने बेहतरीन परिणाम दिखाए हैं।

हमारे आयुर पनासिया केयर 1 में

कहने को तो दालचीनी केवल एक मसाला ही है लेकिन औषधीय गुणों से भरपूर होने के कारण इसमें कई ऐसी खास क्षमता मौजूद हैं जो शरीर के लिए बेहद लाभकारी मानी जाती हैं। दालचीनी में एंटी-ऑक्सीडेंट की भरपूर मात्रा होती है जो ऑक्सीडेटिव डैमेज और फ्री रेडिकल से हमारे शरीर की रक्षा करते हैं। इसमें पॉलिफेनॉल्स नामक पावरफुल एंटी-ऑक्सीडेंट गुण पाया जाता है। दालचीनी में एंटी-माइक्रोबियल, एंटी-बैक्टीरियल और एंटी-फंगल एक्टिविटी पाई जाती है। यह एक्टिविटी इन्फेक्शन को आपके शरीर पर अटैक करने से रोकने का कार्य करती है। दालचीनी का उपयोग बैक्टीरिया और फफूंद (फंगल) का संक्रमण रोकने में होता है। इस तरह यह कोरोना वायरस के संक्रमण का सामना करने में भी कारगर भूमिका निभाती है। ग्रामीण इलाकों में अनेक रोगों में आयुर्वेदिक औषधियों, मसालों और काढ़े का सेवन किया जाता है। ऐसे में प्राचीन परंपरा में आयुर्वेद और उससे बनी औषधियों का महत्व बढ़ गया है। आयुर्वेद में दालचीनी को एक शानदार औषधि बताया गया है। दालचीनी के सेवन से इम्युन सिस्टम तो मजबूत होता है। साथ ही दिल से संबंधित बीमारियों का खतरा भी दूर हो जाता है।

काली मिर्च पाचन रस और भोजन को पचाने वाले एंजाइम को उत्तेजित करती है। (एंजाइम एक प्रकार जैविक उत्प्रेरक होते हैं। जो जैव रासायनिक अभिक्रियाओं की दर को बढ़ा देते हैं। प्रोटीन प्रकृति के ऐसे कार्बनिक पदार्थ जो जीवित कोशिकाओं में उत्प्रेरक का कार्य करते हैं। एंजाइम कहलाते हैं)। जिससे पाचन शक्ति में सुधार आता है। जब आप खाने के साथ काली मिर्च का सेवन करते हैं। तो इसका असर पाचन शक्ति पर ज्यादा पड़ता है। काली मिर्च में प्राकृतिक रूप से भोजन को पचाने वाले (डाइजेस्टिव) एंजाइम होते हैं। जिससे यह पाचन तंत्र को मजबूत करने के लिए उपयोगी है। भारतीय दृष्टिकोण के अनुसार, काली मिर्च का इस्तेमाल सैंकड़ों सालों से किया जा रहा है। काली मिर्च का इस्तेमाल विभिन्न रोगों में औषधि के रूप में किया जाता रहा है। आयुर्वेद में काली मिर्च से कई तरह की औषधि बनाई जाती है। काली मिर्च का सेवन करने से शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है। इससे शरीर स्वस्थ बना रहता है। यह शरीर में बाहरी संक्रमण को पहुंचने से रोकती है और कफ, पित्त और वायु पर नियंत्रण करती है। वैसे तो काली मिर्च अपने आप में काफी फायदेमंद होती हैं। आजकल के कोरोना काल में आपको रोजाना एक निश्चित मात्रा में काली मिर्च का सेवन जरूर करना चाहिए। काली मिर्च में पाए जाने वाले पिपराइन नामक रसायन से कोरोना वायरस को खत्म किया जा सकता है। आयुर्वेद में काली मिर्च को औषधि बताया गया है। इसमें मौजूद इस रसायन का जब दवा के रूप में इस्तेमाल होगा तो वायरस को निष्प्रभावी करेगा। इस रसायन में एंटी-वायरल गुण पाया जाता है।

नींबू (लेमन) का उपयोग पुराने समय से ही आयुर्वेदिक उपचार के लिए किया जाता रहा है। प्राकृतिक एंटी-सेप्टिक गुण होने के कारण नींबू त्वचा संबंधित सभी समस्याओं को दूर करता है। नींबू में प्राकृतिक ब्लीचिंग गुण पाया जाता है। प्राकृतिक लाइटनिंग एजेंट होने के कारण यह त्वचा के लिए काफी फायदेमंद होता है।

हमारे आयुर पनासिया केयर 1 में

नींबू में मौजूद विटामिन-सी त्वचा को डार्क पैच (हाइपर पिगमेंटेशन) और दाग, धब्बे से बचाने में मदद करता है, जिसकी वजह से त्वचा में निखार आता है। कोरोना वायरस के बढ़ते प्रकोप के बीच आपका इम्यून सिस्टम ही आपको मजबूती प्रदान कर सकता है। इस समय सभी अपनी इम्युनिटी को मजबूत बनाने की कोशिश कर रहे हैं। स्वाद में खट्टे नींबू में सेहत के कई मीठे फायदे छिपे होते हैं। नींबू विभिन्न रोगों को नष्ट करने वाले अनेक गुणों का भंडार है। आधुनिक अनुसंधानों के अनुसार नींबू में प्रबल कीटाणुनाशक शक्ति पाई जाती है तथा यह रोगप्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाता है। इसमें साइट्रिक एसिड तथा कैल्शियम, फॉस्फोरस आदि खनिज तत्व पर्याप्त मात्रा में होते हैं। इसके लगातार सेवन से कोरोना वायरस भी हमसे दूर होगा। ऐसे में नींबू रामबाण है। कोरोना वायरस से बचाव के लिए ज्यादातर लोग आयुर्वेदिक नुस्खे अपना रहे हैं। खासतौर पर इम्युनिटी बढ़ाने के लिए विटामिन-सी फूड्स का इस्तेमाल किया जा रहा है। वहीं, नींबू को कोरोना वायरस से बचाव के लिए सबसे कारगर माना जा रहा है। नींबू में मौजूद पोषक तत्व कोरोना वायरस को शरीर में पनपने नहीं देते जिससे कोरोना वायरस अपनी पूरी ताकत से गले और शरीर के अंगों पर अटैक नहीं कर पाते हैं।

अतिबला पौष्टिक गुणों से भरपूर होती है, इसे खिरैटी भी कहा जाता है। अतिबला एक जड़ी-बूटी है। यह झाड़ीदार पौधा कई वर्ष तक हरा भरा रहता है। इसकी जड़ और बीज का इस्तेमाल औषधि के रूप में किया जाता है। अतिबला का पौधा एक बहुत ही गुणी औषधि है। बहुत सालों से आयुर्वेदाचार्य अतिबला के इस्तेमाल से कई बीमारियों को ठीक करने का काम कर रहे हैं। यह तीखी, कड़वी, पचने में हल्की, चिकनी, और वात-पित्त को संतुलित करने वाली है। अतिबला से बहुत लाभ होता है। यह मनुष्य की आयु, शरीर का बल, चेहरे की चमक और यौनशक्ति को बढ़ाती है। अतिबला दर्दनाशक, बुखार ठीक करने में, दाँत दर्द ठीक करने में, खाँसी, पेचिश, बवासीर, पेशाब संबंधित रोग सही करने में, पथरी की समस्या को दूर करने में, सफेद दाग सही करने में, घाव भरने में, पीलिया ठीक करने में, मासिक धर्मचक्र रूकने और अनियमितता को सही करने में, महिलाओं में इन्फेक्शन के कारण होने वाली श्वेत प्रदर की समस्या को दूर करने में, मसूड़ों का ढीलापन और सूजन ठीक करने में, शरीर के जलन को ठीक करने में, शारीरिक कमजोरी को दूर करने में, लीवर को स्वस्थ बनाने में, ब्लड शुगर को कम करने में, प्रतिरक्षा प्रणाली (इम्यून सिस्टम) को बढ़ाने तथा संक्रमण दूर करने में अतिबला बहुत ही लाभकारी औषधि है।

नागबला का पौधा अपने औषधीय गुणों के कारण जाना जाता है। आयुर्वेद के अनुसार कई बीमारियों के इलाज में इसका उपयोग किया जाता है। आयुर्वेद के अनुसार यह उत्तम रसायन, पुष्टिदायक और बल वर्धक है। विशेषज्ञों का कहना है कि दिल से जुड़े रोगों और पेट की बीमारियों के इलाज में नागबला बहुत ही उपयोगी है। नागबला बुखार ठीक करने में, घाव या त्वचा रोगों को ठीक करने में, सर्दी-जुकाम को सही करने में, स्तनों के दर्द को ठीक करने में, बवासीर ठीक करने में, गठिया दर्द ठीक करने में, टीबी के इलाज में, नाक-कान से खून बहने को ठीक करने में, वीर्य की गुणवत्ता बढ़ाने में, मानसिक विकार को ठीक करने में, तंत्रिका या नर्व सम्बन्धी विकार तथा मूत्र सम्बन्धी विकार के इलाज में नागबला बहुत ही लाभकारी औषधि है।

पिप्पली एक जड़ी-बूटी है। आयुर्वेद में पिप्पली की चार प्रजातियों के बारे में बताया गया है लेकिन व्यवहार में छोटी और बड़ी दो प्रकार की पिप्पली का ही उपयोग किया जाता है।

हमारे आयुर पनासिया केयर 1 में

पिप्पली में एंटी-ऑक्सिडेंट, एंटी-माइक्रोबियल और एंटी-इंफ्लेमेटरी गुण पाए जाते हैं। लंबी मिर्च, जिसे पिप्पली के रूप में भी जाना जाता है, एक आवश्यक सुगंधित पौधा है। जिसकी जड़ें और फूल मुख्य रूप से औषधि के लिए उपयोग किए जाते हैं। इस पौधे के चिकित्सीय लाभों का उल्लेख आयुर्वेद में भी किया गया है। पिप्पली की लता भूमि पर फैलती है। इसकी जड़ लकड़ी जैसी, कड़ी, भारी और श्याम्ले रंग की होती है। इसका स्वाद तीखा होता है। पिप्पली के पौधे में फूल बारिश के मौसम में खिलते हैं और फल ठंड के मौसम में होते हैं। इसके फलों को ही पिप्पली कहते हैं। जड़ जितना वजनदार व मोटा होता है, उतना ही अधिक गुणकारी माना जाता है। पिप्पली ब्रोंकाइटिस (श्वासनली में होने वाली सूजनकारी बीमारी), अस्थमा, खांसी, गले की खराश, पेट से जुड़ी बड़ी समस्याओं (जैसे:- कॉन्स्टिपेशन और इनडायजेशन), फेफड़ों की समस्याओं में, सांस संबंधी समस्याओं में, अनिद्रा (नींद न आने की बीमारी) में, रक्त की कमी को दूर करने में, रक्त को साफ करने में, नपुंसकता और शीघ्रपतन की समस्या में, कमर दर्द तथा चोट या मोच के दर्द से राहत दिलाने में बहुत ही लाभकारी औषधि है।

काकड़ासिंगी एक प्रकार का जड़ी-बूटी होता है। जिसका आयुर्वेद में औषधी के रूप में इस्तेमाल किया जाता है। काकड़ासिंगी बुखार, शरीर के ऊपरी भाग में वात दोष के कारण होने वाली समस्या को सही करने में, खांसी से राहत दिलाने में, अस्थमा में, उल्टी से राहत दिलाने में, पेट संबंधी समस्याओं को ठीक करने में, पाचन शक्ति को मजबूत बनाने में, बार-बार हिचकी आने की समस्या को ठीक करने में, अतिसार या दस्त से राहत दिलाने में, खुजली से राहत दिलाने में, सांस संबंधी समस्याओं को ठीक करने में, बच्चों के तरह-तरह के रोगों (जैसे:- शिशुओं में होने वाली खांसी, ज्वर तथा उल्टी तथा दाँत निकलने के समय होने वाली समस्याओं) से निजात दिलाने में, रक्तदोषों को सही करने में, मसूड़े से खून आने की समस्या को ठीक करने में काकड़ासिंगी बहुत ही लाभकारी औषधि है।

मुनक्का को आयुर्वेद में औषधीय गुणों से भरपूर बताया गया है। मुनक्का की प्रकृति या तासीर गर्म होती है। यह कई रोगों में दवाई के रूप में इस्तेमाल किया जाता है। मुनक्का में एंटी-ऑक्सिडेंट और एंटी-बैक्टीरियल गुण पाए जाते हैं। मुनक्का के कई स्वास्थ्य लाभ हैं। किशमिश या मुनक्का एक प्रकार का अंगूर है, अंगूर जब सुख जाता है तो उसे मुनक्का या किशमिश के नाम से जाना जाता है। मुनक्का स्वास्थ्य के लिए अच्छा है। मुनक्का खाने के बहुत सारे फायदे हैं। मुनक्का को एक ऊर्जावान शुष्क फल के रूप में जाना जाता है। मुनक्का सर्दी-जुकाम को ठीक करने में, आंखों की रोशनी बढ़ाने में, गले की समस्या (जैसे:- खराश या खुजली) को ठीक करने में, बुखार ठीक करने में, खून बढ़ाने में, हड्डियों को मजबूत बनाने में, किडनी स्टोन, दिल की बीमारियों और गाठिया जैसी बीमारियों को दूर करने में, कब्ज से राहत दिलाने में, दांतों में बैक्टीरिया की वृद्धि को रोकने में, हार्ट अटैक की समस्या को दूर रखने में, उच्च रक्तचाप को नियंत्रित रखने में, बालों के झड़ने की समस्या को कम करने में मुनक्का बहुत ही लाभकारी औषधि है।

हमारे आयुर पनासिया केयर 1 में

इलायची में बहुत से औषधीय गुण पाए जाते हैं, जो हमें कई गंभीर बीमारियों से बचाते हैं। इलायची में एंटी-इंफ्लेमेटरी और एंटी-ऑक्सीडेंट गुण पाए जाते हैं। इलायची यौन रोग या गुप्त रोग की समस्या को दूर करने में, कैंसर (मुंह का कैंसर तथा त्वचा का कैंसर) को ठीक करने में, बार-बार हिचकी आने की समस्या को सही करने में, मुंह की दुर्गंध दूर करने में, उल्टी और मिचली से राहत दिलाने में, ब्लड सर्कुलेशन को सामान्य बनाए रखने में, ब्लड प्रेशर को नियंत्रित रखने में, गैस, एसिडिटी और पेट की समस्या से राहत दिलाने में, पाचन से जुड़ी समस्याओं से राहत दिलाने में, सांस सम्बन्धी समस्याओं को सही करने में, शुगर लेवल को कम करने में, एलर्जी और सूजन सम्बन्धी समस्याओं से राहत दिलाने में, सर्दी-खांसी या गले की खराश की समस्या से राहत दिलाने में, लीवर से जुड़ी बीमारियों का खतरा कम करने में, तेजी से वजन घटाने में, नपुंसकता दूर करने तथा तनाव दूर करने में इलायची बहुत ही लाभकारी औषधि है।

भिलावा आयुर्वेद के अनुसार यह फल मधुर और तिक्त रस से युक्त, कड़वे स्वाद वाला होता है। इसकी तासीर गर्म होती है। यह अति विषैला औषधीय फल है अतः इसका प्रयोग आयुर्वेद में शोधन करने के पश्चात ही किया जाता है। भिलावा एक ऐसा फल है जिसमें कैंसर को जड़ से खत्म कर देने की ताकत रखता है। कफ एवं वात रोगों को ठीक करने में, यौन दुर्बलता को दूर करने में, शुक्राणुओं की संख्या बढ़ाने में, त्वचा पर चकत्ते, खुजली और सूजन को ठीक करने में, बवासीर ठीक करने में, भूख बढ़ाने में, पाचन में सुधार के लिए, स्मरण शक्ति को बेहतर बनाने में, खांसी और अस्थमा को ठीक करने में, दिल का दौरा और हृदय की दुर्बलता को ठीक करने तथा इम्युनिटी बढ़ाने में भिलावा बहुत ही लाभकारी औषधि है।

वत्सनाभ विषैली तथा विषरहित दोनों तरह की होती है। यह एक झाड़ीनुमा पौधा होता है जिसमें एकोनाइट एवं स्यूडोएकोनाइटिन नामक जहरीला तत्व होता है। इसके विषैले पौधे के फूलों को सूंघने से ही मनुष्य बेहोश हो जाता है। वत्सनाभ का उपयोग आयुर्वेदिक दवा के रूप में किया जाता है। आयुर्वेद के अनुसार इस पौधे के अंदर ज्वरनाशक, सूजन को दूर करने वाले और पेट से संबंधित विकारों को दूर करने वाले महत्वपूर्ण गुण मौजूद होते हैं। वत्सनाभ शरीर के सभी अंगों का दर्द मिटाने के लिए, बार-बार पेशाब की समस्या को दूर करने में, बुखार को ठीक करने में, दमा रोगों को ठीक करने में, मधुमेह ठीक करने में, कुष्ठ रोग को सही करने में, आतों की बीमारी को दूर करने तथा आंतरिक व बाहरी सूजन को ठीक करने में वत्सनाभ बहुत ही लाभकारी औषधि है।

उपयोग के लिए दिशानिर्देश (DIRECTIONS FOR USE):-

- आयुर पनासिया केयर 1 के सेवन से पहले बोतल को अच्छी तरह हिलाएं।
- आयुर पनासिया केयर 1 को सुबह-शाम खाना खाने के 1 घंटे बाद 20 से 25 ML तक लें। तथा ध्यान रखें आयुर पनासिया केयर 1 के सेवन के तुरंत बाद कुछ भी ना खाएं। आयुर पनासिया केयर 1 के सेवन से 1 घंटे पहले और सेवन के 1 घंटे बाद कुछ भी खा सकते हैं।
- सूरज की सीधी रोशनी से दूर रखें। और बोतल को अच्छी तरह से बंद करें।
- बोतल को खोलने के 1 महीने के अंदर इस्तेमाल करें।
- बेहतर परिणाम के लिए आयुर पनासिया केयर 1 का कम से कम 3 महीने लगातार सेवन जरूर करें।
- बोतल के सही होने पर ही खरीदें।

KIZARA
A DIFFERENT THINKING

PRODUCT NAME	QTY	MRP	DP	BV
19. AYUR SEA BUCKTHORN JUICE 1	500 ML	1252/-	1032/-	545
20. AYUR TRIPHALA JUICE 1	500 ML	600/-	410/-	140
21. AYUR HERBAL TEA 1	100 GM	415/-	361/-	150
22. AYUR FLAXSEED OMEGA – 369	60 CAP.	1499/-	1252/-	811
23. AYUR JOINT PAIN CARE 1	50 ML	370/-	316/-	171
24. AYUR HAIR CARE 1	100 ML	226/-	195/-	60
25. AYUR S + C HAIR CARE 1	100 GM	240/-	195/-	68
26. AYUR PANCH TULSI 1	25 ML	370/-	321/-	208
27. AYUR NARCOTIC CARE 1	25 ML	424/-	361/-	190
28. AYUR FENNEL DROP 1	50 ML	230/-	190/-	68
29. AYUR DERMO CARE 1	50 GM	240/-	212/-	87
30. AYUR SKIN CARE 1	50 GM	222/-	185/-	64
31. AYUR FACE WASH 1	100 GM	235/-	190/-	73
32. AYUR DENTAL CARE 1	100 GM	240/-	203/-	91
33. AYUR ANALGESIC CARE 1	120 TAB.	1499/-	1198/-	640
34. AYUR PANACEA CARE 1	500 ML	1000/-	811/-	393

आयुर्वेद के अनुसार किसी भी आयुर्वेदिक दवाई का सेवन करते समय नीचे दिए गए परहेज का पालन जरूर करना चाहिए ?

- किसी भी आयुर्वेदिक औषधि का सेवन गर्म पानी (गुनगुना) के साथ करना चाहिए। गर्म पानी (गुनगुना) के साथ आयुर्वेदिक औषधि का सेवन करने से परिणाम बहुत अच्छे मिलते हैं।
- किसी भी आयुर्वेदिक औषधि का सेवन सुबह खाली पेट किया जाए तो बेहतर परिणाम मिलते हैं। अगर खाली पेट औषधि का सेवन करने से कोई परेशानी महसूस हो तो प्रोडक्ट्स के उपयोग दिशानिर्देशन के अनुसार औषधि का सेवन करना चाहिए।
- ज्यादा खट्टे पदार्थों का उपयोग नहीं करना चाहिए। जैसे - कच्चा आम, खट्टे अचार, इमली, इमली की चटनी। तथा ज्यादा मसालेदार तले और भुने खाने का सेवन नहीं करना चाहिए। तथा फास्ट फूड का भी सेवन नहीं करना चाहिए।
- ज्यादा ठंडे पेय पदार्थों (कोल्ड ड्रिंक्स) का अधिक उपयोग नहीं करना चाहिए। और दिन में 4 से 6 लीटर पानी चाहिए।
- विशेष : 5 साल से छोटे बच्चे, स्तनपान कराने वाली महिलाएं और गर्भवती महिलाएं आयुर्वेदिक दवाइयाँ चिकित्सक परामर्श के अनुसार लेना चाहिए।
- किसी भी आयुर्वेदिक प्रोडक्ट को सूरज की सीधी रोशनी से दूर रखना चाहिए। और बोतल को अच्छी तरह से बंद करना चाहिए।
- आयुर्वेदिक प्रोडक्ट की पैकिंग (SEAL) खोलने के बाद, आयुर्वेदिक प्रोडक्ट 1 महीने के अंदर इस्तेमाल (सेवन) करना चाहिए।
- बेहतर परिणाम के लिए आपकी आवश्यकतानुसार किजारा के आयुर्वेदिक प्रोडक्ट्स का कम से कम 3 महीने लगातार सेवन जरूर करना चाहिए।

“ अगर आप अपने परिवार वालों के लिए और जानने पहचानने वालों के लिए किजारा के सर्वश्रेष्ठ आयुर्वेदिक प्रोडक्ट्स का लाभ लेना और लाभ देना चाहते हैं, तो नीचे दी गई जानकारी को देने वाले व्यक्ति से और अधिक जानकारी प्राप्त करने के लिए उस व्यक्ति से तुरंत सम्पर्क करें ”



KI ZAARA

A DIFFERENT THINKING

INTERNATIONAL RETAIL PVT LTD.

स्वास्थ्य

और

सफलता

दोनों ही आपके हाथ में हैं ।



धन्यवाद





KIZAARA

A DIFFERENT THINKING

INTERNATIONAL RETAIL PVT LTD.

हमसे सम्पर्क करें

WEBSITE:- WWW.KIZAARA.COM

EMAIL:- SUPPORT@KIZAARA.COM

CONTACT NO.

9090931010,9090941010

